लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–23

पुराने दक्कन के दिन–1

हिन्दू परियों की कहानियाँ

मैरी फ्रैरे

1868

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-23
Book Title: Purane Dakkan Ke Din-1 (Old Deccan Days-1)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Deccan

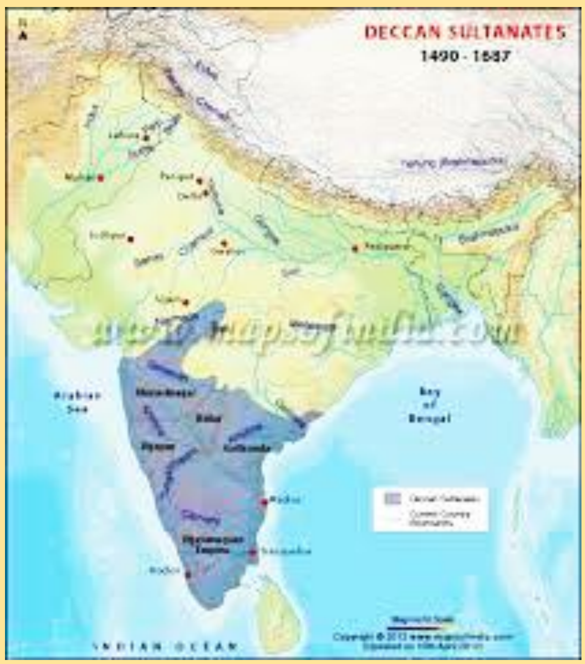

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5
पुराने दक्कन के दिन–1 7
परिचय 9
1 पंचकिन 14
2 एक हँसी की कहानी 44
3 बहादुर सैवैन्ती बाई 56
4 सच की जीत 110
5 राम और लक्ष्मण या विद्वान उल्लू 141
6 छोटी सूर्य बाई 166
7 विकम महाराजा के कारनामे 195
8 आदमी के सोचने से कम असमानता 253

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

पुराने दक्कन के दिन–1

भारत के दक्षिण के राज्य जैसे तेलंगाना तमिलनाडु केरल महाराष्ट्र आदि राज्य जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित हैं काफी पहले दक्कन प्रदेश कहलाते थे। यहाँ के अलग अलग प्रान्तों की कहानियाँ या लोक कथाऐं तो अधिक नहीं मिलतीं पर हाँ दो पुरानी पुस्तकें दक्कन की कहानियों की मिलती हैं। इन दो पुस्तकों में से एक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं[2] अब यह दूसरी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है पिछली पुस्तक की तरह से यह पुस्तक भी आप सबको बहुत पसन्द आयेगी।

इस पुस्तक, "पुराने दक्कन के दिन"[3], को मैरी फ़ैरे ने पहली बार 1868 में प्रकाशित किया था। यद्यपि लोक कथाओं का इतिहास भारत से ही आरम्भ होता है पर फिर भी संगठित रूप से भारतीय लोक कथाओं पर प्रकाशित होने वाली यह पहली पुस्तक है।

मैरी ने ये कहानियाँ क्यों और कैसे लिखीं इसकी भी एक मजेदार कहानी है। सन् 1865–1866 में मैरी ने अपने पिता के साथ दक्षिण भारत का तीन महीने का दौरा किया। उस समूह में ये अकेली ही स्त्री थीं सो कुछ दिन तो इन्होंने पुस्तकें पढ़ीं फिर कुछ लिखा फिर कुछ चित्र बनाये पर फिर उस सबसे ऊब कर एक दिन इन्होंने अपनी नौकरानी से कहा कि क्या वह उनको कोई कहानी सुनायेगी।

पहले तो उसने साफ मना कर दिया पर फिर यह कहने पर कि उसके अपने बच्चे और पोते आदि भी तो थे तो वह उनको भी तो कहानी सुनाती होगी। ऐसा कहने पर वह उनको एक कहानी सुनाने पर तैयार हो गयी। यह कहानी पंचकिन थी जो उसने अपनी दादी से सुनी थी। उसके बाद फिर कई कहानियाँ सुनी गयीं जो यहाँ दी गयी हैं। इस पुस्तक में कुल 24 कहानियाँ दी गयी हैं।

यह उस समय इतनी लोकप्रिय हुई कि 30 साल के अन्दर अन्दर इसका पाँचवाँ संस्करण 1898 में ही प्रकाशित हो गया था। इस पुस्तक का अनुवाद जर्मन, हंगेरियन, डैनिश भाषाओं में हो चुका है और बल्कि एक बार ही नहीं कई बार हो चुका है। इसका मराठी हिन्दुस्तानी और गुजराती भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। यह बड़ी अजीब सी बात है कि ऐसा सुना गया है कि इसके फ़ैन्च भाषा में दो अनुवाद मौजूद हैं पर दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उनमें से कोई भी अनुवाद अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाया है। दुर्भाग्य से यह इस पुस्तक का पहला हिन्दी अनुवाद है। हमें गर्व है कि इस पुस्तक का पहला हिन्दी अनुवाद हम प्रकाशित कर रहे हैं।

---

[2] "Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from the South:. By CA Kincaid. 1914. 20 tales. Here these stories are given in Hindi. This book is available in English at : http://www.gutenberg.org/files/11167/11167-h/11167-h.htm
Deccan, the entire southern peninsula of India, south of Narmada River up to the Southern tip of India. It extends over eight Indian states including – Telanganaa, Maharashtra, Andhra Pradesh, Karnatak and Tamil Nadu.

[3] "Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends: current in Southern India". By Mary Frere. Originally published in 1868 (5th impression, London: John Murray. 1898). 24 tales. This book's Reprint is available in English at : https://en.wikisource.org/wiki/Old_Deccan_Days **AND** https://archive.org/details/olddeccandaysorh00freruoft

मैरी फ्रेरे का कहना है कि "प्रसिद्ध लेखक मैक्स मुलर[4] ने मुझे बताया कि उन्होंने इस संग्रह की एक कहानी को मूल संस्कृत भाषा में देखा है।"[5]

आज हम उन्हीं लोक कथाओं को उनकी उसी पुस्तक से पहली बार हिन्दी में अनुवाद कर के अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये क्लासिक लोक कथाऐं आप सबको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये ये दक्कन की कहानियाँ अब हिन्दी में पहली बार। यह पुस्तक बड़ी होने के कारण इसे दो भागों में प्रकाशित किया जा रहा है। यह है इसका पहला भाग।

---

[4] Professor Max Muller – a German authority on Indian writings especially Ved.

[5] All this account has been taken from the Preface of its 3rd English edition published in 1881. This is the Preface given in its 5th impression also. It is the only edition/impression available on Internet.

परिचय

यह परिचय पुस्तक में दिये गये परिचय का शब्द ब शब्द अनुवाद तो नहीं है पर यह उसी परिचय पर आधारित है। यह परिचय यहाँ इसलिये दिया जा रहा है ताकि पढ़ने वालों को इस पुस्तक के बारे में कुछ मालूम हो सके। कभी कभी कोई पुस्तक क्यों लिखी गयी कैसे लिखी गयी इस बारे में पढ़ना भी अच्छा लगता है।

यह पुस्तक सबसे पहले **1868** में प्रकाशित की गयी थी। उस समय इसको तीन स्थानों से प्रकाशित किया गया था – ब्रिटेन अमेरिका और भारत। इसके कई भाषाओं में अनुवाद भी हुए – हंगरी जर्मन डेनिश तमिल गुजराती मराठी में। पर दुर्भाग्य से इसका हिन्दी में अनुवाद किसी ने नहीं किया।

विद्यार्थियों में यह पुस्तक अंग्रेजी में प्रकाशित "पहली भारतीय लोक कथाओं" की पुस्तक मानी जाती है जिसके बाद अंग्रेजी में लिखी हुई भारत की लोक कथाओं की दूसरी पुस्तकें भी आयीं।

1865–66 की सर्दियों में बम्बई के गवर्नर यानी मेरी के पिता का एक सरकारी टूर तीन महीनों के लिये दक्षिण के प्रान्तों के विकास के बारे में देखने भालने के लिये निकला। उसके इस

टूर में छह सौ लोगों के साथ साथ हाथी ऊँट घोड़े खच्चर और बैल भी थे पर केवल एक ही गोरी स्त्री थी – मैरी फ्रैरे।

इसकी देखभाल के लिये इसकी एक दासी थी अन्ना। अन्ना एक बहुत अच्छी कहानी कहने वाली थी।

इस टूर में मैरी अक्सर लिखती पढ़ती रहती या फिर तस्वीरें बनाती रहती। जब इस सबसे वह थक गयी तो उसने अन्ना की तरफ देखा और उससे पूछा "क्या तुम मुझे कोई कहानी सुना सकती हो?"

अन्ना ने कुछ आनाकानी की तो मैरी ने उससे जिद की — "तुम्हारे बच्चे हैं नाती पोते हैं। तुम उनको भी तो कभी कभी कहानी सुनाती होगी।"

यह सुन कर अन्ना पालथी मार कर बैठ गयी और कहानियाँ याद करने लगी और सुनाने लगी। एक दो कहानियाँ सुनने के बाद मैरी को लगा कि ये कहानियाँ उसको अपनी छोटी बहिन लिली को भेजनी चाहिये।

सो उसने इन कहानियों को इकट्ठा किया ठीक से हल्के कागज पर अंग्रेजी में लिखा ताकि उसको लन्दन भेजने में कोई परेशानी न हो। पहली दो कहानियों का नाम उसने रखा "ऐन इन्डियन स्टोरी फौर लिली"।

उसके बाद उसकी लिखावट कुछ खराब हो गयी तो उसने वह नाम बदल कर उन कहानियों को उनके विषय के अनुसार ही नाम दे दिये।

ऐसा लगता था कि अन्ना ने ये कहानियाँ पहले कभी किसी को जरूर सुनायी थीं – शायद अपने बच्चों को। पर इस बार सुनने वाला तो खुद ही एक नौजवान लड़की थी जिसकी माँ बहुत दूर लन्दन में रहती थी और अब तो केवल वही अन्ना की हिन्दुस्तानी शब्दों के साथ टूटी फूटी अंग्रेजी समझ सकती थी।

अन्ना ने पहली कहानी एक सौतेली माँ और उसकी सात बेटियों की कहानी से शुरू की कि किस तरह से सबसे छोटी राजकुमारी को एक काले कुत्ते में बदल दिया गया था। पर फिर किस तरह से उसके बहादुर बेटे ने जादूगर पर विजय प्राप्त कर ली।

अन्ना की हर कहानी ऐसे खत्म होती "और फिर वे अपने देश चले गये और उसके बाद ज़िन्दगी भर खुशी खुशी रहे। और दुनियाँ के सारे लोग भी अपने अपने घर चले गये।"

इस तरह से उसने मैरी को **24** कहानियाँ सुनायीं।

मैरी फ्रैरे अन्ना की ये सब कहानियाँ और उसकी आत्मकथा जो डेढ़ साल तक उसने उसके साथ रह कर इकट्ठा की थीं ले कर **21** साल की उम्र में लन्दन लौटी। फिर एक अच्छा

प्रकाशक ढूँढा – लन्दन का जौन मुरे। पुस्तक का नाम रखा गया "पुराने दक्कन के दिन"[6]। मैरी की छोटी बहिन कैथरीन ने इसके लिये तस्वीरें बनायीं।

भारत का दक्कन क्षेत्र टीपू सुलतान और मराठा की लड़ाई के बाद ही अंग्रेजों के हाथ लगा था। उसके बाद उनके हाथ और कुछ नहीं लगा।

पुस्तक प्रकाशित हो जाने के बाद मैरी ने अपनी यह पुस्तक अखबारों और जरनलों को भेजने के बाद 39 लोगों को भेजी थी।

प्रकाशित होते ही यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि दो साल के अन्दर ही यानी 1870 में इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित किया गया। इसका तीसरा संस्करण 1881 में चौथा 1889 में और पाँचवाँ 1898 में प्रकाशित किया गया।

क्योंकि अन्ना लिंगायट[7] थी इसलिये ऐसा सोचा जा सकता है कि ये कहानियाँ मूल रूप से शायद कन्नड़ से आयी होंगी। इस पुस्तक के प्रकाशित होने के 19 साल बाद अन्ना का देहान्त हो गया।

"पुराने दक्कन के दिन" के प्रकाशन ने ब्रिटिश भारत के साहित्य को नया रूप दिया। जिसने ब्रिटेन सारे यूरोप और

[6] Old Deccan Days

[7] Lingaayats are worshippers of Shiv

अमेरिका में वैज्ञानिक अनुसंधान के रास्ते भी खोले इसने दूसरे लोकप्रिय संग्रहों को भी उकसाया।

1880 के बाद में कई ब्रिटिश संग्रहकर्ताओं ने भारत से अपने अपने क्षेत्रों से लोक कथाओं के संग्रह किये और उनको अंग्रेजी में प्रकाशित किया। **19**वीं शताब्दी के समाप्त होते होते तो कई लेखकों ने भारत की क्षेत्रीय भाषा में लोक कथाओं के संग्रह करने शुरू कर दिये थे।

मैरी फ्रैरे आज भी भारत के लोक कथाओं के संग्रहकर्ताओं में अग्रगण्य मानी जाती है। यह पहला हिन्दी अनुवाद उनकी उसी पुस्तक का है।

1 पंचकिन[8]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा राज्य करता था जिसके सात सुन्दर बेटियाँ थीं। वे सभी बहुत अच्छी बेटियाँ थीं पर उनमें से सबसे छोटी वाली जिसका नाम बलना[9] था वह बहुत अक्लमन्द थी।

जब ये सातों लड़कियाँ छोटी ही थीं तो उनकी माँ मर गयी थी। सो ये बेचारी सातों बेटियाँ बिन माँ की देखभाल के रह गयीं। अब ये बेटियाँ एक एक कर के बारी बारी से अपने पिता के लिये खाना बनातीं जबकि पिता अपना काम करने के लिये बाहर रहता।

इत्तफाक ऐसा हुआ कि इसी समय राजा का प्रधान मन्त्री मर गया। अपने पीछे वह अपनी विधवा और एक बेटी छोड़ गया। अब रोज रोज जब भी राजा की बेटियाँ राजा के लिये खाना बनातीं तो प्रधान मन्त्री की विधवा और बेटी दोनों उनके चूल्हे से उनकी आग माँगने आ जातीं।

बलना अपनी बहिनों से कहती — "उनको दूर भगा दो। उसको अपने घर से ही आग लेने दो। हमारी आग से इसको क्या चाहिये। अगर यह इसी तरह से हमारी आग लेती रही तो

---

[8] Punchkin (Tale No 1)

[9] Balna – means the youngest one.

इसके लिये हमको एक न एक दिन जरूर ही कुछ न कुछ दुख उठाना पड़ेगा।"

पर उसकी बहिनें बलना से कहतीं — "शान्त हो जाओ बलना शान्त हो जाओ। तुम हमेशा ही उस बेचारी गरीब स्त्री से क्यों लड़ना चाहती हो। अगर उसको चाहिये तो उसको यहॉ से आग ले लेने दो। इसमें हमारा क्या जाता है।"

उसके बाद प्रधान मन्त्री की विधवा अपने आप ही चूल्हे के पास जाती और वहॉ से दो चार जलती हुई डंडियॉ उठा लेती। और जब कोई उसको देख नहीं रहा होता तो जो खाना राजा के लिये पकाया जा रहा होता वह उसमें कीचड़ डाल देती।

राजा अपनी बेटियों को बहुत प्यार करता था। जबसे उनकी मॉ की मृत्यु हुई थी तबसे अपने पिता के लिये वे खुद अपने हाथों से खाना बनाती थीं ताकिउसका कोई दुश्मन उसको जहर न दे दे।

जब राजा ने देखा कि उसके खाने में कीचड़ पड़ी हुई है तो उसने सोचा कि शायद वे कुछ लापरवाह हो गयी होंगी। क्योंकि वह यह सोच ही नहीं सका कि उसके खाने में कोई कीचड़ क्यों मिलायेगा।

पर क्योंकि वह बहुत दयालु किस्म का आदमी था इसलिये वह उन पर बिना किसी बात के इलजाम भी नहीं लगाना चाहता

था। पर इससे उसके खाने का तो स्वाद रोज ही खराब होता था।

सो एक दिन उसने छिप कर अपनी बेटियों को खाना पकाते देखने का इरादा किया। वह एक बराबर वाले कमरे में चला गया और वहाँ से एक दीवार के छेद में से यह देखने का निश्चय किया कि यह सब कैसे होता है।

उसने देखा कि उसकी सातों बेटियाँ चावल धोने में दाल आदि बनाने में लगी हुई थीं। जैसे ही उनका कोई खाना तैयार हो जाता तो वे उसको आग के पास एक तरफ रख देतीं।

फिर उसने देखा कि प्रधान मन्त्री की विधवा दरवाजे पर आयी और उसने कुछ जलती हुई लकड़ियाँ उसकी बेटियों से माँगीं।

बलना ने उसे गुस्से से देखते हुए उससे कहा — “तुम अपना ईंधन अपने घर में क्यों नहीं रखतीं। रोज रोज हमसे आग माँगने क्यों आती हो। बहिनो इसको कोई ईंधन मत देना। इसे अपना ईंधन अपने आप खरीदने दो।”

उसकी सबसे बड़ी बहिन ने कहा — “बलना इसको कुछ लकड़ियाँ और आग ले जाने दो। इसमें यह हमारा क्या नुकसान कर रही है।”

बलना बोली — “अगर तुम इसको यहाँ ऐसे ही रोज रोज आने दोगी तो यह हो भी सकता है कि वह हमारा कुछ न कुछ नुकसान जरूर करे।” उसके बाद राजा ने देखा कि उस स्त्री ने चूल्हे से कुछ जलती हुई लकड़ियाँ निकालीं और मौका देख कर जो खाना वहाँ तैयार रखा था उन सबमें थोड़ी थोड़ी कीचड़ डाल दी।

यह देख कर तो राजा बहुत गुस्सा हो गया। उसने उस स्त्री को पकड़ने के लिये अपने आदमी भेज दिये और उनसे कहा कि वह उसको ला कर उसके सामने पेश करें।

जब वह सामने लायी गयी तो वह बोली कि यह चाल उसने राजा से मिलने के लिये खेली थी। वह इतनी होशियारी से और इतना मीठा बोली कि उसने अपने चालाकी भरे शब्दों से राजा को खुश कर दिया।

राजा उससे इतना खुश हुआ कि बजाय उसको किसी भी तरह की सजा देने के उसने तो उससे शादी ही कर ली। अब वह और उसकी बेटी महल में रहने के लिये आ गयी थीं।

नयी रानी राजा की पहली पत्नी की सातों बेटियों से बहुत नफरत करती थी। वह अगर उसके वश में होता तो उनको अपने रास्ते से बिल्कुल ही हटाना चाहती थी ताकि उसकी अपनी

बेटी उसकी सारी सम्पत्ति की मालकिन बन जाये और उनकी बजाय वह राजकुमारी बन कर रहे।

अब बजाय इसके कि वह उन बेटियों की कृतज्ञ रहे वह हर वह काम करती रही जिससे कि उनकी ज़िन्दगी दूभर हो जाये। इसके लिये वह उनको केवल रोटी खाने के लिये देती और वह भी बहुत थोड़ी सी। ऐसे ही वह उनको बहुत थोड़ा सा पीने को देती।

सो ये बेचारी सातों बेटियॉ जिनको बहुत ही आराम की ज़िन्दगी जीने की आदत थी – अच्छा खाना पीना अच्छा कपड़ा वे अब बहुत ही दयनीय दशा में रहने लगीं। अब वे रोज अपनी मॉ की कब्र पर जातीं और उससे कहतीं — "मॉ क्या तुम अपने बच्चे नहीं देख सकतीं कि वे कितनी परेशानी में हैं। और हमारी सौतेली मॉ किस तरह हमें भूखा रखती है।"

एक दिन जब वे इस तरह से सुबक सुबक कर रो रही थीं तो लो वहॉ एक बहुत सुन्दर पोमीलो का पेड़[10] उग आया जिस पर पके हुए पोमीलो के फल लगे हुए थे। उन लोगों ने वहॉ उन फलों को खा कर अपनी भूख शान्त की।

[10] Pomelo tree – a citrus fruit tree

अब वे घर का बेकार का खाना खाने की बजाय वहाँ आ कर वे उस पेड़ के ताजा फल खाना ज़्यादा पसन्द करतीं जो उनकी माँ की कब्र पर लगा हुआ था।

एक दिन नयी रानी ने अपनी बेटी से कहा — "मैं यह तो नहीं बता सकती कि यह कैसे हो रहा है पर ये सातों लड़कियाँ घर में खाना खाना ही नहीं चाहतीं और कुछ खातीं भी नहीं। फिर भी ये न तो दुबली होती हैं और न ही ये बीमार लगती हैं। बल्कि ये तो तुमसे भी अच्छी लगती हैं। मुझे नहीं मालूम कि ऐसा कैसे हो रहा है।"

यह कह कर उसने अपनी बेटी को उन सातों बेटियों के पहरे पर लगा दिया कि वह ध्यान रखे कि कोई उन्हें और कुछ खाने के लिये देता है क्या।

सो जब अगले दिन राजकुमारियाँ अपनी माँ की कब्र पर गयीं और वहाँ सुन्दर रसीले पोमीलो खा रही थीं तो प्रधान मन्त्री की बेटी उनके पीछे पीछे चल दी। वहाँ जा कर उसने उनको फल इकट्ठा करते देखा।

बलना ने उसको देख लिया तो वह अपनी बहिनों से बोली — "क्या तुम लोग उस लड़की को हमारी तरफ देखते नहीं देख रहीं? हमको उसे यहाँ से भगा देना चाहिये और या फिर अपने पोमीलो छिपा लेने चाहिये। नहीं तो वह अपनी माँ से हमारी इस

बात की शिकायत कर देगी और फिर यह हमारे लिये बहुत बुरा होगा।"

पर उसकी बहिनों ने कहा — "अरे बलना। इतनी भी बेरहम न बनो। वह इतनी बेरहम नहीं हो सकती कि घर जा कर अपनी माँ से हमारी शिकायत करे। बल्कि हम उसको बुला कर कुछ फल उसको भी दे देते हैं।"

कह कर उन्होंने उसको अपने पास बुलाया और एक फल उसको भी खाने के लिये दिया। जैसे ही उसने वह फल खा लिया वह तुरन्त ही घर वापस चली गयी और अपनी माँ से बोली — "अब मेरी समझ में आया माँ कि वे सातों राजकुमारियाँ घर में तुम्हारे हाथ का बनाया खाना क्यों नहीं खाती हैं।

वे यहाँ से अपनी माँ की कब्र पर जाती हैं। वहाँ एक बहुत ही सुन्दर पोमीलो का पेड़ है। वे उससे रसीले पोमीलो तोड़ तोड़ कर खाती हैं। मैंने भी वहाँ जा कर एक पोमीलो खाया वह तो क्या ही स्वाददार रसीला फल था। मैंने तो वैसा पोमीलो कभी खाया ही नहीं।"

नयी रानी बहुत ही निर्दयी थी। यह सुन कर तो वह बस जल भुन ही गयी। अगले दिन वह सारा दिन अपने कमरे में ही

रही। जब राजा ने उसका हाल पूछा तो वह बोली कि उसके सिर में बहुत ज़ोर का दर्द हो रहा है।

राजा यह सुन कर दुखी हो गया और उससे पूछा कि वह उसके लिये क्या करे। रानी बोली — "केवल एक ही चीज़ है जो मेरे सिर के दर्द को ठीक कर सकती है। तुम्हारी पत्नी की कब्र के पास पोमीलो का एक बहुत सुन्दर पेड़ खड़ा है। उसकी जड़ और शाखाओं को पानी में उबाल कर उसका थोड़ा सा पानी मेरे माथे पर मलो। उसी से मेरे सिर का दर्द ठीक होगा।"

सो राजा ने अपने कुछ नौकर वहाँ भेज दिये। उन्होंने पोमीलो के पेड़ को जड़ से उखाड़ लिया और फिर जैसा रानी ने कहा था वैसा ही किया। उसका उबला हुआ पानी जब उसके सिर पर मला गया तब उसने कहा कि अब उसके सिर के दर्द को काफी आराम है।

अगले दिन जब सातों राजकुमारियाँ वहीं उसी जगह अपने पोमीलो खाने पहुँचीं तो इन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनका पोमीलो का पेड़ तो वहाँ था ही नहीं।

यह देख कर तो वे बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगीं। रानी की कब्र के पास में ही एक तालाब था। जब वे रो रही थीं तो उन्होंने देखा कि वह तालाब तो किसी गाढ़ी क्रीम जैसी चीज़ से

भर गया है। और फिर जल्दी ही वह जम भी गया जिससे वह सफ़ेद केक जैसा लगने लगा।

यह देख कर सारी राजकुमारियाँ बहुत खुश हुईं। उन सबने उसमें थोड़ा थोड़ा सा केक खाया। अगले दिन फिर वही हुआ। ऐसा कई दिन तक चलता रहा।

अब हर सुबह राजकुमारियाँ अपनी माँ की कब्र पर जातीं और उस तालाब को सफेद केक से भरा हुआ पातीं। वे उसमें से केक खातीं और उनका पेट भर जाता।

निर्दयी सौतेली माँ ने अपनी बेटी से कहा — "मैं यह तो नहीं बता सकती कि यह कैसे हुआ। पर मैंने उनकी माँ के कब्र के पास जो पेड़ लगा हुआ था वह तो कटवा दिया था इसके बाद भी राजकुमारियाँ दुबली नहीं होतीं या दुखी दिखायी नहीं देतीं। हालाँकि मैं जो खाना इनको रोज देती हूँ वह भी ये बिल्कुल नहीं खातीं फिर भी बहुत अच्छी हैं। मैं नहीं बता सकती कि ऐसा कैसे है।"

उसकी बेटी बोली — "माँ तुम चिन्ता न करो मैं उनको देखती हूँ कि वे क्या खाती हैं।"

अगले दिन जब राजकुमारियाँ तालाब में से केक खा रही थीं तो सोचो तो वहाँ कौन आया? उनकी सौतेली माँ की बेटी। बलना ने उसको सबसे पहले देखा।

वह अपनी बहिन से बोली — "देखना बहिनों यह तो फिर यहाँ आ गयी। अब यह फिर से घर जा कर सब बता देगी। चलो हम सब इस तालाब के चारों तरफ बैठते हैं ताकि यह हमारे तालाब को देख ही न पाये। क्योंकि अगर हमने इसे थोड़ा सा भी केक दिया तो यह घर जा कर सब बता देगी और यह हमारे लिये ठीक नहीं होगा।"

बलना की दूसरी बहिनें यही सोचती रहीं कि बलना तो बेकार में ही शक करती है इसलिये उसकी सलाह मानने की बजाय उन्होंने उसको अपने पास बुला कर उसको केक खिला दी।

केक खाने के बाद वह घर चली गयी और घर जा कर अपनी माँ को सब कुछ बता दिया।

रानी यह जान कर कि राजकुमारियाँ कितने अच्छे तरीके से रह रही हैं फिर बहुत गुस्सा हो गयी। उसने अपने नौकरों को बुलाया और उनसे मरी हुई रानी का मकबरा नीचे गिराने के लिय कहा और उस छोटे से तालाब को उस मकबरे की कँकरीट से भरने के लिये कहा।

इससे भी जब उसको सन्तोष नहीं मिला तो अगले दिन उसने फिर से बीमार पड़ने का बहाना किया। उसने कहा कि वह तो बस मरने वाली हो रही थी। राजा को यह सुन कर बहुत

दुख हुआ। उसने उससे पूछा कि क्या उसको ठीक करना उसकी ताकत में था।

वह बोली कि केवल एक चीज़ ही उसको मरने से बचा सकती थी पर उसको मालूम है कि राजा उसको करेगा नहीं। राजा बोला — "हॉ हॉ मैं करूँगा जरूर करूँगा।"

रानी बोली — "तुम अपनी पहली पत्नी की सातों बेटियों को मार दो और उनका थोड़ा सा खून मेरे माथे पर और थोड़ा सा खून मेरे हाथों की हथेलियों पर मल दो। उनकी मौत ही मेरी ज़िन्दगी होगी।"

यह सुन कर तो राजा बहुत ही दुखी हो गया। वह अपना वायदा नहीं तोड़ना चाहता था सो वह भारी दिल से अपनी बेटियों को ढूँढने निकल गया। उसने उनको उनकी मॉ की कब्र पर बैठे हुए रोते हुए पाया।

यह सोचते हुए कि राजा उनको मार नहीं पायेगा वह उनसे बड़े प्यार से बोला कि वे उसके साथ जंगल चलें। जंगल में पहुँच कर उसने आग जलायी कुछ चावल पकाये और उनको खाने के लिये दिये।

दोपहर बाद गर्म होने की वजह से वे बच्चियॉ वहीं सो गयीं। जब राजा ने देखा कि वे गहरी नींद सो गयीं तो वह वहॉ से उठ कर यह कहते हुए चला गया कि ये बच्चियॉ बेचारी

बजाय इसके कि अपनी सौतेली माँ की वजह से मरें इनका यहीं मर जाना ज़्यादा अच्छा है। फिर उसने एक हिरन मारा और उसका खून ले कर चला गया।

घर आ कर उसने उसका खून रानी के माथे और हाथ की हथेलियों पर लगा दिया। रानी को लगा कि राजा ने सचमुच में अपने बच्चियों को मार दिया है सो यही सोच कर वह अच्छी हो गयी।

इस बीच सातों राजकुमारियों की आँख खुली तो उन्होंने अपने आपको उस घने जंगल में अकेला पाया। यह देख कर तो वे सब बहुत डर गयीं और ज़ोर ज़ोर से रोने लगीं। बीच बीच में वे अपने पिता का नाम ले ले कर भी पुकारती जाती थीं।

पर उस समय तक तो वह बहुत दूर जा चुका था। अगर बिजली की कड़क जैसी तेज़ आवाज में भी उसको पुकारा जाता तो उसको सुनायी नहीं पड़ सकता था।

अब हुआ यह कि पड़ोस के राज्य का एक राजा उस दिन उसी जंगल में शिकार खेलने के लिये आ निकला था। शिकार करते करते उनको शाम हो गयी सो वे घर जाने लगे।

तभी सबसे छोटे राजकुमार ने कहा — "ज़रा ठहरो। मुझे लगता है कि मैंने अभी अभी किसी के चिल्लाने की आवाज सुनी

है। क्या तुम लोगों को कुछ आवाजें सुनायी नहीं दे रही हैं? चलो हम आवाज वाली दिशा की ओर चलते हैं और पता लगाते हैं कि यहॉ क्या है।”

सो राजा के सातों राजकुमार उस आवाज की दिशा की ओर ही चल दिये।

आवाज का पीछा करते करते वे उसी जगह आ पहुॅचे जहॉ वे सातों राजकुमारियॉ बैठी रो रही थीं और अपने हाथ मल रही थीं। उनको इस तरह बैठा और रोता देख कर सातों राजकुमार बहुत आश्चर्य में पड़ गये और जब उन्होंने उनकी कहानी सुनी तब तो उन्हें बहुत ही आश्चर्य हुआ।

उन सबने यह सोचा कि हर राजकुमार एक एक राजकुमारी को घर ले चलेगा। सो पहले सबसे बड़े राजकुमार ने सबसे बड़ी राजकुमारी का हाथ पकड़ा और घर ले जा कर उससे शादी कर ली।

इसी तरह से दूसरे राजकुमार ने दूसरी राजकुमारी से तीसरे राजकुमार ने तीसरी राजकुमारी से और सातवें राजकुमार ने जो सबसे सुन्दर था सातवीं सबसे छोटी राजकुमारी बलना से शादी कर ली। जब वे सब अपने देश पहुॅचे तो राज्य भर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। सातों राजकुमारों की शादी सातों राजकुमारियों से कर दी गयी।

लगभग एक साल बाद बलना ने एक बेटे को जन्म दिया। घर में वह बच्चा अपने सब ताऊ और ताइयों का बहुत प्यारा था। ऐसा लगता था जैसे उसके एक माँ और एक पिता न हो कर सात माँऐं और सात पिता हों।

किसी दूसरे राजकुमार के कोई बच्चा नहीं था सो सबने सबसे छोटे राजकुमार और बलना के बेटे को अपना वारिस घोषित कर दिया।

इस तरह से वे सब कुछ समय तक खुशी खुशी रहे कि एक बलना के पति ने कहा कि वह शिकार खेलने जाना चाहता है और वह शिकार खेलने चला गया। उन सबने उसका बहुत इन्तजार किया पर वह लौट कर नहीं आया।

तब उसके छह भाइयों ने कहा कि वे लोग जा कर उसे देखना चाहते हैं कि उसका क्या हुआ। वे गये भी पर वे भी वापस नहीं लौटे। अब सातों राजकुमारियाँ बहुत दुखी थीं क्योंकि उनको डर था कि कहीं उनके पतियों को किसी ने मार न दिया हो।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही एक दिन बलना अपने बच्चे को पालने में झुला रही थी जबकि उसकी बहिनें महल के नीचे वाले कमरे में कुछ काम कर रही थीं कि महल के दरवाजे पर

काली पोशाक पहने एक आदमी आया। उसने कहा कि वह एक फ़कीर था और उसे भीख चाहिये थी।

नौकरों ने उससे कहा कि "तुम महल के अन्दर नहीं जा सकते। राजा के सब बेटे बाहर गये हुए हैं। हमारा ख्याल है कि वे शायद मर गये हैं। उनकी विधवाऐं अब फ़कीरों से परेशान होना नहीं चाहतीं।"

फ़कीर बोला कि वह एक साधु आदमी है सो उसको अन्दर जाने की इजाज़त दे दी जाये। सो उन बेवकूफ नौकरों ने उसको अन्दर जाने की इजाज़त दे दी। उनको यह मालूम नहीं था कि वह कोई साधु नहीं था बल्कि पंचकिन नाम का एक जादूगर था।

अब क्या था पंचकिन जादूगर महल में घुस कर इधर उधर घूमने लगा। उसने वहाँ बहुत सारी सुन्दर सुन्दर चीज़ें देखीं। आखीर में वह बलना के कमरे में पहुँच गया जहाँ वह अपने बच्चे को पालने में झुला रही थी और साथ साथ गा भी रही थी।

जादूगर को लगा कि बलना उन सबमें सबसे सुन्दर चीज़ थी जितनी कि उसने महल में अब तक देखीं थीं। वह उसकी सुन्दरता पर इतना मोहित हो गया कि उसने उससे अपने साथ चलने और शादी करने के लिये कहा।

उसने कहा — "मेरा पति तो शायद मर भी गया हो पर मेरा बच्चा तो अभी बहुत छोटा है। मैं यहीं रह कर उसको बड़ा करूँगी और उसको एक होशियार आदमी बनाऊँगी। और जब वह बड़ा हो जायेगा तब वह बाहर जायेगा और अपने पिता की तरह बनेगा। भगवान न करे कि मैं उसे कभी छोड़ूँ या तुमसे शादी करूँ।"

यह सुन कर जादूगर बहुत गुस्सा हो गया और बलना को एक छोटे से काले कुत्ते में बदल दिया और उसको वहाँ से यह कहते हुए ले गया "क्योंकि तुम मेरे साथ अपनी इच्छा से नहीं जा रही हो तो मैं तुम्हें इस तरह अपने साथ ले जाऊँगा।"

इस तरह बेचारी राजकुमारी को वहाँ से घसीट कर ले जाया गया। वह वहाँ से किसी भी तरह बच कर नहीं भाग सकती थी। जैसे ही पंचकिन महल के फाटक से बाहर निकल रहा था वहाँ खड़े नौकरों ने उससे पूछा — "तुम्हारे पास इतना सुन्दर कुत्ता कहाँ से आया?"

पंचकिन बोला — "एक राजकुमारी ने मुझे भेंट के रूप में दिया।" यह सुन कर उन्होंने उसको बिना और कोई सवाल किये बाहर जाने दिया।

इसके बाद ही छहों राजकुमारियों ने बच्चे की आवाज सुनी कि उनका भानजा रो रहा है तो वे उधर दौड़ी गयीं। वहाँ यह

देख कर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह वहॉ अकेला ही पड़ा हुआ था और बलना का कहीं अता पता नहीं था।

यह देख कर उन्होंने इस बारे में नौकरों से पूछा तो जब उन्होंने एक फ़कीर और उसके साथ एक कुत्ते के बारे में सुना तो उनको अन्दाजा लग गया कि क्या हुआ होगा। उन्होंने तुरन्त ही अपने लोग उनको ढूँढने के लिये चारों तरफ भेज दिये। पर दोनों में किसी का पता नहीं चला।

अब वे बेचारी छह स्त्रियॉ क्या करें। उन्होंने अपने अपने पतियों से मिलने की आशा तो पहले ही छोड़ दी थी अब उन्होंने अपनी बहिन और उसके पति से मिलने की भी आशा भी छोड़ दी। अब तो उनका सारा ध्यान उनका अपने भानजे पर लग गया।

इस तरह समय बीतता गया। बलना का बेटा चौदह साल का हो गया। एक दिन उसकी मौसियों ने उसको उसके परिवार का इतिहास बताया। जैसे ही उसने सब सुना तो उसके मन में अपनी मॉ पिता और मौसाओं को ढूँढने की और अगर वे मिल गये तो उनको घर वापस लाने की बहुत ज़ोर की इच्छा जाग उठी।

उसकी मौसियॉ उसके इतना बड़े इरादे को सुन कर कॉप गयीं। उन्होंने उसको रोकने की बहुत कोशिश की। वे बोलीं —

“हमने अपने पति खोये अपनी बहिन खोयी अपनी बहिन का पति खोया। अब तुम ही हमारी अकेली आशा हो। अगर तुम भी चले गये तो बेटे हम अकेले क्या करेंगे।”

बच्चा बोला — “मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप इतनी हिम्मत न हारें। मैं जल्दी ही वापस आऊँगा और भगवान ने चाहा तो ये सब मेरे साथ आयेंगे।” सो वह अपनी यात्रा के लिये तैयार हो गया।

कुछ महीने वह ऐसे ही इधर उधर घूमता रहा पर ऐसा कोई सुराग हाथ नहीं लग जिससे उसके माता पिता और मौसाओं का पता चल जाता। वह अब यात्रा करते करते थक गया था।

वह यह सोच ही रहा कि वह अब क्या करे कि वह एक ऐसे शहर में आ गया जहाँ बहुत सारे पत्थर चट्टानें और पेड़ थे। वहाँ उसे एक महल दिखायी दे गया जिसकी बहुत ऊँची ऊँची मीनारें थीं। उसके पास ही माली का एक छोटा सा घर था।

वह उस घर को इधर उधर से देख ही रहा था कि उसमें माली की पत्नी चिल्लाती हुई अन्दर से बाहर भागी आयी — “बच्चे तुम कौन हो जिसने इस खतरनाक जगह आने की हिम्मत की।”

बच्चा बोला — “मैं एक राजा का बेटा हूँ। मैं अपने पिता और अपने मौसाओं को ढूँढता हुआ यहाँ आ पहुँचा हूँ। और

अपनी माँ को भी जिस पर किसी जादू डालने वाले ने जादू डाल दिया है।"

माली की पत्नी बोली — "यह महल और यह देश एक बहुत बड़े जादूगर का है। वह बहुत ताकतवर है। अगर कोई उसको नाखुश करता है तो वह उसको पेड़ या पत्थर में बदल देता है।

तुम यहाँ ये जो पत्थर और पेड़ देख रहे हो एक बार वे सब ज़िन्दा लोग थे। और उस जादूगर ने उनको उसी हालत में बदल दिया है जिसमें आज तुम उनको देख रहे हो।

और उनमें केवल ये ही बदकिस्मत नहीं हैं इस मीनार में एक बहुत सुन्दर राजकुमारी रहती है जिसको जादूगर ने यहाँ **12** साल के लिये कैद कर रखा है क्योंकि वह उससे नफरत करती है और वह उससे शादी कभी नहीं करेगी।"

यह सुन कर छोटे राजकुमार ने सोचा लगता है ये ही मेरे पिता और मौसा लोग होंगे और इस मीनार में बन्द मेरी माँ होगी। जो मैं ढूँढने आया था आखिर वह मुझे मिल ही गया। सो उसने अपनी कहानी उस माली की पत्नी को सुना दी।

उसने उससे सहायता माँगी कि वह उसको अपने पास ठहरा ले और फिर जो दुखी लोग वहाँ थे जिनके बारे में उसने उसे

बताया था उनके बारे में जानने की कोशिश की। माली की पत्नी ने भी उसके साथ मिल कर रहने का वायदा किया।

उसने उसको सलाह दी कि वह अगर वहाँ वेश बदल कर रहे तो अच्छा है क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि वह जादूगर उसे देख ले और उसको भी पत्थर में बदल दे। राजकुमार इस बात पर राजी हो गया।

माली की पत्नी ने उसको एक साड़ी पहना दी और ऐसा दिखाया जैसे वह उसकी बेटी हो।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही जादूगर अपने बागीचे में टहल रहा था उसने एक छोटी सी लड़की इधर उधर खेलती हुई देखी तो उससे पूछा कि वह किसकी बेटी थी। लड़की बोली कि मैं माली की बेटी हूँ।

जादूगर बोला — "तुम तो बड़ी सुन्दर छोटी सी बच्ची हो। कल तुम्हें मैं फूल दूँगा जो तुम उस मीनार में रहने वाली लड़की को जा कर दे देना।"

नौजवान राजकुमार यह सुन कर बहुत खुश हुआ। यह बताने के लिये वह तुरन्त ही माली की पत्नी के पास दौड़ गया। उससे सलाह कर के राजकुमार ने यह तय किया कि वह इसी वेश में वहाँ जायेगा यही उसके लिये अभी ठीक रहेगा।

फिर जब वह उसको वहाँ देख लेगा तब मौका पा कर उससे बात करेगा, अगर वह वही निकली तो।

ऐसा हुआ था कि बलना की शादी पर उसके पति ने उसको एक अँगूठी दी थी जिस पर उसका नाम खुदा हुआ था। वह अँगूठी उसने फिर उसने अपने बेटे को पहना दी थी। उसके बाद जब वह बड़ा हो गया तो उसकी मौसियों ने वह अँगूठी उसके लिये बड़ी करवा दी थी ताकि वह बाद में भी उसको पहन सके।

माली की पत्नी ने उसे सलाह दी कि वह अपने उस खजाने को को फूलों से बाँध दे और भरोसा रखे कि अगर वह उसकी माँ है तो वह उसे जरूर पहचान जायेगी।

हालाँकि यह काम मुश्किल है क्योंकि बेचारी राजकुमारी पर बहुत सख्त पहरा रखा जाता है ताकि वह कभी अपने किसी दोस्त से बात ही न कर सके। पर क्योंकि माली की बेटी को वहाँ जा कर उसको रोज फूल देने की इजाज़त थी तो भी जादूगर या उसका कोई दास उसकी रखवाली के लिये वहाँ पर जरूर रहेगा।

एक दिन उसको यह मौका मिल ही गया। एक दिन जब उसे वहाँ कोई नहीं देख रहा था तो माली की बेटी ने अपनी

अॅगूठी गुलदस्ते के एक फूल में बॉध दी और उसे बलना के पैरों में फेंक दिया।

वह अॅगूठी एक ठन की आवाज के साथ नीचे गिर गयी। बलना ने यह देखने के लिये कि यह अजीब सी आवाज किससे निकली इधर उधर देखा तो फूलों के एक गुलदस्ते में एक अॅगूठी बॅधी दिखायी दी।

वह उस अॅगूठी को पहचान गयी और उसने अपने बेटे की कही गयी कहानी पर तुरन्त ही विश्वास हो गया कि वह उसे बहुत दिनों से ढूॅढ रहा था। उसने अपने बेटे से यह बताने के लिये विनती की कि अब उसे आगे क्या करना है। और साथ में उससे यह भी विनती की कि वह उसको बचाने के चक्कर में अपनी ज़िन्दगी खतरे में न डाले।

उसने उससे यह भी कहा कि **12** सालों तक जादूगर ने उसे यहॉ बन्द कर के रखा है क्योंकि उसने उससे शादी करने के लिये मना कर दिया था। और उसके ऊपर इतना कड़ा पहरा लगा रखा था कि उसने तो यहॉ से आजाद होने की आशा ही छोड़ दी थी।

बलना का बेटा बहुत होशियार था। वह बोला — "मॉ तुम डरो नहीं। सबसे पहले तो हमको यह जानना होगा कि जादूगर में कितनी ताकत है ताकि मैं अपने पिता और ताऊओं को

आजाद करा सकूँ जिनको उसने पत्थरों और पेड़ों में बदल रखा है।

तुमने उसके साथ 12 साल तक बहुत गुस्से में बातें की हैं अब तुम उससे बहुत ही मुलायमियत से बातें करो। उससे कहना कि अब तुमने अपने पति के मिलने की आशा छोड़ दी है जिसके लिये तुमने 12 साल इन्तजार किया है।

अब तुम उससे शादी करने के लिये तैयार हो। उसके बाद उससे यह जानने की कोशिश करो कि उसकी ताकत कहाँ है। या फिर वह अमर है या उसको मारा जा सकता है। और मारा जा सकता है तो कैसे।"

बलना ने सोचा कि वह अपने बेटे की सलाह मानेगी सो उसने अगले दिन ही पंचकिन को बुलवा भेजा। उसने उससे उस दिन ऐसे ही बातें कीं जैसा कि उसने अपने बेटे के साथ तय किया था।

जादूगर तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया और उससे विनती की कि वह उसको जल्दी से जल्दी शादी करने की इजाज़त दे दे। पर वह बोली कि अभी वह कुछ समय और चाहती थी ताकि वह उसे जान सके। इतने दिनों तक दुश्मन रहने के बाद उनकी दोस्ती बढ़ने में कुछ तो समय लगेगा।

"पर मुझे यह तो बताओ कि क्या तुम अमर हो? क्या सचमुच में मौत तुम्हें बिल्कुल नहीं छू सकती? क्या तुम इन्सान के दुख को समझने वाले जादूगर हो?"

"पर आज तुम ये सवाल मुझसे क्यों पूछ रही हो।"

वह बोली — "क्योंकि अगर मुझे तुमसे शादी करनी है तो तुम्हारी पत्नी होने के नाते मुझे यह सब तो मालूम होना ही चाहिये न। ताकि तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत आ पड़े तो मुझे यह मालूम हो कि उसे कैसे दूर किया जा सकता है।"

वह बोला — "यह तो तुम ठीक कह रही हो। यह भी सच है कि मैं दूसरों जैसा नहीं हूँ। बहुत बहुत बहुत दूर, सैंकड़ों हजारों मील दूर एक अकेला सा देश है जिसमें जंगल ही जंगल हैं।

उन जंगलों के बीच में खजूर के पेड़ों का एक गोला बना हुआ है। उस गोले के बीच पानी के छह घड़े हैं जो एक के ऊपर एक रखे हुए हैं। छठे घड़े के नीचे एक छोटा सा पिंजरा है जिसमें एक छोटा सा हरा तोता है। उस तोते की ज़िन्दगी पर ही मेरी ज़िन्दगी टिकी हुई है। अगर तोता मारा जाता है तो मैं भी मर जाऊँगा।

इसलिये यह बहुत मुश्किल काम है कि वह तोता मारा जाये। यह दो वजह से हो सकता है। पहली बात तो यह है कि उस तक कोई पहुँच नहीं सकता। दूसरी बात यह है कि मेरे हुक्म से हजारों जिन्न उसका पहरा देते हैं। वे उसे बात की बात में मार देंगे जो भी वहाँ पहुँचने की कोशिश करेगा।"

जो कुछ पंचकिन ने बलना को बताया वह बलना ने अपने बेटे को बता दिया पर साथ में यह भी कहा कि वह उस तोते को पाने का विचार छोड़ दे।

राजकुमार बोला — "माँ मैं जब तक तोते को नहीं पकड़ लूँगा तब तक मेरे पिता और ताऊ नहीं छूट पायेंगे। डरो नहीं मैं जल्दी ही वापस आऊँगा। तब तक तुम जादूगर को अच्छे मूड में रखना। कई बहाने बना कर उससे अपनी शादी टालती रहना। और इससे पहले कि वह देर करने की वजह जान पाये मुझे विश्वास है कि मैं यहाँ वापस आ जाऊँगा।"

इतना कह कर वह लड़का वहाँ से चला गया। वह कई मील तक चलता रहा और आखीर में एक घने जंगल में आ निकला। वह बहुत थक गया था सो वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और सो गया।

वह एक बहुत ही धीमी सरसराहट की आवाज सुन कर जाग गया। उसने देखा कि उसके पास ही एक बहुत बड़ा साँप

है जो एक गरुड़ के घोंसले की तरफ बढ़ रहा है जो उसी पेड़ पर बना हुआ है जिसके नीचे वह लेटा हुआ था। उस घोंसले में गरुड़ के दो बच्चे थे।

राजकुमार ने देखा कि गरुड़ के वे बच्चे तो खतरे में थे। उसने तुरन्त ही अपनी तलवार खींच ली और सॉप को मार दिया। उसी समय कुछ फड़फड़ाती हुई आवाज सुनायी दी। दो बड़ी गरुड़ चिड़ियें जो शिकार के लिये बाहर गयी हुई थीं वापस लौट आयीं।

उन्होंने देख लिया था कि वहाँ एक सॉप मरा पड़ा है और नौजवान राजकुमार उसके पास ही खड़ा हुआ है। मॉ गरुड़ ने उससे कहा — "प्यारे बेटे। बहुत दिनों से यह सॉप हमारे बच्चों को खा लेता था। आज तुमने हमारे बच्चों की जान बचा ली। जब भी कभी तुम्हें किसी चीज़ की जरूरत पड़े तो हमको बुला लेना हम तुम्हारी सहायता के लिये आ जायेंगे। और जहॉ तक इन गरुड़ बच्चों का सवाल है इनको तुम रख लो ये तुम्हारे नौकर का काम करेंगे।"

यह सुन कर राजकुमार बहुत खुश हुआ। दोनों गरुड़ बच्चों ने अपने अपने पंख फैलाये और राजकुमार उन पर बैठ गया। वे उसको जंगल से बहुत बहुत दूर ले गये। धीरे धीरे वह उस जगह आ गये जहॉ खजूर के पेड़ एक गोले में खड़े हुए थे।

उस गोले के बीच में पानी से भरे हुए छह घड़े एक के ऊपर एक रखे हुए थे। उस समय दोपहर हो रही थी। गर्मी बहुत थी। उसके चारों तरफ जो पेड़ थे वे सब जिन्न थे। वे सब गहरी नींद सो रहे थे। पर फिर भी वे वहाँ हजारों में थे। उनमें से हो कर जाना किसी तरह भी मुमकिन नहीं था।

मजबूत पंख वाले गरुड़ों ने वहाँ जा कर एक कूद लगायी। राजकुमार भी पंखों पर से कूद गया। पल भर में राजकुमार ने छहों घड़ों का पानी बिखेर दिया और छोटे तोते को पकड़ लिया। उसको उसने अपनी आस्तीन में लपेट लिया।

फिर जब वह दोबारा गरुड़ों पर चढ़ कर आसमान में पहुँचा तभी सारे जिन्न जाग गये। अपना खजाना लुटते देख कर उन्होंने बहुत ज़ोर से शोर मचाना शुरू कर दिया।

छोटे गरुड़ उड़ते जा रहे थे उड़ते जा रहे थे। उड़ते उड़ते वे अपने घर यानी पेड़ पर आ गये। राजकुमार ने गरुड़ माता पिता से कहा — "आप अपने बच्चे वापस ले लीजिये। उन्होंने आज मेरा बहुत बड़ा काम किया है। अगर फिर कभी मुझे किसी मदद की जरूरत पड़ी तो मैं आपके पास आना नहीं भूलूँगा।"

उसके बाद वह पैदल ही अपनी यात्रा पर चल दिया और फिर से जादूगर के महल आ पहुँचा। वह महल के दरवाजे पर बैठ गया और तोते से खेलने लगा।

पंचकिन ने उसे देखा तो वह वहाँ भागा हुआ आया और राजकुमार से पूछा — "मेरे बच्चे। यह तोता तुम्हें कहाँ से मिला। मैं तुमसे विनती करता हूँ इसे मुझे दे दो।"

राजकुमार बोला — "नहीं मैं तुम्हें अपना तोता नहीं दे सकता। यह तो मेरा पालतू तोता है। मेरे पास तो यह बहुत दिनों से है।"

इस पर जादूगर बोला — "अगर यह तुम्हारा बहुत दिनों का पालतू है तो मैं समझ सकता हूँ कि तुम इससे बिछड़ना क्यों नहीं चाहते। पर क्या तुम इसे बेचोगे?"

राजकुमार फिर बोला — "नहीं जनाब। मैं इसे नहीं बेचूँगा।"

यह सुन कर पंचकिन डर गया और बोला — "तुम मुझसे कोई चीज़ कोई भी कीमत माँग लो पर यह तोता मुझे दे दो।"

राजकुमार बोला — "सातों राजकुमार जिनको तुमने पेड़ और पत्थरों में बदल रखा है उनको आजाद कर दो।"

जादूगर बोला — "जैसा तुम चाहो। बस मेरा तोता मुझे दे दो।" उसके बाद उसकी जादू की छड़ी के एक बार छुआने से

ही बलना का पति और उसके छहों भाई अपनी पुरानी शक्ल में आ गये।

पंचकिन फिर बोला — "अब मेरा तोता मुझे दो।"

"मास्टर इतनी जल्दी नहीं। इनके अलावा उन सबको भी इसी तरह आजाद कर दो जैसे इनको आजाद कर दिया।"

जादूगर ने अपनी जादू की छड़ी फिर से हिलायी और जैसे ही वह प्रार्थना भरी आवाज में चिल्लाया "मेरा तोता मुझे दो।" सारा बागीचा ज़िन्दा हो उठा।

जहॉ जहॉ पत्थर चट्टानें और पेड़ खड़े थे वहॉ अब राजा के मन्त्री सरदार आदि खड़े हुए थे। कीमती घोड़े, गहने पहने नौकर, हथियारबन्द पहरेदार आदि खड़े हुए थे।

पंचकिन फिर चिल्लाया "मेरा तोता मुझे दो।"

तब राजकुमार ने तोते को हाथ में पकड़ कर उसका एक पंख तोड़ दिया। जैसे ही उसने यह किया तो जादूगर की दॉयी बॉह टूट कर गिर पड़ी।

पंचकिन ने फिर अपनी बॉयी बॉह फैलाते हुए उससे कहा कि वह उसका तोता दे दे। पर राजकुमार ने अबकी बार तोते का दूसरा पंख भी तोड़ दिया तो उसकी बॉयी बॉह भी टूट कर नीचे गिर गयी।

राजकुमार ने एक एक कर के फिर उसकी दोनों टाँगें तोड़ दीं तो जादूगर नीचे गिर पड़ा। अब उसका शरीर बिना हाथ पैरों के नीचे पड़ा हुआ था। फिर भी उसने अपनी आँखें घुमाते हुए राजकुमार से कहा "मेरा तोता दे।"

"ले यह अपना तोता।" कह कर उसने तोते की गर्दन मरोड़ दी। बहुत ज़ोर से चिल्ला कर वह वहीं मर गया।

तब उन्होंने बलना को उस मीनार में से निकाला जिसमें वह बन्द थी और सातों राजकुमार उसको ले कर अपने राज्य चले गये और खुशी से रहने लगे। दुनियाँ के बाकी लोग अपने अपने घर चले गये।

2 एक हँसी की कहानी[11]

एक बार की बात है कि एक राजा और एक रानी रहते थे। वे दोनों बहुत दुखी थे क्योंकि उनके कोई बच्चे नहीं थे और राजमहल में रहने वाली कुतिया के भी कोई बच्चा नहीं था।

आखिर राजा रानी के बच्चे हुए। फिर ऐसा हुआ कि महल में रहने वाली कुतिया के भी बच्चे हुए। पर बदकिस्मती से रानी के दो कुत्ते पैदा हुए और कुतिया के दो सुन्दर बेटियाँ पैदा हुईं। इस बात से रानी बहुत दुखी हुई।

जब कुतिया खाना खाने जाती तो रानी अपने दोनों बच्चों को कुतिया के घर में रख देती और कुतिया की लड़कियों को अपने महल में ले आती। इस बात से कुतिया बहुत गुस्सा हुई। उसने सोचा कि ये लोग तो मेरी लड़कियों को कभी अकेला छोड़ेंगे नहीं, तो मैं ही इनको जंगल ले जाती हूँ।

सो एक रात उसने अपनी दोनों बेटियों को उठाया और उन्हें ले कर जंगल चली गयी। वहाँ उसने उनको एक पहाड़ी में एक गुफा में ले जा कर रख दिया जो एक साफ नदी के किनारे थी।

[11] A Funny Story (Tale No 2)

अब वह रोज शहर जाती और वहाँ से अच्छी सी दाल और चावल ले कर आती और अपनी बेटियों को खिलाती और उसको कहीं से सुन्दर कपड़े या गहने मिल जाते तो जो वह अपने मुँह में दबा कर ला सकती थी वह उनके लिये ले आती।

कुछ समय बाद जब एक दिन कुतिया अपनी बेटियों के लिये खाना लेने के लिये शहर गयी हुई थी तो दो नौजवान राजकुमार, एक राजा और दूसरा उसका भाई, शिकार खेलने के लिये निकले। वे सारा दिन शिकार की खोज में इधर उधर घूमते रहे पर उस दिन उन्हें कोई शिकार नहीं मिला।

वह दिन बहुत गर्म था। वे सब बहुत प्यासे थे सो वे एक पेड़ के नीचे चले गये जो थोड़ी सी ऊँचाई पर लगा हुआ था और वहाँ उसकी छाया में बैठ गये। अपने नौकरों को उन्होंने चारों तरफ पानी की खोज में भेज दिया। पर किसी को पानी कहीं नहीं मिला।

आखिर एक शिकारी कुत्ता वहीं पेड़ के नीचे आया वह कीचड़ में सना हुआ था। यह देख कर राजा बोला — "देखो यह कुत्ता कीचड़ में लिपटा हुआ है लगता है इसको पानी मिल गया है। इसके पीछे पीछे जाओ और देखो कि यह कहाँ जाता है।"

नौकर कुत्ते के पीछे पीछे गये तो वह उनको वहॉ ले गया जहॉ एक गुफा के पास एक नदी बहती थी और जहॉ वे लड़कियॉ रहती थीं। बच्चों ने भी उनको देखा तो वे डर गये और गुफा के अन्दर भाग गये।

नौकर लोग राजकुमारों के पास लौट कर आये तो उन्होंने उनको बताया कि उनके एक गुफा के पास बहुत ही साफ पानी मिल गया है। पर एक बात और भी है कि वहॉ दो बहुत सुन्दर लड़कियॉ भी हैं जैसी किसी की ऑखों ने कभी देखी नहीं होंगी। वे बहुत बढ़िया कपड़े और गहने पहने थीं। पर जब उन्होंने हमें देखा तो वे गुफा में अन्दर भाग गयीं।"

यह सुन कर राजकुमारों ने उनसे कहा कि वे उन दोनों को अपने साथ उस गुफा तक ले चलें। जब उन दोनों राजकुमारों ने उन लड़कियों को देखा तो वे उनकी तरफ देख कर आकर्षित हो गये। उन्होंने उनसे अपने राज्य चलने के लिये और उनकी पत्नी बनने के लिये पूछा।

पहले तो लड़कियॉ डर गयीं पर बाद में राजा और उसके भाई की जिद पर वे उनके साथ चली गयीं। राजा ने बड़ी बहिन से शादी कर ली और उसके छोटे भाई ने छोटी बहिन से शादी कर ली।

जब कुतिया घर वापस लौटी तो अपनी बेटियों को गुफा में न देख कर बहुत दुखी हुई। बारह साल तक वह उनको न जाने कहाँ कहाँ नहीं ढूँढती फिरी पर सब बेकार। वे उसको कहीं नहीं मिलीं।

आखिर वह उस जगह आ पहुँची जहाँ वे दोनों लड़कियाँ रहती थीं। अब ऐसा हुआ कि एक दिन राजा की पत्नी अपनी खिड़की से बाहर झाँक रही थी कि उसने कुतिया को देखा तो वह भाग कर नीचे सड़क पर गयी कि यह तो मेरी प्यारी माँ है।

वह सड़क पर भागती चली गयी और जा कर अपनी थकी हुई माँ को अपने हाथों में उठा लिया और उसको अपने कमरे में ले आयी। उसने उसके लिये फर्श पर एक बहुत ही मुलायम बिछौना बनवाया। उसके हाथ पैर धोये और उसके साथ बहुत ही दया का बरताव किया।

तब उसकी माँ बोली — "तुम बहुत अच्छी हो मेहरबान हो। तुमको फिर से देख कर मुझे बहुत खुशी हुई। पर मुझे यहाँ ठहरना नहीं चाहिये। मैं तुम्हारी छोटी बहिन से मिल लूँ फिर मैं वापस आती हूँ।"

रानी बोली — "माँ ऐसा नहीं करना। आज के दिन तुम यहीं रुको। कल मैं अपनी बहिन को बुलवाऊँगी और उसे

बताऊँगी कि तुम यहीं हो। फिर वह यहाँ आयेगी और तुमसे मिलेगी।"

पर बेचारी बेवकूफ कुतिया वहाँ नहीं ठहरी और वहाँ से भाग गयी। अब वह अपनी दूसरी बेटी के घर पहुँची। दूसरी बेटी भी खिड़की से बाहर झाँक रही थी जब यह कुतिया उसके दरवाजे पर आयी।

उसने कुतिया को देखा तो मन में सोचा "लगता है यह तो मेरी माँ है। अगर मेरा पति देखेगा तो इस नीच के बारे में क्या सोचेगा कि क्या यह कुतिया इसकी माँ है।"

सो उसने अपने नौकरों से कहा कि वे उस कुतिया को पत्थर मार मार कर वहाँ से भगा दें। उन्होंने ऐसा ही किया। एक बड़ा पत्थर उसको सिर में लग गया तो वह वहाँ से घायल हो कर अपनी बड़ी बेटी के घर की तरफ भागी।

रानी ने उसको अपने घर आते देखा तो वह बाहर भागी गयी और उसको अपनी बाँहों में उठा कर घर ले आयी। उसको ठीक करने के लिये उससे जो कुछ हो सकता था वह उसने किया।

उसने माँ से कहा — "माँ माँ। तुमने मेरा घर छोड़ा ही क्यों।" पर उसकी सारी देखभाल बेकार गयी। बेचारी कुतिया मर गयी।

तब रानी ने सोचा कि राजा ने अगर यह मरा हुआ जानवर घर में देखा तो वह क्या सोचेगा कि यह अपवित्र मरा हुआ जानवर यहाँ क्या कर रहा है सो उसने उसका शरीर एक छोटे कमरे में रख दिया जिसमें राजा कभी नहीं जाया करता था। उसको उसके ऊपर एक टोकरी उलटी करके ढक दी जिससे वह छिपी रहे। उसने सोचा कि वह बाद में उसको इज़्ज़त के साथ दफ़ना देगी।

जब राजा अपनी पत्नी के पास आया तो कुछ ऐसा हुआ कि उस दिन वह उस छोटे कमरे में चला गया जिसमें वह कभी नहीं जाया करता था। वहाँ पहुँच कर वह टोकरी से टकरा गया तो उसने नौकर को रोशनी लाने के लिये कहा ताकि वह यह देख सके कि वहाँ क्या था।

लो उसने वहाँ क्या देखा कि वहाँ तो ज़िन्दा कुत्ते जितनी बड़ी कुत्ते की एक सोने की मूर्ति पड़ी है जिस पर सारे में हीरे पन्ने और दूसरे जवाहरात जड़े हुए हैं।

राजा ने अपनी पत्नी को बुलाया और उससे पूछा — "तुमको इतना सुन्दर कुत्ता कहाँ से मिला।"

और जब रानी ने उस सोने के कुत्ते को देखा तो वह तो बहुत डर गयी। बजाय उसको सच बताने के उसने उसको एक

कहानी बना कर बतायी – कि यह तो एक भेंट थी जिसे मेरे माता पिता ने मुझे दी थी।”

अब ज़रा देखो कि सच न बताने की वजह से वह किस मुसीबत में पड़ गयी।

राजा बोला — “अरे यह तो किसी राजा का पूरा राज्य खरीद सकता है। तुम्हारे माता पिता बहुत अमीर होंगे जो तुम्हें इतना मॅहगी भेंट दे सके। ऐसा कैसे हुआ कि तुमने मुझे उनके बारे में कभी कुछ बताया ही नहीं। वे कहॉ रहते हैं।”

अब वह क्या करे। इस झूठ को छिपाने के लिये उसे एक और झूठ बोलना पड़ा। वह बोली “जंगल में।”

राजा बोला — “ठीक है मैं उनसे मिलने जरूर चलूँगा। तुम मुझे वहॉ ले कर जाओगी जहॉ वे रहते हैं।”

रानी ने सोचा “जब राजा को यह पता चलेगा कि मैं उनको ये सब कहानियॉ सुना रही हूॅ तो वह क्या कहेंगे। वह तो मुझे मरवा ही देंगे।”

सो वह बोली — “पहले आप मुझे एक पालकी मॅगवा दें तो मैं घर जा कर उनको यह बता आऊॅ कि आप उनसे मिलने के लिये आ रहे हैं।” पर वह यह सोच रही थी कि वह जंगल जा कर आत्महत्या कर लेगी।

वह चली गयी। जब वह अपनी पालकी में कुछ दूर पहुँच गयी तो उसने एक जगह बहुत सारी चींटियाँ देखीं और देखा उसके ऊपर एक कोबरा का फन और खुला हुआ मुँह।

रानी ने सोचा "मैं कोबरा के पास जाती हूँ और उसके मुँह में अपनी उँगली डाल देती हूँ इससे वह मुझे काट लेगा और मैं मर जाऊँगी।"

सो उसने पालकी वालों से कहा कि वे पालकी को रोक लें। वह पालकी से उतरी और उनसे कहा कि तुम लोग यहाँ मेरा इन्तजार करो मैं अभी आती हूँ। कह कर वह चींटियों की तरफ चल दी। वहाँ जा कर उसने अपनी उँगली कोबरा के मुँह में डाल दी।

इत्तफाक से कुछ देर पहले ही कोबरा के गले में एक काँटा फँस गया था जो उसको बहुत परेशान कर रहा था। सो जैसे ही रानी ने अपनी उँगली उसके मुँह में डाली वह काँटा पीछे को खिसका गया जिससे कोबरा को बहुत आराम मिला।

आराम आते ही उसने रानी की तरफ देखा और बोला — "प्यारी बेटी। तुमने मेरे ऊपर बहुत दया दिखायी है मैं तुम्हें इसके बदले में क्या दूँ।"

रानी ने तब उसको अपनी सारी कहानी बतायी और उससे प्रार्थना की कि वह उसे काट ले ताकि वह मर जाये। कोबरा

बोला हालाँकि तुमने राजा से झूठ बोल कर बहुत बुरा काम किया है पर इस हालत में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम अपने पति को यहाँ भेज देना और मैं तुम्हें तुम्हारे माता पिता दे दूँगा जिनके लिये तुम्हें शर्मिन्दगी नहीं उठानी पड़ेगी।

यह सुन कर रानी खुशी खुशी घर वापस लौट गयी और उससे अपने माता पिता से मिलने जाने के लिये कहा।

जब वे उस जगह पर पहुँचे जहाँ पहले कोबरा था तो वहाँ तो बस क्या ही दृश्य था। जहाँ बहुत घना जंगल था वहाँ तो एक आलीशान महल खड़ा था – **24** मील लम्बा और **24** मील चौड़ा। उसमें चारों तरफ बागीचे थे पेड़ थे फव्वारे थे।

और वह इतना चमक रहा था जिससे कि उसे **100** मील दूर से भी देखा जा सकता था। उसकी दीवारें सोने की बनी हुई थीं जिनमें जवाहरात जड़े हुए थे। कमरों में सोने के तारों के कपड़ों के कालीन बिछे हुए थे। सैंकड़ों नौकर बढ़िया कपड़े पहने इधर उधर घूम रहे थे। वे सब बड़े बड़े कमरों की देखभाल करते घूम रहे थे।

सबसे आखिरी कमरे में एक सिंहासन रखा हुआ था जिस पर राजा और रानी बैठे हुए थे – राजा के सास और ससुर।

राजा और रानी उस महल में छह महीने तक रहे। वे जितने दिन भी रहे वहाँ हमेशा ही दावतें और संगीत चलता रहा। वहाँ से चलते समय कोबरा ने उनको बहुत सारी भेंटें दीं।

वहाँ से चलने से पहले रानी अपने दोस्त कोबरा के पास गयी और बोली — "तुमने यह सब रच कर मुझे मेरी परेशानियों से निकाल लिया है। पर राजा को यहाँ आने में इतना आनन्द आया है कि शायद वह फिर यहाँ आना चाहे तो जब वह वापस आयेंगे तब तो उनको यह यहाँ मिलने वाला नहीं है। इससे वह मुझसे बहुत गुस्सा हो जायेंगे।"

कोबरा ने फिर कहा — "कोई चिन्ता की बात नहीं है। जब तुम अपनी यात्रा पर **24** मील दूर पहुँच जाओ तब तुम पीछे मुड़ कर देखना। तुमको वही दिखायी देगा जो तुम देखना चाहोगी।"

इसके बाद वे वहाँ से चल दिये। जब वे **24** मील चले गये तो उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो वह महल तो धूँ धूँ कर के जल रहा था और उसकी आग आसमान तक जा रही थी।

राजा पीछे मुड़ कर आया भी कि शायद वह उस महल में से किसी को बचा सके या फिर उनको दुख में पड़ा देख कर उनमें से किसी को अपने दरबार में बुला सके पर उसने देखा कि वह सारा का सारा किला तो जल कर खाक हो गया था।

यह देख कर उसने अपनी पत्नी के माता पिता की इस दुखभरी मौत पर बहुत दुख प्रगट किया।

जब ये लोग घर लौट कर आये तो राजा के छोटे भाई ने कहा — "भैया तुमको ये इतनी शानदार भेंटें किसने दीं।"

राजा बोला — "ये तो मेरे सास ससुर ने दीं है।"

यह सुन कर राजा का भाई बड़ा असन्तुष्ट हो कर अपने घर गया और अपनी पत्नी से पूछा कि उसने अपने माता पिता के बारे में उसको क्यों नहीं बताया। वह उसको उनसे मिलाने क्यों नहीं ले गयी ताकि उसको भी वहाँ से उतनी ही कीमती भेंटें मिलती जितनी कि उसके भाई को मिली हैं।

तब वह अपनी बहिन के पास गयी और उससे पूछा कि इतनी सारी कीमती भेंटें उसे कहाँ से मिलीं। तब रानी बोली — "तुम मेरी आँखों के सामने से दूर हो जाओ ओ नीच लड़की। मैं तुमसे बात भी नहीं करूँगी। तुमने उस बेचारी कुतिया को मार डाला जो हमारी माँ थी।"

पर बाद में उसने उसको सब कुछ बता दिया।

बहिन बोली — "मैं भी जा कर कोबरा को देखती हूँ और उससे भेंटें ले कर आती हूँ।"

रानी बोली — "तुम वहाँ चाहो तो जा सकती हो।"

सो बहिन ने भी पालकी मँगवायी और अपने पति से कहा कि वह अपने माता पिता से मिलने जा रही है ताकि वे अपने दूसरे दामाद के स्वागत के लिये तैयार रहें।”

जब वह चींटी के घर तक पहुँची तो उसने देखा कि एक कोबरा वहाँ था। वह पालकी में से उतरी और अपनी उँगली उसके मुँह में रख दी। कोबरा ने तुरन्त ही उसे काट लिया जिससे वह तुरन्त ही मर गयी।

3 बहादुर सैवैन्ती बाई[12]

स्यू राजा जो बहुत दिन पहले आगराब्रौम में राज करता था उसके एक अकेला बेटा था जिसको वह बहुत प्यार करता था। राजकुमार का नाम लोगदास था वह नौजवान था सुन्दर था और उसने एक सुन्दर राजकुमारी पार्वतीबाई के साथ शादी की हुई थी।

अब हुआ यह कि स्यू राजा के वजीर के भी एक बेटी थी जिसका नाम था सैवैन्ती[13]। वह इतनी सुन्दर थी जैसे सुबह की खिलती धूप। वह अपनी विनम्रता और अच्छाइयों की वजह से सबकी प्यारी थी।

जैसे ही लोगदास ने उसको देखा तो वह उसके प्रेम में पड़ गया। उसने सोचा कि वह उससे शादी करेगा। पर जब स्यू राजा ने यह बात सुनी तो वह बहुत गुस्सा हुआ।

उसने अपने बेटे को बुलवाया और कहा — "मेरे राज्य में जितनी भी कीमती चीज़ें हैं मैंने उनमें से कोई भी चीज़ तुमसे बचा कर नहीं रखी हैं। और यह पार्वती बाई जो तुम्हारी पत्नी है वह भी इतनी सुन्दर है जितनी कि कोई आदमी चाह सकता है।

[12] Brave Seventee Bai (Tale No 3)

[13] Siu King, Agrabraum kingdom, Logedas Prince, Parbautte Bai, Seventee Bai

खैर अगर तुमको दूसरी पत्नी रखने की इच्छा ही है मैं तुम्हें आजादी देता हूँ कि बहुत सारे राजा लोग हैं जिनकी बेटियाँ ऐसी हैं जो तुम्हारी पत्नी बन कर रानी बनना चाहेंगी पर यह तुम्हारी शान के खिलाफ है कि तुम एक वजीर की बेटी से शादी करो।

और अगर तुम उससे शादी कर लेते हो तो मैं अपने प्यार की वजह से तुम्हें देश निकाला देने से बाज़ नहीं आऊँगा।"

लोगदास ने पिता की धमकी पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसने सैवैन्ती बाई से शादी कर ली। राजा को जब यह पता चला तो उसने उसे तुरन्त ही राज्य से बाहर जाने का हुक्म दे दिया।

पर फिर भी क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था उसने लोगदास को बहुत सारे हाथी ऊँट घोड़े पालकी नौकर आदि दिये ताकि उसको यात्रा में किसी से कोई सहायता माँगने की जरूरत न पड़े और सब लोग उसको राजकुमार ही समझें।

सो लोगदास अपनी दोनों नौजवान पत्नियों को ले कर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। वहाँ से बहुत दूर जाने से पहले ही लोगदास ने अपने साथ आये हुए सारे लोगों को वापस भेज दिया।

अपने पास उसने केवल एक हाथी रखा जिस पर वह चढ़ रहा था और एक पालकी रखी जिसमें उसकी दोनों पत्नियाँ बैठी थीं और जिसे दो आदमी उठा कर ले जा रहे थे।

इस तरह करीब करीब अकेले ही उसने अपने लिये एक नया घर खोजने के लिये आगे की यात्रा शुरू की जो जंगल में से हो जाती थी। पर देश के उस हिस्से से वह बिल्कुल अनजान था सो कुछ दूर जाने पर ही वह रास्ता खो गया।

बेचारी राजकुमारियाँ तो इससे बहुत चिन्तित हो गयीं। दिन पर दिन वे जंगली फल और जड़ें और कुटे पिसे पत्ते खाते हुए इधर से उधर घूमते रहे। रात को उनको जंगली जानवरों की दहाड़ की आवाज से डर लगता क्योंकि वे उस समय अपने शिकार के लिये निकलते।

राजा लोगदास भी रोज रोज इस तरह से रहते हुए बहुत दुखी था कि एक रात अपनी पत्नियों की यह हालत देख कर और उनका दुख न सहन करने की वजह से वह उठा उसने अपनी शाही पोशाक उतार फेंकी एक मोटे कपड़े का रूमाल लिया और उसकी पगड़ी सी बनायी एक लम्बा गर्म शाल कन्धे पर डाला और इस तरह अपना वेश बदल कर जंगल भाग गया।

उसके जाने के कुछ देर बाद वजीर की बेटी की ऑख खुली तो उसने देखा कि पार्वती बाई बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही है। उसने उससे पूछा — "बहिन क्या हुआ।"

पार्वती बाई बोली — "ओ बहिन मुझे सपने में कुछ ऐसा लगा कि हमारे पति फ़कीर का वेश बना कर जंगल में भाग गये हैं। मजे की बात तो यह है कि यह देख कर मेरी ऑख खुल गयी। मैं जागी तो देखा कि यह तो सच है।

वह यहॉ से चले गये हैं और हमें अकेला जंगल में छोड़ गये हैं। इतनी बड़ी परेशानी भुगतने की बजाय इससे तो अच्छा होता अगर हम मर जाते।"

सैवैन्ती बाई बोली — "बहिन रो मत। अगर हम रोयेंगे तो हम खो जायेंगे। क्योंकि पालकी ढोने वाले यह सोचेंगे कि हम दो कमजोर स्त्रियॉ हैं और वे हमें इसी जंगल में अकेला छोड़ कर भाग जायेंगे जहॉ से फिर हम कभी बाहर नहीं निकल सकते।

खुश खुश रहो भगवान ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। कौन जानता है कि हमको हमारे पति मिल ही जायें। ऐसा करते हैं कि इस बीच मैं राजा के कपड़े पहन लेती हूॅ और अपना नाम सैवैन्ती राजा रख लेती हूॅ और तुम मेरी पत्नी बन जाओ।

इससे पालकी ढोने वाले यह सोचेंगे जैसे बस मैं खो गयी हूँ। और वे यह भी सोच सकते हैं कि इस जंगल में मुझे जंगली जानवर खा गये हैं।"

यह सुन कर पार्वती बाई मुस्कुरा कर बोली — "बहिन तुमने तो कितनी अच्छी बात बताायी। तुम बहुत बहादुर हो। मैं तुम्हारी छोटी पत्नी बन कर रहूँगी।"

सो सैवैन्ती बाई ने अपने पति के कपड़े पहन लिये। अगले दिन वह हाथी पर सवार हो गयी और पालकी ढोने वालों को हुक्म दिया कि वे पालकी उठायें जिसमें पार्वती बाई बैठी हुई थी। उन्होंने फिर से जंगल में रास्ता ढूँढना शुरू कर दिया।

पालकी उठाने वालों ने सोचा कि सैवैन्ती बाई को क्या हुआ। उन्होंने आपस में बात की — "ये अमीर लोग भी कितने मतलबी होते हैं। अब हमारे नौजवान राजा को ही देख लो जिसने वजीर की बेटी से शादी की और यह सब आफत मोल ली। वह उसको अपनी आत्मा की तरह से प्यार करते थे। पर अब देखो कि इस जंगल में जब उसे किसी जंगली जानवर ने खा लिया है तो वह तो उसकी मौत पर ज़रा भी दुखी नहीं दिखायी दे रहे।"

कुछ दिनों की यात्रा के बाद वजीर की बेटी की अक्लमन्दी से वे जंगल के बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ पाये। आखिर वे एक खुले हुए मैदान में आ गये जहाँ एक बहुत बड़ा शहर था।

शहर वालों ने जब एक हाथी को शहर में आते हुए देखा तो वे यह देखने के लिये दौड़े कि उसके ऊपर कौन बैठा है। देख कर वे अपने राजा के पास दौड़े आये और उसे बताया कि एक बहुत सुन्दर राजा हाथी पर सवार हो कर इसी शहर में आ रहा है। उसके साथ उसकी पत्नी भी है। वह भी बहुत सुन्दर है।

यह सुन कर वहाँ के राजा ने सैवैन्ती बाई को बुलवाया और उससे पूछा कि वह कौन थी और वहाँ क्यों आयी थी। सैवैन्ती बाई बोली — "मेरा नाम सैवैन्ती राजा है। मेरे पिता मुझसे नाराज हो गये थे इसलिये उन्होंने मुझे अपने राज्य से बाहर निकाल दिया। तो मैं और मेरी पत्नी हम दोनों जंगल में बहुत दिनों से घूमते फिरते रहे। पर फिर वहाँ हम रास्ता खो गये।"

राजा और उसके दरबारियों ने कहा कि इतना बहादुर और ऐसा शाही शान वाला राजा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

राजा ने कहा कि अगर सैवैन्ती बाई उसके यहाँ कोई काम कर ले तो वह उसे जितना वह चाहे उतना पैसा दे देगा।

वजीर की बेटी ने जवाब दिया — "किसी के नीचे काम करने की मेरी आदत नहीं है। पर क्योंकि आप हमारे लिये बहुत अच्छे रहे और हमारी सुरक्षा करते रहे इसलिये जो कोई पद आप मेरे लिये ठीक समझें वह मुझे दे दें और मैं आपकी वफादारी से सेवा करता रहूँगा।"

सो राजा ने सैवैन्ती बाई को **24** हजार पौंड सालाना तनख्वाह और एक मकान पर रख लिया। वह उस पर बहुत भरोसा करता था। वह हर महत्वपूर्ण काम पर उसकी राय लेता था और राज्य के बहुत सारे भरोसे के काम उसको करने के लिये देता था।

उसके नम्र व्यवहार से किसी को कोई जलन नहीं होती थी बल्कि सभी उसको प्यार करते थे और उसकी इज़्ज़त करते थे।

इस तरह से ये दोनों राजकुमारियाँ वहाँ **12** साल तक रहीं। किसी को यह शक नहीं हुआ कि सैवैन्ती बाई राजा नहीं है जिसका कि वह नाटक कर रही थी।

उसने पार्वती बाई को किसे भी गहरी दोस्ती करने से और हर किसी पर विश्वास करने से सख्ती से मना कर रखा था। उसका कहना था कि "तुम नहीं जानती कब किसी को यह पता चल जाये कि मैं सैवैन्ती राजा नहीं बल्कि सैवैन्ती बाई हूँ।

और हालाँकि मैं तुमको अपनी बहिन की तरह से प्यार करती हूँ पर अगर तुमने मेरे बारे में ऐसा कुछ कहा तो विश्वास रखो कि मैं तुम्हें अपने हाथों से मारने में भी बिल्कुल नहीं हिचकिचाऊँगी।"

राजा का महल शहर के एक तरफ था जो जंगल के बहुत करीब पड़ता था। एक रात उधर से आती चीखों और चिल्लाहटों की आवाज से रानी की नींद खुल गयी तो उसने अपने पति को जगाया — "मैं इस शोर को सुन कर इतना डर गयी थी कि फिर सो नहीं सकी। मेहरबानी कर के किसी को भेज कर पता करवाइये कि क्या मामला है।"

राजा ने तुरन्त ही अपने सारे नौकरों को बुलाया — "तुम सब जंगल की तरफ जाओ और देख कर आओ कि जंगल से यह शोर कैसा आ रहा है।" पर वे सभी बहुत डरे हुए थे क्योंकि उस रात रात अँधेरी थी और शोर बहुत भयानक था।

उन्होंने राजा से कहा — "हमको डर लगता है। हम अकेले उधर जाने की हिम्मत नहीं कर सकते हैं। आप अपने उस प्रिय राजा को भेज दीजिये जिसे आप बहुत प्यार करते हैं। वह बहादुर है। आप उसे इतना सारी तनख्वाह देते है जितनी आप हम सबको मिला कर भी नहीं देते। अगर वह समय पर काम न आये तो उसके रखने का क्या फायदा।"

सो वे सब मिल कर सैवैन्ती बाई के घर गये। जब उसने सुना कि क्या मामला है तो वह कूद कर उठी और बोली मैं अभी जा कर देखता हूँ कि जंगल से यह कैसा शोर आ रहा है।

यह शोर एक राक्षस मचा रहा था। वह एक तख्ते के नीचे खड़ा हुआ था जहाँ पहले दिन एक चोर फाँसी पर लटकाया गया था। वह अपने पंजों को ऊपर उठा कर उस लाश को ले लेना चाहता था पर वह उसके लिये काफी ऊँची लटकी हुई थी उसके हाथ नहीं आ रही थी इसलिये वह गुस्से और असन्तुष्टि से चिल्ला रहा था।

खैर जब वजीर की बेटी वहाँ पहुँची तो वहाँ कोई राक्षस नहीं था। बल्कि उसकी बजाय खूब चमकती हुई साड़ी पहने हुए पेड़ के नीचे हाथ मलती हुई एक बहुत ही बुढ़िया बैठी थी और उसके ऊपर लटकती हुई लाश हवा से इधर उधर झूल रही थी।

सैवैन्ती बाई ने बुढ़िया से पूछा — "क्या बात है।"

राक्षस बोला – क्योंकि वह बुढ़िया नहीं थी बल्कि राक्षस था — "मेरा बेटा इस पेड़ से लटक रहा है। वह मर गया है। और मैं अपनी उम्र की वजह से इतनी झुक गयी हूँ कि मैं उस रस्सी तक नहीं पहुँच सकती ताकि रस्सी काट कर उसका शरीर नीचे ला सकूँ।

सैवैन्ती बाई बोली — "उफ़ बेचारी बुढ़िया। लो तुम मेरे ऊपर अपना पैर रख कर चढ़ जाओ तब तुम अपने बेटे तक पहुँच पाओगी।"

सो वह राक्षस सैवैन्ती बाई के ऊपर चढ़ गया। सैवैन्ती बाई ने भी उसको उसकी चमकती साड़ी से कस कर पकड़ रखा था। जब वह वहाँ खड़ी हुई थी तो उसने सोचा कि "यह बुढ़िया तो अपने बेटे के गले की रस्सी काटने में काफी देर लगायेगी।"

लेकिन तभी बादलों के पीछे से चाँद निकला और सैवैन्ती बाई ने ऊपर देखा तो उसने देखा कि वह किसी बुढ़िया को अपने ऊपर नहीं उठाये थी वहाँ तो एक राक्षस था जो उस लाश को धीरे धीरे खा रहा था।

वह डर गयी और पीछे की तरफ को कूद गयी। उधर राक्षस एक बहुत ज़ोर की चीख मारता हुआ वहाँ से भाग खड़ा हुआ। उसकी चमकती साड़ी सैवैन्ती बाई के हाथ में ही रह गयी।

सैवैन्ती बाई ने सोचा कि वह इस बात को रानी से नहीं कहेगी क्योंकि वह उसको डराना नहीं चाहती थी। उसने जा कर बस इतना कह दिया कि वहाँ एक बुढ़िया थी जो फाँसी लगाने की जगह बैठी बैठी रो रही थी।

इसके बाद वह अपने घर वापस लौट गयी और वह चमकती साड़ी पार्वती बाई को दे दी।

X X X X X X X

इसके कुछ दिनों बाद राजा की दो छोटी बेटियों ने सोचा कि वे पार्वती बाई से मिल कर आयेंगी। इत्तफाक से उस दिन पार्वती बाई ने राक्षस वाली साड़ी पहन रखी थी। वह अपनी अधखुली खिड़की के पास खड़ी हुई थी। जब राजकुमारियाँ उसके घर आयीं तो उनकी आँखें उसकी सुनहरी साड़ी की चमक देख कर चौंधिया गयीं।

वे अपने घर भाग गयीं और अपनी माँ से बोलीं — "माँ उस नौजवान राजा की पत्नी के पास तो इतनी सुन्दर साड़ी है कि वैसी सुन्दर साड़ी तो हमने कभी देखी नहीं।

वह सूरज की तरह चमकती है और आँखों को अन्धा कर देती है। हमारे पास तो उससे आधी सुन्दर साड़ी भी नहीं है। और आप भी हालाँकि आप रानी हैं पर आपके पास भी इतनी कीमती साड़ी नहीं है। आप भी ऐसी एक साड़ी क्यों नहीं खरीद लेतीं।"

जब रानी ने पार्वती बाई की साड़ी की इतनी तारीफ सुनी तो उसकी इच्छा हुई कि वह भी वैसी ही एक साड़ी खरीदे।

सो उसने राजा से कहा — "तुम्हारे नौकर की पत्नी तो तुम्हारी अपनी पत्नी से भी अच्छी पोशाकें पहनती है। मैंने सुना है कि पार्वती बाई के पास एक ऐसी साड़ी है जो मेरी किसी भी साड़ी से ज़्यादा मँहगी है। मेहरबानी कर के मुझे भी वैसी एक साड़ी दिलवा दो क्योंकि जब तक में उससे ज़्यादा मँहगी साड़ी नहीं ले लूँगी मुझे चैन नहीं आयेगा।"

यह सुन कर राजा ने सैवैन्ती बाई को बुला भेजा और उससे पूछा — "मुझे बताओ कि तुम्हारी पत्नी पास इतनी सुन्दर सुनहरी साड़ी कहाँ से आयी क्योंकि रानी भी वैसी ही एक साड़ी चाहती है।"

सैवैन्ती बाई बोली — "ओ भले मालिक। वह साड़ी तो एक बहुत दूर देश से आयी है – राक्षसों के देश से। वैसी साड़ी का यहाँ मिलना तो नामुमकिन है पर अगर आप मुझे छुट्टी दे दें तो मैं उनका देश ढूँढूँगा और अगर मुझे यह वहाँ मिल गयी तो मैं आपके लिये वैसी ही साड़ी ले आऊँगा।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसके कहने के अनुसार उसको छुट्टी दे दी। सैवैन्ती बाई अपने घर आयी और पार्वती बाई से विदा ले कर अपने घोड़े पर चढ़ कर राक्षस का देश खोजने के लिये चली गयी। पार्वती बाई को वह चेतावनी दे गयी कि वह उसके पीछे सँभल कर रहे।

सैवैन्ती बाई जंगल में बहुत दिनों तक चलती रही। वह रोज 100 मील चल लेती थी। कभी कभी रास्ते में पड़े गॉवों में आराम भी कर लेती थी।

सैंकड़ों मील चल लेने के बाद एक दिन वह एक शहर में आ पहॅुची जो एक नदी के किनारे बसा हुआ था। उस शहर की दीवारों पर बड़े बड़े अक्षरों में एक मुनादी छपी हुई थी।

सैवैन्ती बाई ने लोगों से पूछा कि उसमें क्या लिखा था तो लोगों ने बताया कि इसमें लिखा हुआ है कि राजा की बेटी उसी आदमी से शादी करेगी जो उसके पिता का एक अकड़ू घोड़ा काबू में कर लेगा। सैवैन्ती बाई ने उनसे पूछा — "क्या अभी तक कोई भी ऐसा नहीं आया जो उस घोड़े को काबू कर सके?"

उन्होंने जवाब दिया — "नहीं अभी तक तो कोई ऐसा आया नहीं। बहुत सारे लोगों ने कोशिश की पर उससे बुरी तरह से हार गये। यह घोड़ा भी उसी दिन पैदा हुआ था जिस दिन राजकुमार पैदा हुए थे। यह इतना भयानक है कि सब इसके पास आने तक से डरते हैं।

पर जब राजकुमारी जी ने यह सुना कि वह कितना जंगली है तो उन्होंने यह कसम खायी वह केवल उसी से शादी करेंगी

जो उसे पालतू बना लेगा। जो भी चाहे वह उसे काबू में करने के लिये आजाद है।”

सैवेन्ती बाई ने कहा — “क्या आप लोग मुझे वह घोड़ा कल दिखा सकते हैं। शायद मैं उस पर काबू पा सकूँ।”

वे बोले — “तुम उसको पालतू बनाने की कोशिश तो कर सकते हो पर ध्यान रखना कि वह बहुत ही खतरनाक घोड़ा है और तुम केवल एक नौजवान हो।”

वह बोली — “जो कमजोर होते हैं भगवान उनको अपनी ताकत देता है। मैं डरता नहीं।”

कह कर वह सोने चली गयी। अगली सुबह सवेरे ही शहर के लोगों को यह बताने के लिये ढोल पिटने लगा कि एक और आदमी इस घोड़े को काबू करना चाहता है।

सारे घरों में से यह दृश्य देखने के लिये बाहर आ गये। घोड़े को नदी के पास वाले मैदान में ले आया गया। इधर सैवेन्ती बाई उस पर बैठने के लिये उसकी तरफ दौड़ी उधर घोड़ा उसको मारने के इरादे से उसकी तरफ दौड़ा।

सैवेन्ती बाई ने उसको उसकी गर्दन के बालों से पकड़ लिया सो न तो वह उसको ठोकर ही मार सका और न ही वह उसको अपने अगले पैरों से मार सका। घोड़े ने उसको अपने ऊपर से

झटक कर गिराने की कोशिश भी की पर सैवेन्ती बाई उससे कस कर चिपक गयी और फिर उसके ऊपर बैठ गयी।

जब घोड़े ने देखा कि अब उस पर काबू पाया जा चुका है तो फिर वह उसका गुलाम बन गया। तब सैवेन्ती बाई ने यह दिखाने के लिये कि उसने उसे कितनी अच्छी तरीके से काबू कर लिया है उसने उसे नदी पर से कुदा दिया।

घोड़ा तुरन्त ही कूदा और नदी के उस पार कूद गया। यह कूद उसकी तीन मील दूर की थी। ऐसा उसने तीन बार किया क्योंकि वह एक मजबूत घोड़ा था। उस पर अभी तक किसी ने सवारी नहीं की थी।

जब लोगों ने यह देखा तो खुशी से चिल्लाये और सेवैन्ती बाई को घोड़े पर चढ़े चढ़े ही राजा के पास ले आये। राजा बोला — "ओ दुनियाँ के सबसे अच्छे और इज़्ज़त के काबिल आदमी। तुमने मेरी बेटी को जीत लिया।"

वह सैवेन्ती बाई को महल ले गया उसकी बहुत इज़्ज़त की उसको जवाहरात दिये कीमती कपड़े दिये और अनगिनत ऊँट और घोड़े दिये। राजकुमारी भी अपने जीतने वाले से मिलने के लिये बाहर आयी। उन्होंने कहा कि "कल हम तुम्हारी शादी कर देंगे।"

सैवैन्ती बाई ने जवाब दिया — "ओ महान राजा और सुन्दर राजकुमारी। अभी तो मैं अपने राजा के एक काम से निकला हूँ सो पहले मैं वह काम कर लूँ जिसके लिये मैं निकला हूँ। जब मैं वापस घर जाऊँगा तो इस शहर से गुजरूँगा तब मैं अपनी दुलहिन को लेता जाऊँगा।"

यह सुन कर दोनों बहुत खुश हुए। राजा बोला — "यह तुमने बहुत अच्छी बात कही है। हम तुम्हारे और तुम्हारे राजा के विश्वास के बीच में नहीं आयेंगे। तुम अपने रास्ते जाओ। हम तुम्हारा बड़ी उत्सुकता से इन्तजार करेंगे जब तुम यहाँ आ कर राजकुमारी और अपना सामान ले जाओगे।

जब तुम आओगे तब हम तुम्हारी शादी इतनी धूमधाम से करेंगे जैसी कि इस दुनियाँ में आज तक नहीं हुई होगी।"

फिर वे उसको छोड़ने के लिये राज्य की सीमा तक गये और उसको आगे का रास्ता दिखाया।

XXXXXXX

इस तरह वजीर की बेटी राक्षस का शहर खोजने के लिये फिर से अपने रास्ते चल दी। एक दिन फिर वह एक बहुत बड़े शहर में आ निकली। यहाँ वह एक सराय में कुछ दिन ठहरी।

इस देश के राजा के भी एक बहुत सुन्दर बेटी थी जो उसका अकेला बच्चा थी। उसके लिये उसने एक बहुत ही

शानदार नहाने का कमरा बनवाया। वह एक छोटे से समुद्र जैसा था।

उसके चारों तरफ ऊँची ऊँची संगमरमर की दीवार थी। उस दीवार पर नुकीले कॉटों की कतार लगी हुई थी। वह इतनी ऊँची थी कि बाहर से देखने पर वह एक बड़ा सा किला लगता था।

राजकुमारी को वह जगह बहुत अच्छी लगती थी। उसने फैसला किया हुआ था कि वह उसी से शादी करेगी जो घोड़े पर सवार हो कर उसके उस नहाने की जगह को पार कर जायेगा।

उसके इस फैसले को किये हुए कई साल हो गये थे पर अभी तक ऐसा काम किसी ने नहीं किया था। इस बात से राजा और रानी बहुत दुखी रहते थे क्योंकि वे अपनी बेटी को हॅसते खेलते देखना चाहते थे।

एक दिन उन्होंने उससे कहा — ऐसा लगता है जैसे जब तक तुम्हारी शादी होगी तब तक तो हम मर भी चुके होंगे। यह क्या बेवकूफी है कि कोई ऐसी दीवार को लॉघ कर जायेगा जिसके ऊपर इस तरह से कॉटे लगे हों तुम उसी से शादी करोगी।”

राजकुमारी बोली — "तब मैं शादी कभी नहीं करूँगी। मुझे इससे कोई मतलब नहीं है। मुझे ऐसा पति नहीं चाहिये जिसने यह दीवार पार न कर ली हो।"

सो राजा को अपने राज्य में यह मुनादी पिटवानी ही पड़ी कि वह उस आदमी को अपनी बेटी शादी में देगा और साथ में बहुत खजाना देगा जो कोई भी राजकुमारी के नहाने के कमरे को घोड़े पर बैठ कर फलाँग जायेगा।

जब सैवैन्ती बाई इस शहर में आयी तो उसने भी यह मुनादी सुनी तो उसने कहा कल मैं राजकुमारी के नहाने वाले कमरे पर से घोड़े पर बैठ कर कूदूँगा।

शहर में रहने वालों ने उसे समझाया — "यह तुम्हारी क्या बेवकूफी है। यह बिल्कुल नामुमकिन है।"

वह बोली — "भगवान जिसमें मेरा पूरा विश्वास है वही मेरी सहायता करेगा।"

सो अगले दिन वह उठी। उसने अपने घोड़े की जीन कसी और महल के सामने ले गयी। वहाँ पहुँच कर वह घोड़े पर कूदी और उसको पूरे तरीके से ऐड़ लगायी और लो वह तो राजकुमारी का नहाने का कमरा पार करके दूसरी तरफ जा पहुँची थी। और यह उसने तीन बार किया।

राजा ने इसे देखा तो वह बहुत खुश हो गया। उसने सैवैन्ती बाई को अपने पास बुलाया और बोला — "ओ बहादुर राजकुमार तुम्हारा नाम क्या है क्योंकि तुम ही दुनियाँ केवल एक ऐसे आदमी हो जिसने यह काम कर दिखाया है।"

सैवैन्ती बाई बोली — "मेरा नाम सैवैन्ती राजा है। मैं एक बहुत दूर के देश से आया हूँ। मुझे अपने देश के राजा का एक काम पूरा करना है। मुझे राक्षस के देश जाना है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि पहले मुझे मेरे राजा का काम खत्म कर लेने दीजिये फिर मैं इस देश से हो कर वापस लौटूँगा तब मैं अपनी दुलहिन को ले जाऊँगा।"

राजा इसके लिये तैयार हो गया क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि उसकी बेटी इतनी लम्बी और थकान वाली यात्रा पर जाये। सो वे दोनों इस बात पर तैयार हो गये कि जब तक सैवैन्ती बाई लौट कर आता है तब तक राजकुमारी अपने पिता के घर में रह कर ही उसका इन्तजार करेगी।

उधर सैवैन्ती बाई जल्दी से जल्दी अपनी यात्रा पर निकल गयी।

X X X X X X X

इस जगह से भी वह काफी दिनों तक आगे चलती रही और एक माली के घर पहुँच गयी। वहाँ के रहने वालों ने जब देखा कि एक अनजान थका हुआ आदमी उनके घर आया है तो उन्होंने उसको खाना खिलाया और रात को सोने की जगह दी।

उसने भी उनके खाने और जगह को धन्यवाद सहित स्वीकार किया। जब वे सब आग के चारों तरफ खाना खाने के लिये बैठे तो सैवैन्ती बाई ने माली की पत्नी से उस जगह और उसमें रहने वालों के बारे में पूछा। उसने उससे यह भी पूछा कि आजकल उस शहर में क्या नयी खबर है।

वह बोली — "आजकल हमारे राजा के सपने के बारे में बहुत चर्चा है। उनके उस सपने का कोई भी मतलब नहीं बता सका।"

सैवैन्ती बाई ने पूछा — "ऐसा कौन सा सपना देखा है उन्होंने।"

माली की पत्नी बोली — "जबसे वह दस साल के थे तब से वह यह सपना देखते चले आ रहे हैं। उनको सपने में एक बहुत ही बड़े बागीचे में एक बहुत ही सुन्दर पेड़ उगता हुआ दिखायी देता है। पेड़ का तना चाँदी का है उसके पत्ते खालिस सोने के हैं और उसके फल मोतियों के गुच्छे हैं।

राजा ने अपने सारे अक्लमन्द लोगों से राय कर ली कि वैसा पेड़ कहॉ है पर उन सबने एक ही जवाब दिया कि "दुनियॉ में कितनी सारी चीज़ें हैं पर इस तरह का कोई पेड़ नहीं है।" इससे वह बहुत असन्तुष्ट हैं और दुखी हैं।

इसके अलावा उनकी राजकुमारी ने जब अपने पिता का सपना सुना तो उसने भी यह तय किया कि वह केवल उसी आदमी से शादी करेगी जो उस पेड़ को ढूँढ कर लायेगा।"

सैवैन्ती बाई बोली — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है।"

जब उनका खाना खत्म हो गया तो उसने अपना गद्दा उठाया और घर के बाहर चली गयी जैसा कि कोई भी आदमी करता।

उसने उसे झील के पास एक सुरक्षित जगह पर लगाया और रात को सोने से पहले प्रार्थना करने के लिये वह घुटनों पर बैठ गयी।

जैसे ही वह वहॉ घुटने टेक कर बैठी उसकी ऑखें ॲधेरे पानी के ऊपर जा कर टिक गयीं। तभी अचानक उसके सामने एक चमकती हुई चीज़ प्रगट हुई और फिर वह पानी में से निकल कर झील के किनारे से बाहर आने लगी। उसने देखा कि वह तो एक कोबरा था।

उस साँप के मुँह में एक बहुत बड़ा हीरा था जो एक अंडे की शक्ल और साइज़ का था। वह हीरा सूरज की तरह से चमक रहा था या फिर ऐसा लग रहा था जैसे कोई सितारा टूट कर साँप के मुँह में अटक गया हो। कोबरा ने वह हीरा तो झील के बाहर आ कर जमीन पर रख दिया और अपने लिये खाना ढूँढने लगा।

जब रात काफी बीत गयी तो उसने अपना हीरा फिर से उठाया और उसे उठा कर सीढ़ियों से उतर कर झील में चला गया। सैवैन्ती की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे पर उसने यह तय कर लिया कि अगली रात को वह फिर से वहाँ आयेगी और फिर से कोबरा को देखने की कोशिश करेगी।

सो अगले दिन फिर वह वहीं आ कर लेट गयी तो उसने फिर से कोबरा को अपने मुँह में हीरे को ले कर झील से बाहर निकलते हुए देखा। उसने फिर उस हीरे को झील के किनारे रखते और खाने के बाद उसे उठा कर ले जाते देखा।

तीसरे दिन भी यही हुआ। पर इस दिन सैवैन्ती ने सोचा कि वह उस कोबरा को मार देगी और हो सका तो उससे हीरा ले लेगी।

सो अगले दिन सुबह सवेरे ही वह बाजार गयी और एक लोहार को लोहे जाल बनाने के लिये कहा जो हर उस चीज़ को

पकड़ ले जिस पर भी वह फेंका जाये। और उस चीज़ को भी उस जाल से छूटने के लिये कम से कम 12 आदमियों की सहायता चाहिये।

लोहार ने वैसा जाल बना दिया – एक बहुत ही मजबूत जाल। उसके नीचे के हिस्से में चाकू लगे थे और जब वह जाल किसी के ऊपर फेंका जाता तो उसको उसे तोड़ कर बाहर निकलने के लिये 12 आदमियों की ताकत की जरूरत पड़ती।

सैवैन्ती बाई ने अपना जाल झील के पास लगे एक पेड़ पर टॉग दिया और चारों तरफ खुशबूदार फूल फैला दिये जैसे कि कोबरा पसन्द करते है।

रात आने से पहले ही वह जाल वाले पेड़ पर चढ़ गयी और कोबरा के बाहर आने का इन्तजार करने लगी जैसा कि उसको आना था। रात को 12 बजे करीब कोबरा झील में से बाहर निकला। सैवैन्ती ने देखा उसके मुँह में हीरा था।

यह देख कर सैवैन्ती बहुत खुश हो गयी। खुशबू से आकर्षित हो कर वह आगे बढ़ा पर वह अब जंगल की बजाय पेड़ की तरफ बढ़ रहा था जिस पर सैवैन्ती बाई बैठी थी। जैसे ही वह पेड़ के नीचे आया सैवैन्ती बाई ने अपना जाल उसके ऊपर गिरा दिया।

पर इस डर से कि शायद वह अभी कहीं ज़िन्दा न हो वह हीरा लेने के लिये सुबह तक इन्तजार करती रही।

जब सूरज निकल आया तब वह अपना शिकार देखने के लिये नीचे उतरी। उसने देखा कि वह ठंडा और मरा हुआ पड़ा था। हीरा भी उसी के पास पड़ा हुआ था। उसके मुँह में वह एक रोशनी के पहाड़ जैसा लग रहा था।

उसने हीरे को उठा कर रख लिया। वह सारी रात की थकी थी तो उसने सोचा कि वह पहले झील के पानी में नहा ले तब माली के घर जायेगी। सो वह झील के किनारे तक गयी और पानी में अपने हाथ डाले ताकि वह अपना मुँह धोने के लिये अपने हाथों में पानी भर सके।

पर जैसे ही उसके हाथ पानी की सतह को छुए तो वैसे ही उसके दोनों हाथों पर पानी दीवार के रूप में इधर उधर को बॅट गया और उसे नीचे जाने का एक रास्ता दिखायी दिया।

उस रास्ते के दोनों तरफ सुन्दर सुन्दर घर बने हुए था पेड़ लगे हुए थे। बागीचों में कई रंगों के फूल लगे हुए थे – लाल सफेद नीले।

यह देखने के लिये कि यह रास्ता कहॉ जाता है वह उस रास्ते पर चलने लगी। सैवैन्ती बाई ने सोच लिया था कि वह यह पता कर के ही रहेगी कि यह रास्ता कहॉ जाता है। वह

उस रास्ते पर चलती रही जब तक वह एक दरवाजे के सामने नहीं आ गयी।

उसने दरवाजा खोला तो उसने पाया कि वह एक बहुत सुन्दर बागीचे में खड़ी है। वैसा बागीचा तो इससे पहले कभी उसने देखा ही नहीं था।

वहाँ फलों से लदे लम्बे लम्बे पेड़ खड़े हुए थे। उनकी डालियों बहुत सारी चिड़ियें बैठी बैठी चहचहा रही थीं। इसके अलावा सारी जमीन पर फूल बिखरे पड़े थे और उनके ऊपर चमकीले रंग की तितलियाँ घूम रही थीं।

बागीचे के बीच में एक ऐसा पेड़ लगा था जो बाकी सब पेड़ों से अलग था। उसका तना चाँदी का था उसके पत्ते सोने के थे और उस पर मोतियों के गुच्छों के रूप में उसके फल लटक रहे थे।

उसकी हिलती हुई डालियों के बीच में एक नौजवान लड़की बैठी थी जो धरती की किसी भी लड़की से बहुत सुन्दर थी। वह अपने आप ही गा रही थी। जब उसने एक अजनबी को देखा तो उसके मुँह से एक छोटी सी चीख निकल गयी।

वह बोली — "ओह मेरे भगवान। आप यहाँ क्यों आयी हैं।"

सैवैन्ती बाई बोली — "ओ सुन्दरी। क्या मैं तुम्हें देखने नहीं आ सकती।"

लड़की बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं। पर अगर मेरे पिता आपको देख लेंगे तो वह आपको मार देंगे। मैं कोबरा की बेटी हॅू और उन्होंने यह बागीचा मेरे खेलने के लिये बनवाया है।

मैं यहॉ कई सालों से अकेले ही खेलती आयी हॅू क्योंकि वह मुझे किसी से मिलने नहीं देते। यहॉ तक कि अपनी जनता से भी नहीं। मैंने आपसे पहले यहॉ कभी किसी को नहीं देखा।"

सैवैन्ती बाई बोली — "कोई बात नहीं। मैं सैवैन्ती राजा हॅू। अब तुम डरो नहीं। वह खतरनाक कोबरा अब नहीं है।"

यह सुन कर वह लड़की खुश हो गयी कि उसके ऊपर अत्याचार करने वाला कोबरा अब मारा जा चुका है। उसने बताया कि उसका नाम हीरा बाई है और झील के नीचे जो कुछ भी है अब वह सब उसी का है।

फिर उसने सैवैन्ती बाई से कहा — "आप मेरे साथ ठहरिये। आप इस देश के राजा बन जायेंगे और मैं आपकी पत्नी।"

सैवैन्ती बाई बोली — "नहीं यह नहीं हो सकता क्योंकि मेरे राजा ने मुझे एक काम करने के लिये भेजा है। मुझे अपना वह काम पूरा करने के लिये अपनी यात्रा जारी रखनी पड़ेगी।

पर अगर तुम मुझे उतना ही प्यार करती हो जितना कि मैं तुम्हें करता हूँ तो तुम मेरे साथ मेरे देश चलो। वहाँ तुम मेरी पत्नी होगी।”

हीरा बाई बोली — “नहीं मेरे प्यारे। क्योंकि अगर मैं आपके साथ जाऊँगी सारे लोग मुझे देखेंगे कि मैं कितनी सुन्दर हूँ और वे आपको मार देंगे और मुझे एक दास की हैसियत से बेच देंगे। और इस तरह से मैं आपकी खुशकिस्मती की बजाय आपकी बदकिस्मती बन जाऊँगी।

पर मेरे प्यारे पति। आप यह एक सोने की बाँसुरी लें जब भी आप मुझसे मिलना चाहें या आपको मेरी कोई जरूरत हो तो बस जंगल जा कर इसे बजा दें। इसकी आवाज बन्द होने से पहले पहले मैं हाजिर हो जाऊँगी। पर इसको कभी शहर में नहीं बजाना और भीड़ में भी नहीं बजाना।”

कह कर उसने सैवैन्ती बाई को एक सोने की छोटी सी बाँसुरी दी। सैवैन्ती बाई ने उसे अपने कपड़ों में लपेट ली हीरा बाई से विदा ली और वहाँ से चली गयी।

जब वह माली के घर लौटी तो माली की पत्नी बोली — “अरे तुम कहाँ थे हम तो तुम्हारे बारे में चिन्तित थे। दो दिन से हमने तुम्हारे बारे में कुछ सुना ही नहीं। तुम कहाँ चले गये थे। हमको लगा कि तुम चले गये। तुम इतने दिनों तक कहाँ थे।”

सैवैन्ती बाई बोली — "बाजार में मेरा कुछ काम था।" क्योंकि वह माली की पत्नी को यह नहीं बताना चाहती थी कि वह झील के नीचे गयी थी। उसने आगे कहा — "अब तुम ज़रा यह पता लगाओ कि मैं राजा के वजीर से कब मिल सकता हूँ। यह जगह छोड़ने से पहले मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

यह सुन कर माली की पत्नी वहाँ से चली गयी। उसके जाने के बाद सैवैन्ती बाई झील के किनारे गयी और आदर के साथ कोबरा के शरीर को जलाया क्योंकि एक तो वह हीरा बाई का पिता था और वैसे भी वह एक पवित्र जानवर था।

अगले दिन माली की पत्नी जवाब लायी कि वह उससे फलाँ फलाँ समय पर मिल सकता था। सो वह जब वजीर से मिलने गया तो वजीर को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि यह नौजवान उससे क्यों मिलना चाहता है।

उसने उससे पूछा "तुम कौन हो और तुम्हारा मुझसे क्या काम है।"

तो उसने जवाब दिया — "मेरा नाम सैवैन्ती राजा है। मैं अपने राजा के किसी काम पर जा रहा था तो मैं इस शहर से गुजरा तो आपसे एक दोस्ताना मुलाकात के लिये आपके पास आ गया।"

अब वजीर कुछ नम्र हुआ और उसने सैवैन्ती बाई से देश के बारे में कुछ बातें कीं। उसने उसे राजा और उसके सपने के बारे में भी बताया।

सैवैन्ती बाई ने वजीर से पूछा — "आप क्या सोचते हैं कि जो कोई राजा को उसके सपने का पेड़ अगर दिखा देगा तो वह उसे क्या देंगे।"

वजीर बोला — "निश्चित रूप से वह अपनी बेटी की शादी उससे कर देंगे और उसे अपना आधा राज्य दे देंगे।"

सैवैन्ती बाई बोली — "तब आप अपने मालिक से जा कर कहिये कि मैं उन्हें उनके सपने में दिखायी देने वाला पेड़ दिखाने आया हूँ। अगर वह मुझे बुलवा लेंगे तो मैं उनको उनके सपने वाला पेड़ दिखा दूँगा। वह उसे एक रात देख सकते हैं पर वह उसे ले नहीं सकते।"

वजीर तुरन्त भागा भागा राजा के पास गया और यह खबर उसको सुनायी। अगले ही दिन वजीर राजा और उसके सब सरदार माली के घर पहुँच गये और कहा कि वह सैवैन्ती राजा की माँग पूरा करने के लिये तैयार था। और वह उस पेड़ को उसी रात देखना चाहता था।

सैवैन्ती बाई ने वजीर से वायदा किया कि अगर राजा अपने दरबार के साथ वहाँ आयेगा तो अपना सपना सच होता देखेगा।

उसके बाद उसने अपनी सोने की बाँसुरी उठायी और उसे जंगल जा कर बजाया। तुरन्त ही हीरा बाई वहाँ प्रगट हो गयी अपने चाँदी के पेड़ में झूलती हुई।

जब उसने सुना कि सैवैन्ती राजा उससे क्या चाहता था तो उसने उससे कहा कि वह राजा को ले कर वहाँ आ जाये तो राजा उसे देख सकेगा।

जब राजा वहाँ आया तब वह उस पेड़ को देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उसने देखा कि जंगल के बीच में एक महल खड़ा है जिसके हर आँगन में फव्वारे चल रहे हैं। सब कमरे हजारों जवाहरातों से बहुत सजे हुए हैं।

सब जगह दिन की सी रोशनी हो रही है। कोई धीमा धीमा मीठा मीठा संगीत बजा रहा है। हवा में खुशबू भरी पड़ी है। महल के बीच में एक चाँदी का पेड़ खड़ा है जिसकी पत्तियाँ सोने की है और फलों के रूप में मोतियों के गुच्छे लटक रहे हैं।

अगली सुबह सब कुछ गायब हो गया। पर राजा जो यह सब देख कर ऐसे खड़ा रह गया था जैसे किसी ने उसके ऊपर

जादू डाल दिया हो अपने वायदे पर डटा रहा। वह अपनी बेटी और आधा राज्य उसको देने के लिये राजी था।

वह सोच रहा था जो आदमी एक रात के लिये जंगल को स्वर्ग में बदल सकता है उसको तो मेरा दामाद बनने के लिये बहुत अमीर और अक्लमन्द होना चाहिये।

पर सैवैन्ती बाई ने कहा — "मैं अभी अपने राजा के काम पर निकला हूँ। पहले मैं वह काम कर लूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ कि जब मैं वह काम कर के लौटूँगा मैं इस शहर में कुछ दिन रहूँगा और तभी राजकुमारी से शादी करूँगा।"

सो उन्होंने उसे जाने की इजाज़त दी। राजा खुद और उसके सब बड़े बड़े लोग उसको अपने राज्य की सीमा तक छोड़ने गये। और वह अपने काम पर चला गया।

X X X X X X X

वजीर की बेटी फिर से अपने काम पर चली। फिर वह कुछ दिन चलती रही यहाँ तक कि वह देश भी काफी पीछे छूट गया पर क्योंकि उसे अभी तक राक्षस के देश का कोई अता पता ही नहीं मालूम हुआ था तो उसे इस मुश्किल में हीरा बाई की याद आयी।

उसने अपनी छोटी सुनहरी बाँसुरी बजायी तो हीरा बाई तुरन्त ही वहाँ प्रगट हो गयी और बोली — "प्रिय। मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूँ।"

सैवैन्ती बाई बोली — "ओ मेहरबान हीरा बाई। मैं इस जंगल में राक्षस के देश को ढूँढने के लिये ऐसे ही बहुत दिनों से घूमता फिर रहा हूँ जहाँ मेरे राजा ने मुझे जाने के लिये कहा है। क्या तुम वहाँ पहुँचने में मेरी सहायता कर सकती हो।"

हीरा बाई बोली — "आप वहाँ अकेले नहीं पहुँच सकते। उसके देश के चारों तरफ की यात्रा ही छह महीने की है जिसकी एक राक्षस रखवाली करता है।

बिना उसकी जानकारी के और इजाज़त के कोई चिड़िया भी उसके देश में पर नहीं मार सकती। कोई आदमी तो वहाँ जा ही नहीं सकता। दुनियाँ भर में जितने पेड़ लगे हुए हैं उनसे ज़्यादा राक्षस उस देश की रखवाली करते हैं। वे खुद तो अदृश्य हैं पर वे आपको देख सकते हैं। और देखते के साथ ही वे आपके चिथड़े कर देंगे।

खैर मैं आपको रास्ता दिखाऊँगी जिससे हो कर आप वहाँ पहुँच पायेंगे। यह लीजिये यह एक अँगूठी लीजिये। यह अँगूठी मेरे एक बहुत ही प्यारे दोस्त राक्षस की बेटी के राजा ने मुझे दी

थी। इसको पहन कर आप अदृश्य हो जायेंगे।" कह कर उसने एक अँगूठी सैवैन्ती बाई की उँगली में पहना दी।

"देखिये आप उस पहाड़ को देख रहे हैं न जिसकी नीली चोटी बादलों को छू रही है। आपको उस पर चढ़ना होगा क्योंकि वह राक्षस के राजा के राज्य की हद है। वहाँ जा कर अँगूठी के पत्थर को अपनी हथेली की तरफ पलट लीजियेगा।

तो जैसे ही आप अँगूठी का पत्थर पलटेंगे तो आप धरती में से नीचे जाते हुए नीचे पहुँच जायेंगे जहाँ राक्षसों का राजा अपना दरबार लगाता है। वहीं आपको राजकुमारी भी मिल जायेगी। उससे कहियेगा कि आप मेरे पति हैं। वह मेरे लिये आपकी सहायता जरूर करेगी।"

इतना कह कर हीरा बाई वहाँ से गायब हो गयी और सैवैन्ती बाई ने अपनी यात्रा जारी रखी जब तक वह पहाड़ की चोटी पर नहीं पहुँच गयी।

वहाँ जा कर जैसा उससे कहा गया था उसने अँगूठी का पत्थर अपनी हथेली की तरफ कर लिया। जैसे ही उसने यह किया तो वह धरती के नीचे की तरफ जाने लगी – नीचे और नीचे गहरे और गहरे। जब तक वह एक सुन्दर कमरे में नहीं पहुँच गयी।

कमरा बहुत कीमती चीज़ों से सजा हुआ था। चारों तरफ सोने के तारों से बने कपड़े लटक रहे थे। हर दिशा में जहाँ तक नजर जाती थी हजारों राक्षस थे। कमरे के बीच में हाथीदाँत और सोने का एक सिंहासन रख हुआ था। उस सिंहासन पर एक सबसे सुन्दर राजकुमारी बैठी हुई थी।

वह लम्बी थी और उसके चेहरे से ऐसा लग रहा था जैसे वह हुक्म चलाने के लिये ही बनी थी। उसके बाल लम्बी मोतियों की लड़ियों से बँधे हुए थे। उसकी पोशाक सोने के बारीक तारों से बुनी हुई थी। उसकी कमर में चमकीले हीरों से जड़ी करधनी पड़ी हुई थी। उसके गले और बाँहों में बहुत सारे जवाहरात चमक रहे थे।

पर इन सबसे ज़्यादा चमक रही थीं उसकी आँखें जिनमें शाही शान थी। वह सैवैन्ती बाई को देख सकी हालाँकि उसके नौकर उसको नहीं देख सके थे।

उसने पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ किसलिये आये हो।"

"मैं सैवैन्ती राजा हूँ हीरा बाई का पति। मैं यहाँ उसकी दी हुई अँगूठी की ताकत से आया हूँ जो आपने उनको दी थी।"

राक्षस राजकुमारी ने कहा — "तुम्हारा स्वागत है पर तुमको मालूम हो कि तुम्हारा यहाँ आना बहुत खतरे वाला है। क्योंकि

मेरे पिता ने जो पहरेदार मेरे चारों तरफ लगाये हैं वे तुम्हारे यहाँ आने के बारे में जानते हैं। वे तुम्हें तुरन्त ही मार देंगे और मुझमें तुमको बचाने की ताकत नहीं है। अब बताओ कि तुम यहाँ क्यों आये हो।"

सैवैन्ती बाई बोली — "मैं आपको देखने आया हूँ ओ सुन्दरी। आप मुझे अपना नाम बतायें और यह भी बतायें कि आप यहाँ अकेली कैसे हैं।"

"मैं राक्षसों के राजा की अकेली बेटी हूँ और मेरा नाम तारा बाई है। क्योंकि मेरे पिता मुझे बहुत प्यार करते हैं उन्होंने यह महल मेरे लिये बनवाया है और ये सब राक्षस मेरी सुरक्षा के लिये हजारों मील तक खड़े कर रखे हैं ताकि उनकी इजाज़त लिये बिना यहाँ कोई न आ सके।

सो उनका इतना बड़ा राज्य है। मैं तो उनको कभी कभी ही देखती हूँ। बल्कि मैंने तो उनको बरसों से नहीं देखा है। फिर भी तुम्हारी सुरक्षा की माँग के लिये मैं अब उनके पास जाऊँगी। क्योंकि हालाँकि मैंने पहले कभी कोई राजा या राजकुमार नहीं देखा पर तुम मुझे बहुत पसन्द हो।"

कह कर वह उठी और सैवैन्ती बाई को वहीं इन्तजार करने के लिये कह कर अपने पिता के दरबार की तरफ चल दी।

जब राक्षस राजा और रानी ने सुना कि उनकी बेटी उनसे मिलने आ रही है तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि क्या बात है हमारी बेटी आज हमसे मिलने क्यों आ रही है। क्या वह बीमार है या जो घर हमने उसको दे रखा है वह उसमें खुश नहीं है।

उन्होंने उससे पूछा — "बेटी तुम क्यों आना चाहती हो। क्या बात है।"

बेटी ने जवाब दिया — "मैं आपसे यह कहने के लिये आना चाहती हूँ कि मुझे अब शादी करनी है। क्या आप मेरे लिये कोई सुन्दर पति नहीं ढूँढ सकते।"

यह सुन कर राजा हँसा और बोला — "पर तुम तो अभी बच्ची हो। फिर भी तुम अगर अपने लिये पति चाहती हो तो अगर कोई राजकुमार यहाँ आता है और तुमसे शादी करना चाहता है तो हम उससे तुम्हारी शादी कर देंगे।"

बेटी बोली — "अगर सचमुच कोई बहादुर और सुन्दर राजकुमार आपके इतने कड़े पहरे से बच कर यहाँ आ जाता है तो क्या आप मेरे लिये उसकी रक्षा करेंगे। उसके टुकड़े टुकड़े नहीं करवा देंगे।"

राजा बोला — "अगर ऐसा कोई आ गया है तो वह सुरक्षित है।"

तारा बाई तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी। उसने तुरन्त ही अपने दरबार में से सैवैन्ती राजा को बुलवा भेजा और उसके आने पर अपने माता पिता से कहा “देखिये यह है सैवैन्ती राजा जिसके बारे में मैंने आपसे कहा था।”

राजा और रानी दोनों उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गये। वे यह सोच ही नहीं सके कि सैवैन्ती बाई इतने पहरे के बावजूद वहाँ आयी कैसे। उन्होंने सोचा कि शायद वह वहाँ आने के लिये जरूर ही बहुत बहादुर और अक्लमन्द होगा।

इसके अलावा सैवैन्ती बाई एक बहुत ही कुलीन राजकुमार लग रही थी तो उनको भी लग रहा था कि उनको हीरा बाई की शादी सैवैन्ती राजा से हो ही जानी चाहिये।

उन्होंने सैवैन्ती राजा से कहा — “हम चाहते हैं कि आप हमारे दामाद बन जायें क्योंकि आप बड़े अच्छे और सच्चे लग रहे हैं। इसके अलावा आप बहादुर भी हैं। जो कुछ हमारा है अब वह सब आपका है। बस आप इतना कीजियेगा कि हमारी बेटी की ठीक से देखभाल कीजियेगा।

और अगर आप किसी भी समय किसी भी वजह से आपस में नाखुश हों तो यहाँ वापस लौट आइयेगा यह घर आप ही का है। इस तरह बहुत खुशियों के साथ शादी की रस्में पूरी हुईं। शादी की खुशियाँ 12 दिनों तक चलीं।

हजारों राक्षस इस देश से उस देश से स्वर्ग से उत्तर से दक्षिण से पूर्व से पश्चिम से धरती और समुद्र के नीचे इस शादी में आये थे। बहुत सारे सिपाही अपने मालिक की बेटी की शादी में आये थे

राक्षस राजा और रानी ने तारा बाई को उसकी शादी में जो कीमती भेंटें दी थीं उनको गिनना तो नामुमकिन है। उन्होंने उसको इतने सारे जवाहरात – लाल हीरे पन्ना नीलम मोती, सोना चॉदी लटकाने वाला कीमती सामान ऐबोनी लकड़ी पर खुदे हुए काम की चीज़ें और हाथी दॉत दिया था कि उनसे समुद्र भर सकता था।

वह सामान भी इतना था कि किसी भी आदमी को उसको गिनने में **100** साल से ज़्यादा लगते। सौ ट्रिलियन तो उसने अपनी बेटी की सुरक्षा के लिये राक्षस दिये थे और हर राक्षस के पास भी बहुत सारे पैसे थे जितने कि एक घर में आ जायें।

इस तरह से उन दोनों ने राजा और रानी से विदा ली और राक्षसों का देश छोड़ दिया।

अब जब वे उस राजा के देश पहुॅचे जिसने चॉदी के पेड़ वाला सपना देखा था जिस पर सोने की पत्तियॉ थीं और मोतियों के फल लगे हुए थे तो क्योंकि उनके साथ तो बहुत सारे राक्षस

थे जो अगर सारे के सारे शहर में घुस जाते तो वे तो टिड्डी दल की तरह से सारा शहर ही खत्म कर देते।

सो सैवैन्ती बाई ने यह निश्चय किया कि तारा बाई अपने रक्षकों के साथ जंगल में ही रहे जहॉ उस राज्य की सीमा थी और सैवैन्ती बाई शहर के अन्दर जाये क्योंकि उसने वापस जाते समय उस राजा की बेटी से शादी करने का वायदा किया था। वहॉ वे एक हफ्ते रहे।

राजा ने अपनी बेटी की शादी सैवैन्ती बाई से बड़ी धूमधाम से की। जब उन्होंने उनका देश छोड़ा तो राजा ने सैवैन्ती बाई और अपनी बेटी को बहुत सारे ऊॅट घोड़े हाथी कीमती कपड़े जवाहरात दिये और राजा खुद और उसके दरबारी अपनी बेटी को विदा करने के लिये राज्य की सीमा तक गये।

वहॉ से वे लोग उस राजा के देश गये जिसने अपनी बेटी के लिये बहुत बढ़िया नहाने का घर बनवा रखा था और जिसको सैवैन्ती बाई ने छलॉग मार कर राजकुमारी की शादी की शर्त को पूरा किया था। वहॉ सैवैन्ती बाई ने उस राजकुमारी से शादी की। शादी बहुत धूमधाम से की गयी थी। शादी की खुशियॉ तीन दिन तक मनायी गयीं।

उस शहर को छोड़ कर सैवैन्ती बाई अब उस शहर में पहुॅची जिसके राजा के घोड़े को सैवैन्ती बाई ने पालतू बनाया

था। वहाँ भी उसने दो दिन बड़ी शान में बिताये। वहाँ भी उसने उस राजकुमारी से शादी की।

फिर अपनी पाँच पत्नियों के साथ यानी कोबरा राजा की बेटी हीरा बाई, राक्षसों के राजा की बेटी तारा बाई और तीन दूसरी राजकुमारियाँ और साथ में बहुत सारे नौकर चाकर हाथी घोड़े ऊँट आदि के साथ उस शहर में लौट आयी जहाँ वह पार्वती बाई को छोड़ कर गयी थी।

जब यह खबर सैवैन्ती बाई के मालिक राजा के पास पहुँची कि एक बहुत बड़ा कारवाँ शहर की तरफ आ रहा है तो राजा तो बहुत सावधान हो गया। उसने सैवैन्ती बाई को कोई अनजान राजा समझा और सोचा कि वह उससे लड़ने के लिये आ रहा है।

जब सैवैन्ती बाई को पता चला कि राजा उसको देख कर इतना परेशान है तो उसने तुरन्त ही एक तेज़ घोड़े पर अपना एक दूत भेजा — "आप परेशान न हों। यह तो आपका वफादार नौकर सैवैन्ती राजा है और आपका कहा काम करके लौट रहा है।"

यह सुन कर राजा का दिल कुछ हल्का हुआ। उसने तुरन्त ही सैवैन्ती राजा के स्वागत में शाही तोपें दागने के लिये कहा। वह खुद अपने दरबारियों को ले कर उसका स्वागत करने के

लिये बाहर गया। सारे लोग एक शाही जुलूस ले कर शहर के अन्दर घुसे।

सैवैन्ती बाई ने राजा से कहा — "आपने अपने नौकर को राक्षस के देश इसलिये भेजा था ताकि वह आपकी पत्नी के लिये सोने की एक साड़ी ले कर आ सके। देखिये मैंने वह कर दिया।"

ऐसा कह कर उसने राजा को पॉच राक्षसों के पास जो लटकाने वाले कपड़े और दूसरे कीमती कपड़ों के गट्ठर जिन पर जवाहरात जड़े हुए थे दे दिये। इसका मतलब है कि क्योंकि हर राक्षस के पास इतना सामान था जो एक घर भर देता सो उसने राजा को पॉच राक्षसों से उनका सामान ले कर राजा को दे दि दया।

वजीर को भी उसने दो गट्ठर दे दिये।

इसके बाद सैवैन्ती बाई ने जितने भी नौकर चाकर उसके साथ आये थे करीब करीब उन सबको विदा कर दिया ताकि वे सब इस देश में रह कर कहीं अकाल की हालत न पैदा कर दें। उसने उन सबको बहुत सारी कीमती भेंटें भी दीं।

उसने अपनी तीन पत्नियों को अपने और पार्वती बाई के साथ रहने के लिये रखा पर क्योंकि हीरा बाई और तारा बाई थोड़े ऊँचे तबके की थीं और बहुत सुन्दर थीं वे जंगल में अपने

महल में ही रहीं। इसके बारे में केवल सैवैन्ती बाई को ही पता था और किसी को नहीं।

अबकी बार जब राजा की छोटी बेटी ने सैवैन्ती बाई को देखा तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी मुझे नहीं लगता कि सैवैन्ती राजा जैसा बहादुर कोई नौजवान है। किसी और से शादी करने की बजाय मैं सैवैन्ती राजा से शादी करना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

राजा बोला — "बेटी मेरी भी इच्छा यही है कि तुम सैवैन्ती राजा से शादी कर लो।"

सो यह तय हो गया कि राजकुमारी सैवैन्ती राजा से शादी कर ले। यह सुन कर सैवैन्ती बाई ने राजा से कहा — "मैं आपकी बेटी से शादी करने के लिये तैयार तो हूँ पर हमको यह शादी बहुत ही शानदार चाहिये सो आप मुझे कुछ समय दें ताकि हम आसपास के सब राजाओं को उसमें बुला सकें।

राजा इस बात पर राजी हो गया।

इन्हीं दिनों एक दिन सैवैन्ती बाई ने पार्वती बाई को रोते हुए देखा तो उससे पूछा — "बहिन। क्या बात है तुम क्यों रोती हो।"

पार्वती बाई बोली — "बहिन। तुमने हमको हमारी मुश्किलों से निकाल लिया है। हमें बहुत इज़्ज़त और ओहदा दिया है।

परन्तु मैं खुश नहीं हूँ क्योंकि मैं अपने पति को अपने दिमाग से नहीं निकाल पा रही। पता नहीं वह किस हालत में हैं और कहाँ कहाँ घूम रहे होंगे। क्या पता भीख माँग रहे हों। मुझे उन्हें देखने की बहुत इच्छा है।"

यह सुन कर सैवैन्ती बाई बोली — "अब तुम खुश हो जाओ। रोओ नहीं। उन स्त्रियों के बारे में सोचो जिनको यही पता नहीं है कि मैं सैवैन्ती राजा नहीं हूँ बल्कि सैवैन्ती बाई हूँ। तुम ठीक से रहो मैं तुम्हारे पति को तुम्हारे लिये ढूँढने की पूरी कोशिश करूँगी।"

सो सैवैन्ती बाई हीरा बाई से मिलने के लिये जंगल वाले महल में गयी और उससे बोली — "मेरा एक दोस्त है जिसे मैंने तबसे नहीं देखा है जबसे यानी करीब 12 साल से वह कुछ पागल सा हुआ है। इसी पागलपन में वह एक फकीर का वेश बना कर घर छोड़ कर भाग गया था।

मुझे उसे देखने की बड़ी इच्छा है अगर वह कहीं ज़िन्दा है तो। मैं उसका पता कैसे लगाऊँ।"

हीरा बाई एक बहुत ही अक्लमन्द राजकुमारी थी। वह बोली — "आपका सबसे अच्छा प्लान यह रहेगा कि आप गरीबों के लिये एक दावत का इन्तजाम करें और यह खबर देश

के हर हिस्से में फैला दें कि यह दावत आप भगवान ने जो कुछ आपको दिया है उसको धन्यवाद के रूप में दे रहे हैं।

सब जगहों से गरीब लोग आयेंगे तो उसमें शायद आपका दोस्त भी आपको दिखायी दे जाये।"

सैवैन्ती बाई ने वही किया जो हीरा बाई ने उसको करने के लिये कहा था। उसने जंगल में ही दो बड़ी बड़ी मेजें लगवा दीं। अब वहाँ जितने भी गरीब आते थे सबको खाना खिलाया जाता था।

सैवैन्ती बाई और पार्वती बाई दोनों उन लम्बी लम्बी कतारों के बीच यह दिखाने के लिये घूमते थे कि वे लोग ठीक से खाना खा रहे हैं या नहीं पर वास्तव में वे लोगदास को देखने के लिये घूमते थे। यह सब छह महीनों तक चलता रहा।

एक दिन जब सैवैन्ती बाई अपना रोज का चक्कर लगा रही थी कि उसने एक बड़ा बदकिस्मत जंगली सा आदमी देखा। वह बिल्कुल काला था। उसके बाल उलझे हुए थे। पतला सा झुर्री पड़ा चेहरा था और उसके हाथ में लकड़ी का एक कटोरा था जैसा कि फकीर लोग भीख माँगने के लिये लिये हुए घूमते हैं।

सैवैन्ती बाई ने पार्वती बाई को छुआ और कहा — "देखो वह है तुम्हारा पति।"

जब पार्वती बाई ने उधर देखा तो देखा कि वह तो वाकई उसका पति था। उसकी यह हालत देख कर वह रो पड़ी। उसकी हालत बहुत बिगड़ी हुई थी। इस हालत में उसे पहचानना बहुत मुश्किल था।

सैवैन्ती बाई बोली — "रोओ नहीं। तुम जल्दी से घर चली जाओ मैं यहाँ सब देख लूँगी।"

जब पार्वती बाई घर चली गयी तो उसने एक पहरेदार को बुलाया और लोगदास की तरफ इशारा करते हुए बोली — "जाओ उसे पकड़ लो और जेल में डाल दो।"

लोगदास राजा ने पूछा — "तुम लोग मुझे क्यों पकड़ रहे हो। मैंने तो किसी को कोई तकलीफ नहीं पहुँचायी है।"

पर सैवैन्ती बाई ने उनसे कहा कि उसकी कोई बात सुनने की जरूरत नहीं है बल्कि उसको जेल तुरन्त ही ले जाओ क्योंकि वह लोगों को यह सोचने का कोई मौका देना नहीं चाहती थी कि वह खुद उसमें रुचि क्यों दिखा रही थी। सो एक पहरेदार उसको अपने साथ ताले में बन्द करने के लिये ले गया।

बेचारा लोगदास यही सोचता रह गया कि "यह कैसा नीच राजा है जिसने मुझे बिना किसी कुसूर के बन्द कर लिया। मैंने किसी को नुकसान नहीं पहुँचाया मैंने किसी से लड़ाई नहीं की मैंने किसी के घर में डाका नहीं डाला। मैंने तो ये **12** साल भी

एक बदकिस्मत भिखारी की तरह से भीख माँग कर बिताये हैं।”

क्योंकि उसने तो किसी को यह बताया ही नहीं था कि वह एक राजा का बेटा है क्योंकि उसको मालूम था कि यह सुन कर लोग तो उस पर हँसेंगे ही।

वे बोले — “तुमको हमारे राजा को नीच कहने का कोई मतलब नहीं है। यह तो तुम हो जो बदकिस्मत हो न कि वह। वह निश्चित रूप से तुम्हारा सिर कटवा देगा।”

जब उन्होंने उस भिखारी को जेल में डाल दिया तो उसने फिर से उनसे विनती की कि वह उनसे जा कर पूछे कि अब उसके साथ क्या किया जायेगा।

वे बोले — “हमें लगता है कि तुमको कल सुबह सवेरे ही गले में फन्दा डाल कर मार दिया जायेगा। अगर तुम और अच्छी तरह से मरना चाहते हो तो महल के सामने मरो।”

जब सैवैन्ती बाई घर चली गयी तो वहाँ से उसने नौकरों के कुछ सरदारों को बुलवाया और उनसे कहा — “जाओ जल्दी से जेल जाओ ओर पहरेदार से कहना कि वह तुम्हें वह फकीर दे देगा जिसको मैंने आज सुबह ही जेल में भिजवाया है। उसको एक पालकी में बिठा कर तुरन्त ही यहाँ ले आओ। पर ज़रा ध्यान रखना कि वह कहीं बच कर न निकल जाये।

उसके बाद उसको महल के किसी दूसरे हिस्से में उसे बन्द कर देना। वहाँ उसके लिये एक नाई बुलवा कर उसके बाल कटवाना और दाढ़ी बनवाना। उसको नहलाना धुलाना नये कपड़े पहनाना और उसे सबसे अच्छा खाना खिलाना।"

ऐसा व्यवहार पा कर लोगदास अपने लोगों से बोला — "देखा राजा मेरे साथ कितना अच्छा व्यवहार कर रहा है। मुझे यकीन है कि इस सबके बाद राजा मुझे फाँसी पर नहीं लटकायेगा।"

वे बोले — "डरो नहीं। जब हम तुम्हें कपड़े पहना कर बढ़िया बना देंगे तब तुम लटके हुए देखने में पहले से कहीं बहुत अच्छे लगोगे।" इस तरह से वे बेचारे गरीब आदमी को परेशान और दुखी करते रहे।

इसके बाद सैवैन्ती बाई ने सबसे अच्छे डाक्टरों को बुला भेजा और उनसे कहा — "अगर कोई राजा 12 साल तक जंगल जंगल घूमता फिरे जब तक कि उसकी सारी शाही शान न खत्म हो जाये तो उसमें फिर से शाही शान लाने के लिये कितना समय लगेगा।"

वे बोले — "अगर उस आदमी की ठीक से देखभाल की जाये तो छह महीने बाद वह राजा लगने लगेगा।"

सैवेन्ती बाई बोली — “मेरा एक दोस्त है जो आजकल महल में है उसका कुछ ऐसा ही मामला है। तो उसको आप लोग ले लें और उसका आज ही से इलाज शुरू कर दें। छह महीने बाद मैं आशा करती हूँ कि उसके चेहरे की शानो शौकत वापस आ जायेगी।

इस तरह लोगदास डाक्टरों की देखभाल में रख दिया गया। पर इस सारे समय उसको यही पता नहीं चला कि सैवैन्ती बाई कौन थी और उसके साथ इस तरह का व्यवहार क्यों किया जा रहा था। सैवैन्ती बाई रोज उसके पास जाती उससे बात करती।

यह सब देख कर लोगदास अपने आसपास के लोगों से कहता — “देखा ओ भले लोगों। राजा कितना अच्छा है। वह मुझे रोज देखने आता है। वह मेरे बारे में अच्छे के सिवाय और कुछ सोच ही नहीं सकता।”

तो वे लोग जवाब देते — “जल्दी मत करो। कोई भी आदमी राजा के दिल में क्या है यह नहीं बता सकता। यह सब देरी इसलिये हो रही है कि बाद में तो उसे तुम्हें मार ही देना है।” इस तरह कह कह कर वे उससे आनन्द लिया करते।

एक दिन सैवैन्ती बाई कुछ ज़्यादा ही दयावान थी तो लोगदास ने यह भॉप कर कहा — “अब मैं राजा के इरादों से

नहीं डरता। क्या तुम लोगों ने देखा नहीं कि आज वह मुझसे कितनी अच्छी तरह से बात कर रहा था।

उसके रखवाले बोले — "इसमें कोई शक नहीं कि इसमें उसे बहुत अच्छा लगता है पर यह कहना बहुत मुश्किल है कि वह तुम्हारी वजह से ऐसा था। वह बस तुम्हारे साथ ऐसे ही खेल रहा था जैसे बिल्ली चूहे के साथ खेलती है बाद में तो वह उसे खा ही जाती है। तीन महीने बाद राजा का जन्म दिन है। हमें लगता है कि तुम्हें मारने के लिये वह उसी दिन का इन्तजार कर रहा है।"

और इस तरह से समय गुजरता रहा।

सैवैन्ती बाई की राजा की बेटी से शादी सैवेन्ती बाई के जन्म दिन ही की तय की गयी थी।

इस मौके की बड़े ज़ोर शोर से तैयारियॉ हो रही थी। शहर की दीवार के बाहर की जमीन पर सोने के तारों से बुने हुए कपड़ों के तम्बू गाड़े गये थे। बारह मील लम्बी और बारह मील चौड़ी जगह पड़ोसी देशों के राजाओं के ठहरने के लिये तय की गयी थी।

और इस सबके बीच में था एक अलग खास किस्म का तम्बू लगाया गया जो जवाहरातों से जड़ा हुआ था और सोने का

मन्दिर लग रहा था। यह तम्बू बाकी सारे तम्बुओं से बड़ा भी था। इसी तम्बू में सबको इकट्ठा होना था।

एक दिन सैवेन्ती बाई ने पार्वती बाई से कहा — "अपने जन्म दिन के दिन मैं तुम्हें तुम्हारे पति से मिलवा दूँगी।"

पर पार्वती बाई दुखी थी। वह बोली — "पर मैं उनके बारे में सोच भी नहीं सकती। यह सोचना कितना खराब लगता है कि मेरा इतना सुन्दर पति वह अभागा फकीर था।"

सैवेन्ती बाई मुस्कुरायी और बोली — "वास्तव में तुम जब उससे दोबारा मिलोगी तब तुम उसको बदला हुआ पाओगी वैसा फ़कीर नहीं जैसा कि तुमने उसे उस दिन देखा था बल्कि उससे भी कहीं बहुत अच्छा पाओगी। आराम और देखभाल आदमी को कितना बदल देती है यह तुम सोच भी नहीं सकतीं। यह तुमको अब पता चलेगा।

पर वह यह नहीं जानता कि हम कौन हैं और क्योंकि तुम मेरी खुशी चाहती हो इसलिये किसी से कहना नहीं कि मैं राजा नहीं हूँ।"

"प्यारी बहिन। नहीं मैं किसी से नहीं कहूँगी। मैं तुम्हें किसी तरह दुखी नहीं करूँगी। तुमने मेरे लिये कितना किया है। केवल तुम्हारी वजह से ही हम 12 साल से बहिनों की तरह से खुशी से रहते चले आ रहे हैं। और मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे

जितनी अक्लमन्द स्त्री इस दुनियॉ में पहले कभी पैदा भी हुई हो।"

दूसरे बुलाये गये मेहमानों के अलावा सियू राजा उसकी पत्नी और उनका वजीर, यानी सैवैन्ती बाई के पिता, और उनकी पत्नी को भी बुलाया गया था।

सैवैन्ती बाई ने उन सबके लिये सोने और हाथीदॉत के सिंहासनों का इन्तजाम किया था जिनमे लाल पन्ने हीरे जड़े हुए थे। उसने कहा कि उसके बॉयी तरफ वाली इज़्ज़त वाली कुरसियों में उसके पिता वजीर और मॉ के सिंहासन रखे जायें। और उसके बाद सियू राजा और उनकी पत्नी के सिंहासन रखे जायें। और उनके बाद बाकी सब राजाओं के सिंहासन रखे जायें।

सारे राजा और रानी यह आश्चर्य कर रहे थे कि इज़्ज़त की जगह तो अजनबी वजीर को मिलनी चाहिये थी।

सैवैन्ती बाई ने अपनी सबसे ज़्यादा कीमती पोशाक निकाली और कहा कि लोगदास को यह पोशाक पहनायी जाये और उसे तम्बू तक लाया जाये।

उस दिन उसने अपने आदमियों वाले कपड़े उतारे जो वह अब तक पहनती चली आ रही थी और साड़ी पहनी। जब

उसने साड़ी पहन ली तो वह तो इतनी सुन्दर लग रही थी जितनी कि पहले राजा के रूप में भी सुन्दर नहीं लग रही थी।

वह पार्वती बाई को आगे कर के तम्बू की तरफ चली। उनके साथ हीरा बाई और तारा बाई भी थे। तीनों दूसरी राजकुमारियाँ भी कीमती पोशाक पहने थीं।

तब राजा और रानी के सामने वह लोगदास के पैरों पर गिर कर बोली — "मैं आपकी सच्ची पत्नी हूँ। क्या आप भूल गये जब आप मुझे पार्वती बाई के साथ **12** साल पहले जंगल में छोड़ कर चले गये थे। देखिये वह यहाँ हैं।

ये कीमती जवाहरात देखिये सोने के तम्बू देखिये सजावट की चीज़ें देखिये। ये हाथी घोड़े ऊँट नौकर चाकर और सम्पत्ति देखिये। ये सब आपका है क्योंकि मैं आपकी हूँ। यह मैंने सब आप ही के लिये इकट्ठा किया है।"

यह देख सुन कर लोगदास तो खुशी के मारे रो पड़ा। सियू राजा अपने सिंहासन से उठा और सैवेन्ती बाई को चूमा और कहा — "मेरी कुलीन बच्ची। तूने मेरे बेटे को एक दुख के समय में बचाया है और दुनियाँ की किसी भी स्त्री से ज़्यादा अक्लमन्दी से काम किया है। भगवान करे तुझे हमेशा खूब इज़्ज़त मिले और खुशियाँ मिलें।"

वहाँ जितने भी राजा और रानी बैठे हुए थे यह सुन कर बहुत ही ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गये। वे आपस में कहने लागे — "क्या कभी किसी ने किसी लड़की को इतनी बहादुरी का काम करते देखा है।

पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य तो सैवैन्ती बाई के राजा को जिसकी बेटी की शादी सैवैन्ती राजा से उस दिन होने वाली थी यह देख कर हो रहा था कि जिसने **12** साल तक कितने अच्छे तरीके से उसका राज काज सँभाला हुआ था वह एक स्त्री थी।

सो फिर यह तय हुआ कि लोगदास राजा अपनी दोनों पत्नियों यानी सैवैन्ती बाई और पार्वती बाई के साथ दोबारा शादी करे। इसके अलावा वह और दूसरी छहों राजकुमारियों से भी शादी करे – उसकी अपनी बेटी से हीरा बाई तारा बाई से और बाकी की तीनों राजकुमारियों से भी। और इसके बाद अपने घर लौट जाये।

बड़ी धूमधाम से छहों की शादियाँ हो गयीं। जो कुछ भी किसी ने उस दिन देखा उसको शब्दों में बताना बहुत मुश्किल है। उसके बाद लोगदास अपनी आठों पत्नियों अपने माता पिता और वजीर और उसकी पत्नी के साथ अपने पिता के राज्य चला गया। वहाँ वे सब खुशी से रहने लगे।

जैसे वे सब खुशी से रहे उसी तरह से जो यह कहानी पढ़े वह भी खुशी से रहे।

4 सच की जीत[14]

यह सैंकड़ों साल पुरानी बात है कि किसी जगह एक राजा रहता था। उसके 12 पत्नियाँ थीं पर उनमें से किसी से उसके कोई बच्चा नहीं था। हालाँकि उसने भगवान से बहुत प्रार्थना की बहुत सारे मन्दिरों में भेंटें चढ़ायीं पर उसके कोई बच्चा नहीं हुआ – न तो कोई बेटा और न ही कोई बेटी।

इस राजा का एक बूढ़ा वजीर था वह बहुत अक्लमन्द और विद्वान था। एक दिन ऐसा हुआ कि यह राजा अपने वजीर और दरबारियों के साथ अपने राज्य में किसी दूर जगह घूम रहा था कि वह एक बहुत बड़े बागीचे की तरफ निकल आया।

जब वह उसको तारीफ की नजरों से देखता हुआ इधर उधर घूम रहा था तो वह वहाँ लगे एक छोटे से पेड़ को देखता ही रह गया। वह एक बैंगन का छोटा सा पेड़ था जो दो फीट से ज़्यादा ऊँचा नहीं था। उसमें पत्ती तो कोई नहीं थी पर उसके ऊपर 101 बैंगन लगे हुए थे। राजा उन बैंगनों को गिनने के लिये रुक गया।

उसको देख कर राजा ने वजीर से कहा — “ये तो गिने ही नहीं जा रहे हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इस पेड़ के

14 Truth’s Triumph. (Tale No 4)

ऊपर पत्ता तो एक भी नहीं है और बैंगन इसके ऊपर 101 हैं। तुम तो एक अक्लमन्द आदमी हो। क्या तुम बता सकते हो कि इसका क्या मतलब है।”

वजीर बोला — “सरकार। मुझे तो इसका एक ही मतलब समझ में आता है। पर अगर मैं वह आपको बताऊँगा तो शायद आप विश्वास नहीं करेंगे। पहले आप मुझसे वायदा कीजिये कि जो कुछ मैं आपको बताऊँगा उसको सुन कर आप मुझे मरवा नहीं देंगे।”

राजा ने इस बात का वायदा किया और वजीर आगे बोला — “इस छोटे से बैंगन के पेड़ का जिस पर 101 बैंगन लगे हुए हैं इसका मतलब यह है कि जो कोई भी इस बागीचे के माली की बेटी की शादी करेगा उसके 101 बच्चे होंगे – 100 बेटे और एक बेटी।”

राजा बोला — “इस माली की बेटी को कहाँ देखा जा सकता है।”

वजीर बोला — “जब आप और आपके दरबारी जैसे बड़े लोग ऐसे एक छोटे से गाँव में आते हैं तो गरीब लोग और उनके बच्चे डर जाते हैं और भाग कर छिप जाते हैं। इसलिये आप जब तक यहाँ हैं आपको वह दिखायी नहीं देगी।

उसको देखने के लिये आपको अपने ये सब लोग यहाँ से वापस भेज देने होंगे और यह घोषणा करवानी पड़ेगी कि आप यहाँ से चले गये हैं। उसके बाद आप यहाँ रोज घूमने आइये तो मुझे यकीन है किसी सुबह आप सुन्दर गूजर बाई को देख पायेंगे।"

राजा ने वजीर की इस सलाह पर तुरन्त ही काम किया। एक दिन जब राजा सुबह को उस बागीचे में घूम रहा था तो उसने माली की **12** साल की नौजवान बेटी को देखा। वह वहाँ फूल इकट्ठा कर रही थी।

वह उसके पास उसकी सहायता करने पहुँच गया पर यह देख कर कि वह उसके गाँव का आदमी नहीं था बल्कि एक अजनबी था वह शर्मा कर वहाँ से अपने घर भाग गयी।

राजा ने उसका पीछा किया क्योंकि वह उसकी सुन्दरता और शान से बहुत प्रभावित था। वास्तव में तो जैसे ही उसने उसे देखा था वह उससे प्यार करने लगा था। वह सोच रहा था कि उसने अभी तक किसी भी राजा की बेटी इससे आधी भी सुन्दर नहीं देखी थी।

उसका पीछा करते करते वह माली के घर तक जा पहुँचा। दरवाजा बन्द था। सो उसने माली के घर का दरवाजा खटखटाया – "ओ भले माली। मैं अन्दर आना चाहता हूँ।

दरवाजा खोलो और मुझे अन्दर आने दो। मैं इस देश का राजा हूँ और मैं तुम्हारी बेटी से शादी करना चाहता हूँ।"

माली हँसा और बोला — "आपने एक सीधेसादे आदमी के लिये बहुत ही सुन्दर कहानी रची है। आप राजा नहीं हैं राजा तो यहाँ से मीलों दूर हैं। अच्छा हो आप अपने घर चले जायें क्योंकि यहाँ आपका कोई स्वागत नहीं होगा।"

पर राजा ने भी पीछा नहीं छोड़ा वह पुकारता ही रहा पुकारता ही रहा जब तक कि माली ने दरवाजा नहीं खोल दिया। दरवाजा खोलने पर तो वह आश्चर्य में पड़ गया। वह आदमी तो सचमुच में ही राजा था। तब उसने पूछा कि वह उसके लिये क्या कर सकता है।

राजा सीधे सीधे बोला — "मैं तुम्हारी बेटी गूजर बाई से शादी करना चाहता हूँ।"

माली घबरा कर बोला — "नहीं नहीं। यह मजाक नहीं चलेगा। कोई राजकुमार यहाँ नहीं आ सकता। आप सोच सकते हैं कि आप बहुत बड़े राजा हैं और मैं गरीब माली हूँ इसलिये मैं आपकी बात तुरन्त ही मान जाऊँगा पर मैं आपको बता रहा हूँ कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

चाहे आप सारी धरती के राजा ही क्यों न होते मैं आपको यहाँ आने की और अपनी बेटी से बात करने का आनन्द ले कर

बाद में उसका दिल तोड़ने की इजाज़त किसी हाल में नहीं दे सकता।"

राजा ने बड़ी नम्रता से कहा — "ओ भले आदमी। तुम मुझे गलत समझ रहे हो। जो मैं कह रहा हूँ वही मेरा मतलब भी है। मैं तुम्हारी बेटी से शादी करना चाहता हूँ।"

माली कुछ गुस्सा होते हुए बोला — "आप मुझे यह मत समझियेगा कि आप मुझे बेवकूफ बना लेंगे क्योंकि मैं एक गरीब माली हूँ और आपकी हर उस बात पर भरोसा कर लूँगा जो भी अच्छी बात आप मुझसे कहेंगे क्योंकि आप एक बड़े राजा हैं।

चाहे आप राजा हों या न हों मेरे लिये तो दोनों एक जैसे हैं। अगर आपका वही मतलब है जो आप कह रहे हैं अगर आपको मेरी बेटी की परवाह है और आप उससे शादी करना चाहते हैं तो आइये और उससे शादी कीजिये।

मुझे आपका कोई बनावटी रूप नहीं चाहिये इसके अलावा दरबार की रस्में मेरी समझ में नहीं आतीं सो लड़की की शादी उसके पिता के घर में उसके घर की छत के नीचे होने दें।

हमको अपने पुराने दोस्त और जानने वालों को इस शादी में आने की इजाज़त दें जिनको हम ज़िन्दगी भर से जानते हैं और आपसे पहले से जानते हैं।"

राजा माली से यह सुन कर गुस्सा होने की बजाय खुश हो गया कि उसने किस साफ तरीके से उससे बात की थी। उसको बड़ा आनन्द आया। उसने उसको वह सब कुछ करने की इजाज़त दे दी जो वह चाहता था।

गॉव की सुन्दर गूजर बाई बहुत धूमधाम से राजा के साथ ब्याही गयी पर अपने गॉव के तरीके से। शादी के बाद राजा उसके रोते हुए माता पिता और सहेलियों के बीच से उसको अपने महल ले आया।

राजा की पहली **12** रानियॉ इस नयी लड़की के आ जाने से बिल्कुल खुश नहीं थीं। उन्होंने आपस में तय किया कि गूजर बाई को अपने साथ मिला लेना उनकी शान के बिल्कुल खिलाफ होगा।

और राजा यानी उनके पति ने एक माली की बेटी से शादी कर के उनका ऐसा अपमान किया है जिसकी कोई माफी नहीं है। इसलिये जैसे ही उनको पहला मौका मिलेगा वह इस अपमान का बदला जरूर लेंगी।

यह इरादा कर के वे गूजर बाई को बहुत तंग करने लगीं और इतना तंग किया कि राजा को उसके उसका अपना एक अलग महल बनवाना पड़ा। वहॉ वह खुशी से बहुत थोड़े समय के लिये ही रह पायी थी कि...

एक दिन राजा को अपने राज्य के किसी दूर के हिस्से में जाना पड़ा लेकिन वह डर रहा था कि उसकी बड़ी रानियाँ गूजर बाई को उसके पीछे तंग न करें उसने गूजर बाई को एक छोटी से सोने की घंटी दी और उससे कहा —

"मेरे पीछे अगर तुमको कोई मुश्किल हो या फिर तुम्हारे साथ कोई बेरहमी का बर्ताव करे तो यह घंटी बजा देना। मैं जहाँ भी होऊँगा इसे सुन लूँगा और तुम्हारी सहायता के लिये तुरन्त आ जाऊँगा।"

जैसे ही राजा चला गया गूजर बाई ने उसकी ताकत जाँचने की सोचा क्योंकि उसको विश्वास ही नहीं था कि इतनी छोटी सी सोने की घंटी की आवाज राजा इतनी दूर से कैसे सुन सकता है और अगर सुन भी ली तो आ कैसे सकता है।

सो उसने वह घंटी बजा दी और लो राजा तो वहाँ तुरन्त ही आ गया। उसने पूछा — "क्या बात है। तुमने मुझे क्यों बुलाया।"

वह बोली — "कुछ नहीं। मैंने अपनी बेवकूफी में यह घंटी बजा दी थी। असल में जो आपने कहा था मुझे उस पर विश्वास ही नहीं हुआ सो मैंने सोचा कि मैं इसकी जाँच कर लूँ।"

राजा बोला — "अब तो तुम्हें विश्वास हो गया।" कह कर राजा अपने काम पर चला गया।

उसने दोबारा घंटी बजायी तो राजा फिर से वहाँ तुरन्त ही आ गया। अबकी बार वह बोली — "मुझे माफ कर दीजिये। यह मेरी गलती है कि मैंने आप पर विश्वास नहीं किया। पर मुझे तो यह पता ही नहीं था कि आप इतनी दूर से भी लौट आयेंगे।"

राजा बोला — "ठीक है। कोई बात नहीं। पर अब ध्यान रखना अब इसके बाद इसको जाँचने की कोई जरूरत नहीं है कह कर राजा फिर चला गया।

गूजर बाई ने तीसरी बार घंटी बजा दी। राजा फिर वहाँ आ गया और इस बार ज़रा गुस्से से बोला — "अबकी बार तुमने घंटी क्यों बजायी।" और राजा फिर से तीसरी बार वापस चला गया।

राजा के जाने के बाद एक बार फिर गूजर बाई ने घंटी बजा दी। राजा फिर आ गया। पूछने पर गूजर बाई डरते हुए बोली — "मुझे नहीं मालूम। मुझे माफ कर दीजिये मुझे नहीं मालूम क्यों पर मुझे ऐसा लगा जैसे मैं बहुत डर रही हूँ।"

"क्या मेरी किसी रानी ने तुम्हारे साथ कुछ बुरा व्यवहार किया।"

वह बोली — "नहीं किसी ने भी नहीं। सच तो यह है कि मैंने किसी को देखा ही नहीं।"

राजा ने उसे उसके बालों पर हाथ फेरते हुए झिड़का — "तुम बहुत ही बेवकूफ लड़की हो। राज्य के काम से मुझे इधर उधर जाना पड़ता है। जब तक में वापस आता हूॅ तब तक तुम अपना दिल मजबूत कर के यहॉ रहो।" कह कर वह चौथी बार वापस चला गया।

कुछ समय बाद गूजर बाई ने एक सौ एक बच्चों को जन्म दिया जिनमें **100** बेटे थे और एक बेटी थी। जब राजा की **12** बड़ी रानियों ने यह सुना तो उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा — "माली की बेटी गूजर बाई तो अब हमसे बहुत ऊॅची हो जायेगी। उसके पास ज़्यादा ताकत आ जायेगी क्योंकि अब तो वह राज्य के वारिस की मॉ है।

क्यों न हम इन बच्चों को मार दें और राजा से कह दें कि यह तो डायन है यह अपने बच्चों को खुद ही खा गयी। इससे राजा इसको फिर प्यार नहीं करेगा और हमारे लिये उसका पुराना प्यार फिर से लौट आयेगा।"

यह सोच कर वे गूजर बाई के महल की तरफ चल दीं। जब गूजर बाई ने उन्हें अपने महल की तरफ आते देखा तो वह डर गयी। उसको लगा कि शायद वे उसे कुछ नुकसान पहॅुचाने आ रही हैं। सो उसने जल्दी से अपनी सोने की घंटी उठायी

और उसे बजाती रही बजाती रही बजाती रही। पर राजा नहीं आया।

असल में उसने पहले ही उसको कई बार बेकार में ही बुला लिया था कि उसको यह विश्वास ही नहीं हुआ कि उसको सहायता चाहिये थी। बेचारी लड़की अब अपने दुश्मनों के कब्जे में थी।

इन बच्चों की देखभाल करने वाली उन 12 रानियों की एक पुरानी नौकरानी थी। साथ में वह नीच भी बहुत थी। वह वह हर काम करने के लिये तैयार थी जो उसकी पुरानी मालकिनें 12 रानियाँ उससे कहतीं।

इसलिये जब उन्होंने उससे पूछा कि "क्या तुम इन्हें मार सकती हो?"

तो वह बोली — "इससे आसान काम तो कोई है ही नहीं। मैं इनको महल के पीछे जो रेत का ढेर पड़ा है वहाँ फेंक दूँगी जहाँ इनको चूहे बाज़ और गिद्ध खा जायेंगे। कल सुबह तक इनका निशान भी वहाँ नहीं मिलेगा।"

रानियों ने कहा — "तब ठीक है। ऐसा ही करो।"

ऐस कह कर बारहों रानियों ने उनके पालनों में बड़े बड़े पत्थर रख दिये और गूजर बाई से कहा — "ओ नीच जादूगरनी। अब आगे से राजा पर तेरी कोई चाल नहीं चलेगी।

देख तेरे सारे बच्चे पत्थर बन गये हैं। देख अपने सुन्दर बच्चों को देख।" कह कर उन्होंने वे सारे पत्थर नीचे फर्श पर एक ढेर बना कर डाल दिये।

गूजर बाई ने जब यह देखा तो वह रोने लगी क्योंकि उसे मालूम था कि यह सच नहीं था पर वह बेचारी अकेली उन **13** स्त्रियों के सामने क्या कर सकती थी।

जब राजा वापस लौट कर आया तो बारहों रानियों ने गूजर बाई के ऊपर इलजाम लगाया कि गूजर बाई एक जादूगरनी है। और आया ने भी यह कहा कि **101** बच्चे जो उसकी देखभाल में थे उनको इसने पत्थरों में बदल दिया है।

राजा ने गूजर बाई की बजाय इन लोगों का विश्वास किया और गूजर बाई को उम्र कैद की सजा दे दी।

इस बीच एक बड़ी चुहिया ने रोने की आवाज सुनी तो वह दया कर के उन सब बच्चों को एक एक कर के अपने बिल में खींच ले गयी ताकि चिड़ियें और गिद्ध उनको परेशान न कर सकें।

फिर उसने और बहुत सारी चुहियों को जमा किया और उन्हें बताया कि उसने क्या किया है। फिर उनसे उन बच्चों के लिये खाना ढूँढने के लिये उसकी सहायता करने के लिये कहा।

उसके बाद से रोज **101** चुहियें वहाँ आतीं जिनके हर एक के मुँह में खाने का एक छोटा सा टुकड़ा होता और वे एक एक बच्चे को खिला देतीं। इस तरह से बच्चे रोज ताकतवर होते चले गये जब तक कि वे इधर उधर नहीं भागने लगे।

और इसके बाद तो वह दिन में चुहिया के बिल के बाहर खेलते और शाम को उसके बिल में घुस जाते।

लेकिन लेकिन लेकिन... एक दिन क्या हुआ कि वह नीच आया उधर की तरफ आयी। खुशकिस्मती से उस समय सारे लड़के चूहे के बिल के अन्दर थे और लड़की अभी भी बाहर खेल रही थी। उसको देख कर वह भी अन्दर की तरफ भागी। पर उससे पहले ही आया ने उसको देख लिया।

वह तुरन्त ही रानियों के पास दौड़ी गयी और उनको सारा हाल बताया और कहा — "मुझे लगता है कि शायद उनमें से कुछ बच्चे अभी भी उस चुहिया के बिल के पास रह रहे हैं। अच्छा हो कि आप किसी को भेज कर उस जगह को खुदवा कर उनको वहाँ से निकाल कर मरवा दें।"

वे बोलीं — "हम यह काम करने की हिम्मत नहीं कर सकते। हमें डर है कि इससे हमारे ऊपर ही शक जायेगा। हाँ हम एक काम कर सकते हैं कि हम कुछ मजदूरों से यह करने के

लिये कह सकते हैं कि वह उस जगह को खोद कर एक खेत बना दें। इस तरह से वे सब बच्चे मर जायेंगे जो बचे होंगे।"

यह प्लान मान लिया गया और इसे ही काम में लाया गया।

पर वह भली चुहिया उस दिन महल में खाना लाने गयी थी सो उसने इस प्लान के बारे में सब सुन लिया। वह तुरन्त ही घर दौड़ी। उसने सारे बच्चों को वहाँ से हटाया और कुछ दूर एक बड़ी सी खाली जगह में ले जा कर रख दिया। यह खाली जगह सीढ़ियों के पीछे थी जो पानी की तरफ जाती थीं।

उसने एक एक बच्चे को एक एक सीढ़ी के नीचे लिटा दिया। उसने सोचा कि यह जगह इन बच्चों के लिये सुरक्षित रहेगी अगर उस दिन धोबी अपनी छोटी बेटी के साथ कपड़े धोने पानी पर नहीं जायेगा तो।

जब उसका पिता पानी भरता था तो वह बच्ची सीढ़ियाँ ऊपर चढ़ कर और नीचे उतर कर अपना दिल बहलाया करती थी। हर बार जब भी उसके पैर का दबाव सीढ़ी पर पड़ता था उसकी वजह से बच्चे को भी एक दबाव महसूस होता था।

सारे सौओं लड़कों ने उसका यह दबाव चुपचाप सहा पर जब धोबी की बच्ची ने जब उस सीढ़ी पर पैर रखा जिसके नीचे छोटी लड़की लेटी थी तो वह चिल्लायी — "कोई मेरे लिये इतना बेरहम कैसे हो सकता है कि वह बार बार मुझे इस तरह

से दबाये। मेरे ऊपर दया करो। मैं भी तुम्हारी तरह से एक छोटी सी बच्ची हूँ।”

जब धोबी की बच्ची ने ये शब्द सुने तो वह डर के मारे भागती हुई अपने पिता के पास गयी और उससे कहा — “यह क्या मामला है। उन पत्थरों के नीचे कुछ तो ज़िन्दा है। मैंने अपने कानों से उनको बोलते हुए सुना। अब वह कोई राक्षस है या फिर कोई देवदूत और आदमी। यह मैं नहीं जानती।”

यह सुन कर धोबी 12 रानियों के पास गया और उनको कुँए की यह आश्चर्यजनक कहानी सुनायी। यह सुन कर उन्हें लगा कि लगता है कि गूजर बाई के कुछ बच्चे वहाँ भी हैं।

यह सोच कर उन्होंने कुछ लोगों को वहाँ देखने के लिये भेजा कि जाओ और देखो कि वहँ कोई बुरी आत्मा तो नहीं है। सो मजदूर उस कुँए को देखने के लिये गये।

अब उस कुँए के पास गणपति का एक मन्दिर था जिसमें एक छोटी सी मूर्ति रखी हुई थी। सो जब बच्चों ने देखा कि कुछ लोग कुँए को गिराने के लिये आये हैं तो वे गणपति से सहायता के लिये चिल्लाये।

गणपति को उन पर दया आ गयी तो उन्होंने दया कर के उनको पेड़ों में बदल दिया और अपने मन्दिर के पास लगा लिया। अब वहाँ सौ आम के छोटे छोटे पेड़ एक गोले में खड़े

थे जो सौ लड़के थे और एक छोटी से गुलाब की झाड़ी उस गोले के बीच में खड़ी थी जो उनकी बहिन थी।

मजदूरों ने कुँआ देखा तो उनको तो वहाँ एक बूढ़ी चुहिया के अलावा और कुछ नहीं मिला। उस चुहिया को उन्होंने मार दिया। उसके बाद उन **12** नीच रानियों के हुक्म से उन्होंने गणपति का मन्दिर तोड़ दिया पर बच्चे उनको वहाँ भी नहीं मिले।

पर धोबी की छोटी शैतान बेटी भी धोबी के साथ यह सब देखने के लिये गयी हुई थी। सो जब वे सब यह देख रहे थे तो वह अपने पिता से बोली — “पिता जी। देखिये ये छोटे छोटे पेड़। मुझे तो याद नहीं पड़ता कि मैंने इन्हें कभी यहाँ देखा हो।”

और हर चीज़ को जानने की इच्छा रखने वाली ने उनको और ध्यान से देखना शुरू कर दिया। वहाँ सौ पेड़ एक गोले में उगे हुए थे और उस गोले के बीच में एक छोटी से गुलाब की झाड़ी उगी हुई थी। उस पर लाल और सफेद रंग के गुलाब लगे हुए थे।

जब वह उन पेड़ों को देखती हुई घूम रही थी तो वह एक आम के पेड़ से छू गयी। आम का पेड़ तो कुछ नहीं बोला पर

वह गुलाब की झाड़ी से फूल तोड़ने चली गयी। यह देख कर गुलाब की झाड़ी कॉप गयी।

वह कॉप कर बोली — "मैं भी तुम्हारी तरह से एक छोटी सी लड़की हूँ। तुम इतनी बेरहम कैसे हो सकती हो। तुम मेरी सारी पसलियॉ तोड़ रही हो।"

यह सुन कर बच्ची फिर अपने पिता के पास भागी और बोली — "पिता जी इधर आइये और सुनिये कि गुलाब की यह झाड़ी क्या कह रही है।"

पिता ने यह खबर भी जा कर **12** रानियों को सुनायी। उन्होंने हकुम दिया कि एक बहुत बड़ी आग जलायी जाये जिसमें वे सौओं आम के पेड़ और यह गुलाब की झाड़ी जड़ से जला दिये जायें ताकि उनकी एक छोटी सी डंडी भी नहीं बचे।

आग लगायी गयी। सौओं पेड़ और गुलाब की झाड़ी को उखाड़ा गया और जैसे ही वे सब आग में डाले जाने वाले थे कि गणपति जी को फिर से उनके ऊपर दया आ गयी।

उन्होंने एक बहुत बड़ा तूफान उठा दिया जिससे आग बुझ गयी सारे देश में बाढ़ आ गयी और वे एक सौ एक पेड़ नदी में बह गये। वहॉ से वह धार के सहारे बहते हुए बहुत दूर तक चले गये। आखिर वे एक जगह जा कर रुक गये।

फिर वे एक जंगल के बीच में बहती हुई एक नदी के किनारे अपनी पहली वाली शक्ल में आ गये। यहाँ दूर दूर तक कोई बस्ती नहीं थी। यहाँ ये बच्चे दस साल तक रहे। वे आपस में ही बहुत खुश थे।

साधारण रूप से **50** बच्चे खाने के लिये रोज पेड़ों की जड़ें और बैरीज़ इकट्ठी करने जाया करते थे और बाकी के **50** बच्चे अपनी बहिन की देखभाल करने के लिये घर रह जाते थे।

पर कभी कभी वे उसको किसी सुरक्षित जगह पर भी रख जाया करते थे और फिर वे सब एक साथ बाहर चले जाया करते थे पर कभी उन्हें किसी शेर भालू तेंदुआ साँप बिच्छू ने परेशान नहीं किया।

एक दिन सब भाइयों ने अपनी बहिन को एक पेड़ के खोखले में सुरक्षित रूप से रखा और सब एक साथ शिकार करने चले गये। कुछ देर तक घूमने के बाद वे एक मकान के पास आ गये जो एक जंगली राक्षस का था।

यह राक्षस एक बुढ़िया के रूप में वहाँ कई सालों से रह रहा था। राक्षसी ने जब देखा कि कुछ लोग उसके राज्य में जबरदस्ती घुस आये हैं तो उसने उनको देखते ही कौओं में बदल दिया।

रात हो आयी उनकी बहिन बड़ी बेसब्री से अपने भाइयों का इन्तजार कर रही थी कि अचानक उसने घॅू घॅू की आवाज सुनी। उसने ऊपर देखा तो बहुत सारे काले कौए उसके पेड़ के पास आ कर इकट्ठा हो गये हैं और उसको बैरीज़ जड़ें और दे रहे हैं जिन्हें उन्होंने अपनी तेज़ चोंचों से तोड़ा था।

इससे बहिन समझ गयी कि उसके भाइयों के साथ क्या हुआ होगा – कि किसी बुरी आत्मा ने उसके भाइयों को कौओं में बदल दिया है। यह देख कर वह दुखी हो गयी और रोने लगी।

समय बीतता गया कौए रोज सुबह सवेरे अपने और अपनी बहिन के लिये खाना लाने के लिये निकल जाते और हर शाम को आराम करने के लिये उसी पेड़ की ऊॅची ऊॅची शाखों पर बैठ जाते जहॉ वह सारा दिन उनका इन्तजार करती रहती। रोती रहती।

आखिर जब उसने बहुत सारे ऑसू बहा लिये तो उनका एक नाला बन गया जो उस पेड़ की जड़ से निकला और जंगल में से हो कर बहता चला गया।

X X X X X X X

महीनों बाद एक सुबह पड़ोसी राज्य का एक राजा शिकार खेलने के लिये निकला और इस जंगल तक आ गया। पर उस दिन उसको कोई शिकार ही नहीं मिला।

शाम तक वह बहुत थक गया और बेहोश सा होने लगा। वह रास्ता भी खो गया था और उसके साथी भी पता नहीं कहाँ छूट गये थे। केवल उसके कुत्ते उसके साथ थे। सब प्यासे थे सो सब पानी ढूँढने लगे।

कुछ दूरी पर उनको साफ पानी का एक नाला दिखायी दिया तो उसके कुत्ते उधर की तरफ दौड़ गये। थका हुआ राजकुमार भी उनके पीछे पीछे दौड़ पड़ा और यह सोच कर कि यहाँ वह रात को सो भी जायेगा वह ठीक पानी के किनारे घास में उतर गया।

वह वहाँ लेटा हुआ था कि उसकी नजर ऊपर गयी तो घने पत्तों की शाखें दिखायी दीं। यह देख कर उसका तो आश्चर्य बहुत ही बढ़ गया कि उसके ऊपर वाली शाखों पर बहुत सारे कौए बैठे हुए थे। और उन सबके ऊपर एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी हुई थी।

और सबसे अच्छा दृश्य तो यह था कि वह उन कौओं को बैरीज़ और जंगली फल खिला रही थी।

तुरन्त ही वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उसको बड़ी कोमलता से पेड़ से नीचे ले आया। उसको अपने पास घास पर बिठाया और उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की मुझे यह बताओ कि तुम कौन हो। और तुम कैसे इस अकेली जगह में रहने के लिये आयी हो।

जवाब में उसने उसे अपने सारे कारनामे बता दिये। बस उसने उसको यह नहीं बताया कि ये सौ कौए उसके सौ भाई थे। राजा बोला — "तुम रोओ नहीं। तुम मेरे साथ मेरे घर चलो और मेरी रानी बन जाओ। मेरे माता पिता तुम्हारे माता पिता भी होंगे।"

यह सुब कर लड़की मुस्कुरा दी और अपने ऑसू भी पोंछ लिये। पर तुरन्त ही बोली — "आप मुझे ये कौए अपने घर ले जाने देंगे। क्योंकि मैं इन्हें बहुत प्यार करती हूॅ। मैं इनके बिना यहॉ से कहीं जा भी नहीं सकती।"

वह बोला — "यकीनन। तुम चाहो तो जंगल के सारे जंगली जानवर अपने साथ ले जा सकती हो। अब तो तुम मेरे साथ चलोगी न।"

सो उसको वह अपने घर यानी अपने पिता के घर ले गया। जब उन्होंने उसकी सुन्दरता देखी जब उसका शाही उठना बैठना

देखा तो इस जंगली लड़की को देख कर बूढ़े राजा रानी भी आश्चर्य में पड़ गये।

तब नौजवान राजा ने अपने पिता को बताया कि यह अब तक छोड़ी हुई राजकुमारी थी और उनसे उससे शादी करने की इजाज़त माँगी।

क्योंकि उसकी प्यारी प्यारी बातों ने सबका मन मोह लिया था सो राजा रानी ने उसको उससे शादी की इजाज़त दे दी जैसे मानो वह किसी बहुत बड़े राजा की बेटी हो और उनके लिये बहुत सारा दहेज लायी हो। शादी के बाद उन्होंने उसका नाम द्रौपदी बाई रख दिया गया।

द्रौपदी बाई ने अपने महल के सामने कुछ पेड़ लगवाये जिन पर वे कौए यानी उसके भाई बैठा करते थे। वह रोज अपने हाथों से काफी सारा चावल पकाती और उनके उनके खाने के लिये बिखेर देती। जब वह उनको बुलाती तो वे उड़ कर आ कर नीचे बैठ जाते और चावल खा कर उड़ जाते।

कुछ समय बाद द्रौपदी बाई के एक बेटा हुआ जिसका नाम रखा गया रामचन्द्र। वह बहुत ही अच्छा लड़का था। द्रौपदी बाई रोज उसको स्कूल ले जाती और शाम को घर वापस ले आती।

लेकिन एक दिन जब रामचन्द्र **14** साल का था तो द्रौपदी बाई उसको स्कूल से लाने के लिये नहीं गयी जैसे कि उसको जाना चाहिये था। जब वह घर लौटा तो उसने देखा कि उसकी माँ तो महल के सामने लगे पेड़ों में से एक पेड़ के नीचे बैठी है।

वह जो कौए उन पेड़ों पर रहते थे उनके काले शरीरों को सहला रही है। वे कौए रो रहे थे।

यह देख कर रामचन्द्र ने अपनी किताबों का थैला नीचे फेंक दिया और माँ के घुटनों पर अपनी कोहनी टिका कर उसके चेहरे की तरफ देखता बोला — "माँ बताओ तुम क्यों रो रही हो। तुम अक्सर दुखी क्यों हो जाती हो।"

वह जल्दी से बोली — "कुछ नहीं। कुछ नहीं।"

पर रामचन्द्र ने फिर पूछा — "माँ बताओ न क्या बात है। क्या मैं तुम्हारी इस मामले में कुछ सहायता कर सकता हूँ। अगर मैं कर सकता होऊँगा तो मैं जरूर करूँगा।"

द्रौपदी बाई बोली — "नहीं बेटा नहीं। मुझे अफसोस है कि मेरी सहायता करने के लिये तुम अभी बहुत छोटे हो। और जहाँ तक मेरे इस दुख का सवाल है मैंने अपना यह दुख कभी किसी से नहीं कहा। अब मैं तुम्हें भी नहीं बता सकती।"

पर रामचन्द्र अपनी माँ के पीछे ही पड़ गया। आखिर उसको बताना ही पड़ा। उसने रामचन्द्र को अपनी कहानी भी

बतायी और उसके मामाओं की दुखभरी कहानी भी बतायी। और आखीर में यह भी बताया कि उसके भाइयों को कैसे एक राक्षस ने कौआ बना दिया था जब उसने उनको अपने आस पास देखा।

लड़का कूद कर खड़ा हो गया और बोला — "तुम्हारे भाई किस तरफ गये थे जब उनको वह राक्षस मिला।"

वह बोली — "मुझे कैसे पता हो सकता है?"

"क्यों?"

लड़का बोला — "मुझे लगा कि शायद तुम्हें याद हो कि पहली रात कौए बनने के बाद वे किस तरफ से पेड़ की तरफ लौटे थे।"

"ओह। उस रात वे पेड़ की तरफ उस तरफ से लौटे थे जो महल के पीछे की तरफ से सीधा जाता है।"

रामचन्द्र खुशी से चिल्लाते हुए बोला — "ठीक है। मैं उधर की तरफ जाऊँगा और उस राक्षस का पता लगाऊँगा और उससे यह सीख कर आऊँगा कि उनके ऊपर पड़ा हुआ जादू किस तरह से हटाया जा सकता है।"

द्रौपदी बाई चिल्लायी — "नहीं नहीं तुम वहाँ नहीं जाओगे। मैं तुम्हें वहाँ नहीं जाने दे सकती। मैंने अपने माता पिता को खोया है और ये मेरे 100 भाई भी कौए बने बैठे हैं।

अगर तुम उस राक्षस के फन्दे में फँस गये और मुझसे खो गये तो मैं किसके लिये जियूँगी।"

इसके जवाब में वह बोला — "माँ तुम मेरी चिन्ता न करना। मैं उससे बहुत ही सावधान रहूँगा।"

यह कह कर वह अपने पिता के पास गया और बोला — "पिता जी। अब समय आ गया कि मैं दुनियाँ देखूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे दूसरे देशों को देखने की इजाज़त दें।"

राजा बोला — "ठीक है बेटा जाओ। मुझे यह बताओ कि तुम्हें कितने नौकरों की जरूरत होगी। और और भी किसी चीज़ की जरूरत हो तो मुझे बताओ।"

रामचन्द्र बोला — "मुझे सवारी के लिये एक घोड़ा दे दीजिये और एक आदमी उसकी देखभाल के लिये दे दीजिये। बस।"

राजा ने इजाज़त दे दी। रामचन्द्र ने घोड़ा लिया और जंगल की तरफ चल दिया।

X X X X X X X

पर जैसे ही वह जंगल में पहुँचा उसने घोड़े की देखभाल करने वाले को वह घोड़ा दे कर वापस घर भेज दिया कि अब यहाँ से वह अकेला पैदल ही जायेगा।

कुछ देर इधर उधर चक्कर काटने के बाद वह एक छोटे से मकान के पास आ पहुँचा। वहाँ एक बदसूरत स्त्री सो रही थी। उसके हाथ की बजाय बड़े बड़े पंजे थे। उसके लम्बे बाल उसके चारों तरफ लिपटे हुए थे।

यह देख कर रामचन्द्र समझ गया कि वह वहाँ आ गया था जिस जगह की तलाश में वह निकला था। वह बिल्कुल दबे पाँव उस मकान में घुस गया और उसका सिर मलना शुरू कर दिया।

आखिर राक्षस उठ गया और बोला — "ओ प्यारे छोटे लड़के। तुम डरो नहीं। मैं तो केवल एक गरीब बूढ़ी स्त्री हूँ। मैं तुम्हारा कुछ बुरा नहीं करूँगी। तुम मेरे साथ मेरे नौकर की तरह से रहो।"

यह सब उसने इसलिये नहीं कहा क्योंकि उसके दिल में रामचन्द्र के लिये कोई प्यार था या दया थी बल्कि बस इसलिये कहा था क्योंकि वह सोचती थी कि शायद वह उसके काम आ जाये। सो नौजवान राजकुमार उसकी सेवा में लग गया।

उसने सोच रखा था कि वह तब तक वहाँ रहेगा जब तक वह उससे वह सब नहीं सीख लेता जो वह वहाँ उससे सीखने आया है।

एक दिन उसने राक्षस से कहा — "माँ जी। आपके घर में चारों तरफ इन छोटी छोटी शीशियों जो यह पानी रखा है वह किस काम आता है।"

राक्षस बोला — "इनमें सबमें जादुई ताकतें हैं। अगर किसी पर मैं जादू डाल दूँ तो इनके डालने से वह अपनी पुरानी शक्ल में आ जाता है।"

"और इस छड़ी का क्या काम है।"

"इसके अन्दर बहुत सारी दैवीय ताकतें हैं। उदाहरण के लिये इसको हिला कर अगर तुम कोई भी इच्छा बोलो तो किसी भी पहाड़ नदी या जंगल को बुला कर उससे एक पल में अपना काम करवा सकते हो।"

एक और दिन रामचन्द्र ने उससे कहा — "माँ जी। आपके बाल तो बहुत उलझे हुए हैं। आप कहें तो मैं इनमें कंघी कर दूँ।"

राक्षस बोला — "नहीं नहीं। तुम मेरे बाल नहीं छूना। यह तुम्हारे लिये खतरनाक हो सकता है क्योंकि मेरे हर बाल में इतनी ताकत है कि वह पूरे का पूरा जंगल जला दे।"

रामचन्द्र ने पूछा — "यह कैसे?"

राक्षस बोला — "मेरे बाल का एक छोटा सा टुकड़ा जंगल में जिस दिशा की तरफ भी तुम फेंक दोगे जंगल में उसी तरफ तुरन्त ही आग लग जायेगी।"

जब रामचन्द्र को यह सब पता चल गया तो एक दिन जब दिन बहुत गर्म हो रहा था और राक्षस उनींदा सा हो रहा था तो उसने उसका सिर धोने की विनती की। इससे वह तुरन्त ही सो गया। उसने उसके दो तीन बाल तोड़े और एक हाथ में उसकी जादू की छड़ी ली और दूसरे हाथ में दो शीशी पानी की लीं और दबे पॉव उसका मकान छोड़ दिया।

वह अभी बहुत दूर नहीं गया था कि राक्षस जाग गया और उसे पता चला कि उसने क्या कर दिया है तो वह उसके पीछे बहुत तेज़ी से दौड़ा।

रामचन्द्र ने देखा कि राक्षस तो उसके पीछे बहुत तेज़ी से दौड़ा आ रहा है तो उसने अपनी जादू की छड़ी पीछे की तरफ कर के हिला दी जिससे उन दोनों के बीच एक बहुत चौड़ी नदी बन गयी। पर राक्षस तो उसको तुरन्त ही तैर कर पार कर गया।

यह देख कर रामचन्द्र फिर घूमा और अबकी बार उसने जादू की छड़ी हिला कर अपने और उसके बीच में एक बहुत

बड़ा पहाड़ खड़ा कर दिया। हर बार जब भी राक्षस रामचन्द्र के पास आता जाता वह जादू की छड़ी हिला कर उसके रास्ते में कोई न कोई अड़ंगा खड़ा कर देता जिससे उसको आने में देर लग जाती।

आखीर में उसने उसके तोड़े हुए बाल हवा में बिखेर दिये सो जिस रास्ते से राक्षस आ रहा था वहाँ सब जगह आग लग गयी। आग जल्दी ही ऊँची उठती गयी और राक्षस भी उसमें जल कर राख हो गया। रामचन्द्र सुरक्षित रूप से अपने घर आ गया।

जब द्रौपदी बाई ने अपने बेटे को देखा तो बहुत खुश हो गयी। रामचन्द्र उसको बाहर बागीचे में ले गया और साथ में लाया पानी उन सौओं कौओं के ऊपर छिड़क दिया। सब कौए तुरन्त ही आदमी बन गये।

क्योंकि रानी के भाइयों पर से जादू हट गया था इसलिये सारे देश में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। राजा ने अपने सालों के लिये एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें अपने सब पड़ोसी राजाओं और उनकी रानियों सहित न्यौता भेजा।

दूसरे राजा लोग जो इस दावत में आये थे उनमें द्रौपदी बाई के पिता जी और उनकी **12** नीच रानियाँ भी थे। जब वे सब वहाँ आ कर बैठे तो द्रौपदी बाई उठी और अपने पिता से बोली

— "भले जनाब। हम आपकी पत्नी गूजर बाई को देखने की भी इच्छा रखते थे। क्या आप बता सकते हैं कि वह आपके साथ क्यों नहीं आयीं।"

राजा यह सुन कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ कि द्रौपदी बाई उसकी पत्नी गूजर बाई के बारे इतना कुछ जानती थी। वह बोला — "उसकी तो बात ही मत करो। वह एक नीच स्त्री है। वह इसी लायक है कि वह अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिन जेल में ही काटे।"

पर द्रौपदी बाई उसके पति और उसके सौ भाइयों ने कहा — "ओ राजा जल्दी से किसी को भेज कर उस घायल स्त्री को यहाँ बुलवाओ। और अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुम्हारी पत्नियों को जेल में बन्द करवा दिया जायेगा और तुमको इस राज्य से निकाल दिया जायेगा।"

राजा इस धमकी का मतलब नहीं समझ सका। उसने सोचा कि वे उससे यों ही झगड़ा करना चाहते हैं। पर उसने इस बात की परवाह न करते हुए कि गूजर बाई वहाँ आती है या नहीं उसको वहाँ लाने के लिये किसी को भेज दिया।

जब वह आयी तो द्रौपदी बाई उसका पति और उसके सौ भाई और छोटा रामचन्द्र सब उसको बाहर से लेने गये और इज़्ज़त के साथ अन्दर महल में ले कर आये।

सबने उसके चारों तरफ खड़े हो कर उसके पति राजा से अपनी ज़िन्दगी की कहानी कही और बताया कि किस तरह से वे सब उसके बच्चे थे। कैसे उनकी माँ गूजर बाई उसकी **12** रानियों के अत्याचार का शिकार बनी। और कैसे उन **12** रानियों ने उनकी अपनी ज़िन्दगी भी खराब की।

वे किस तरह से भयानक खतरों से बचे और अपना कर्तव्य करने उसका बुढ़ापा आनन्द से बिताने और उसकी सहायता करने के लिये अब तक ज़िन्दा हैं।

यह सुन कर तो वहाँ आये सब लोग बहुत आश्चर्य करने लगे।

राजा ने खुशी से गूजर बाई को अपने गले से लगा लिया। यह तय पाया गया कि उसके सौओं लड़के उसके साथ उसके राज्य चलें। और फिर ऐसा ही हुआ।

रामचन्द्र भी अपने माता पिता के मर जाने तक उनके साथ रहा। उसके बाद वह राजा बन गया और इतना लोकप्रिय राजा बना कि लोग उसके राज्य में खूब खुशहाल रहे। राजा की **12** रानियाँ जिन्होंने गूजर बाई को इतना तंग किया था राजा के हुक्म से ज़िन्दा जला दी गयीं।

अन्त में सच की जीत हुई पर इन्सान का न्याय भी कितना अनोखा है कि वह बूढ़ी आया जिसने यह सब किया था और

जो सबसे ज़्यादा दोषी थी, सुना है कि उसको कोई सजा नहीं मिली। वह अपने परिवार में जा कर ही मरी। उसका दाह संस्कार भी इतनी शान शौकत से हुआ जैसे किसी बड़े हिन्दू का होता है।

5 राम और लक्ष्मण या विद्वान उल्लू[15]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसका नाम राजा चन्द्र था। उसका वज़ीर बत्ती एक बहुत ही विद्वान आदमी था। उन दोनों में आपस में इतना प्यार था कि वे राजा और मन्त्री कम और दोस्त ज़्यादा थे। दोनों के कोई बच्चा नहीं था और दोनों ही एक बेटे के लिये बहुत इच्छुक थे।

आखिरकार राजा की पत्नी और वज़ीर की पत्नी दोनों ने एक दिन एक ही समय में दो बेटों को जन्म दिया। राजा के बेटे का नाम रखा गया राम और वज़ीर के बेटे का नाम रखा गया लक्ष्मण। दोनों के जन्म पर सारे देश में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

दोनों बच्चे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। अलग अलग रह कर उनका मन ही नहीं लगता था। वे रोज एक साथ स्कूल जाते थे एक साथ नहाते थे और एक साथ ही खेलते थे। यहाँ तक कि खाना भी एक ही थाली में ही खाते थे।

एक दिन राम जब **15** साल का था तो उसकी माँ, यानी रानी ने अपने पति राजा चन्द्र से कहा — "हमारा बेटा राम नीचे लोगों में बैठने लगा है जैसे वह हमेशा लक्ष्मण के साथ ही खेलता

[15] Rama and Laxman or The Learned Owl. (Tale No 5)

रहता है। यह उसके ओहदे के लिये ठीक नहीं है। मैं चाहती हूँ कि आप उसके इस सम्बन्ध पर थोड़ी रोक लगायें और उसके लिये कुछ अच्छे साथी ढूँढें।"

राजा चन्द्र बोले — "यह मैं नहीं कर सकता। लक्ष्मण के पिता मेरे बहुत अच्छे वज़ीर और दोस्त हैं। जैसे उनके पिता मेरे पिता के थे। तो हमारे बच्चों को भी वैसे ही होने दो।"

यह सुन कर रानी कुछ गुस्सा हो गयी। उसने राजा से तो कुछ नहीं कहा पर उसने दुनियाँ के बहुत सारे विद्वानों को बुला भेजा और उनसे पूछा कि क्या दोनों बच्चों का प्यार तोड़ने का कोई साधन नहीं था। उन्होंने जवाब दिया कि वे ऐसे किसी साधन को नहीं जानते थे जो यह काम कर सके।

आखिर एक नाचने वाली रानी के पास आयी और बोली कि वह यह काम कर सकती है पर इसको लिये रानी को उसे कोई बहुत बड़ा इनाम देना पड़ेगा।

रानी ने उसको सोने की मुहरों से भरा एक थैला दिया और कहा — "यह तुम्हें तुम्हारे काम शुरू करने से पहले है और अगर बाद में तुम इस काम में कामयाब हो गयीं तो फिर मैं तुम्हें इतना ही और दूँगी।"

अब इस नीच स्त्री ने क्या किया कि उसने बहुत बढ़िया कपड़े पहने और बागीचे में बने हुए घर में चली गयी जिसे राजा

चन्द्र ने अपने बेटे के लिये बनवाया था। राम और लक्ष्मण अपने खेल के समय का बहुत सारा हिस्सा वहीं बिताया करते थे।

इस घर के बाहर एक बहुत बड़ा कुँआ था और एक सुन्दर बागीचा था। जिस समय यह नाचने वाली वहाँ पहुँची तो राम और लक्ष्मण कुँए के पास बैठे बैठे ताश खेल रहे थे।

वह उनके पास पहुँची और कुँए से पानी खींचने लगी। राम ने अपनी नजरें उठायीं और उसकी तरफ देखा और लक्ष्मण से कहा — "इस स्त्री के पास जाओ जिसने इतनी बढ़िया पोशाक पहन रखी है और मुझे पता लगा कर बताओ कि यह कौन है।"

लक्ष्मण ने वही किया जो उससे कहा गया था। उसने उस स्त्री से जा कर पूछा कि उसे क्या चाहिये था।

स्त्री बोली — "कुछ नहीं। कुछ नहीं।"

और अपना सिर हिलाते हुए वहाँ से चली गयी। वहाँ से वह रानी जी के पास आयी और बोली — "मैंने आपका काम कर दिया अब जैसा कि आपने मुझसे वायदा किया था मेरा इनाम मुझे दीजिये।" यह सुन कर रानी ने उसको सोने की मुहरों का दूसरा थैला भी दे दिया।

उधर लक्ष्मण जब उस स्त्री के पास से लौट कर आया तो राम ने पूछा "उसने क्या कहा। वह क्या चाहती थी।"

लक्ष्मण बोला — "उसने मुझसे कहा कि उसको कुछ नहीं चाहिये। वह कुछ नहीं चाहती थी।"

राम कुछ गुस्से से बोला — "यह कैसे हो सकता है। वह जरूर कुछ चाहती होगी। उसने जरूर ही तुमसे कुछ कहा होगा वरना उसको बिना किसी काम के यहाँ आने की जरूरत ही क्या थी। यह कोई राज़ की बात है जो तुम मुझसे छिपा रहे हो। मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम मुझे वह बात बताओ।"

लक्ष्मण बेकार में ही कहता रहा कि उसको कुछ नहीं चाहिये था उसने मुझसे कुछ नहीं कहा पर राम मानने को तैयार नहीं हुआ। दोनों में झगड़ा हुआ दोनों लड़े और राम गुस्से में आ कर अपने पिता के पास दौड़ा गया।

राजा ने उसको खराब मूड में देखा तो पूछा — "क्या बात है मेरे बेटे।"

राम बोला — "पिता जी। मैं वज़ीर के बेटे से बहुत गुस्सा हूँ। मैं उस लड़के से नफरत करता हूँ। उसको मरवा दिया जाये और उसके मरने के सबूत में मुझे उसकी आँखें ला कर दी जायें। नहीं तो मैं आज खाना नहीं खाऊँगा।"

यह सुन कर राजा बहुत दुखी हुआ। राजा ने उसको बहुत समझाने की कोशिश की पर जब राम खाना खाने नहीं आया तो राजा चन्द्र ने अपने वज़ीर से कहा — "मेरे प्यारे वज़ीर। तुम

अपने बेटे को यहाँ से ले जाओ और उसे कहीं छिपा दो। आज दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हो गयी है।”

उसके बाद वह बाहर गया एक हिरन मारा और उसकी आँखें राम को दिखाते हुए कहा — “देखो मेरे बेटे। तुम्हारे कहे अनुसार मैंने वज़ीर के बेटे को मार दिया है और उसकी आँखें निकाल ली हैं।”

राम यह देख कर बहुत खुश हो गया और खुशी खुशी खाना खा लिया। पर कुछ दिन बाद ही उसको अपने साथी की याद आने लगी। अब उसके पास कोई नहीं था जिसको वह कहानियाँ सुना सुना कर आनन्द लेता।

तब चार दिन लगातार उसने सपने में एक शीशे का महल देखा जिसमें एक राजकुमारी रहती थी जो संगमरमर जैसी सफेद थी।

उसने बहुत सारे अक्लमन्दों को इसलिये बुला भेजा ताकि वह अपने उस सपने का मतलब जान सके। पर कोई उसके सपने का कोई मतलब नहीं बता सका।

इस सुन्दर राजकुमारी के और अपने खोये हुए दोस्त के बारे में सोचते साचते वह और दुखी हो गया। वह सोचने लगा “इस मामले में मेरी सहायता करने वाला आज मेरे पास कोई नहीं है। अगर आज मेरा दोस्त होता तो वह कितनी जल्दी इस सपने का

मतलब बता देता। ओह मेरे दोस्त। मेरे दोस्त। मेरे खोये हुए दोस्त।"

तभी राजा चन्द्र कमरे में आये तो उसने उनसे कहा — "पिता जी। मेहरबानी कर के मेरे दोस्त की कब्र मुझे दिखाइये ताकि मैं भी वहीं मर सकूँ।"

राजा चन्द्र बोले — "यह तुम क्या बेवकूफी की बात कर रहे हो? पहले तो तुमने विनती कर के अपने दोस्त को मरवाया और अब तुम उसकी कब्र पर मरना चाहते हो। इस सबका क्या मतलब है।"

राम बोला — "पर पिता जी। आपने उसको मार डालने का हुक्म दिया ही क्यों। जबसे मैंने उसको खोया है तबसे मैंने अपना दोस्त खो दिया है यहाँ तक कि मेरी ज़िन्दगी की खुशी सो गयी है। पर अब मुझे उसकी कब दिखाये वरना मैं कसम से मर जाऊँगा।"

राजा ने देखा कि उसका बेटा राम सचमुच में इस बात को बहुत महसूस कर रहा है तो उसने राम से कहा — "तुमको मुझे तुम्हारा हुक्म न मानने के लिये धन्यवाद देना चाहिये कि मैंने तुम्हारी बेवकूफी की इच्छा का पालन नहीं किया।

तुम्हारा पुराना साथी ज़िन्दा है। इसलिये अब तुम लोग फिर से दोस्त बन जाओ। तुमने जो ऑखें देखी थीं वह तुम्हारे इस दोस्त की नहीं बल्कि एक हिरन की थीं।"

इसके बाद राम लक्ष्मण की दोस्ती फिर से बन गयी।

एक दिन राम ने लक्ष्मण से कहा — "यह चार रात पहले की बात है कि मैंने एक अजीब सा सपना देखा। मैंने देखा कि एक घने जंगल में मैं मीलों घूमता फिर रहा हॅू। घूमते घूमते में एक गोले के पेड़ों की बगिया में आ गया हॅू।

उसके बीच से हो कर मैं फिर एक अमरूद के पेड़ों के बागीचे में आ गया हॅू और उसके बाद मैं एक सुपारी के बागीचे में आ गया। और सबसे बाद में एक कोपल के पेड़ों के बागीचे में आया।

इन सबके बाद फूलों का बागीचा था। वहॉ के माली ने मुझे

एक फूलों का गुच्छा दिया। बागीचे के चारों तरफ एक नदी बह रही थी। उसके दूसरी तरफ कॉच का एक महल था जिसमें एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी थी।

मैंने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। उसका शरीर जैसे संगमरमर का बना हुआ था। उसने बहुत सारे गहने

पहने हुए थे। उसकी सुन्दरता को देख कर तो मैं बेहोश ही हो गया। बस उसके बाद मेरी आँख खुल गयी।

ऐसा मेरे साथ चार बार हुआ पर अभी तक कोई मुझे यह नहीं बता सका है कि इसका मतलब क्या है।"

लक्ष्मण बोला — "मैं बता सकता हूँ। कहीं ऐसी राजकुमारी मौजूद है जैसी कि तुमने देखी है। अगर तुम चाहो तो तुम उससे शादी कर सकते हो।"

राम तुरन्त बोला — "मगर कैसे? और तुमने मेरे इस सपने का क्या मतलब निकाला।"

वज़ीर का बेटा बोला — "अब जो मैं कहता हूँ तुम वह सुनो। एक देश में जो यहाँ से बहुत दूर है एक राजा के राज्य के बीच में उस राजा की बेटी रहती है। बहुत सुन्दर बेटी। वह सचमुच में ही एक काँच के महल में रहती है।

इस महल के चारों तरफ एक नदी बहती है और नदी के चारों तरफ एक फूलों का बागीचा है। उस बागीचे के चारों तरफ चार घने जंगल हैं – कोपल का सुपारी का अमरूद का और गोले का।

राजकुमारी चौबीस साल की है पर उसकी अभी शादी नहीं हुई है क्योंकि उसने यह तय कर रखा है कि वह उसी से शादी

करेगी जो वह नदी कूद कर पार कर उसके क्रिस्टल के महल में आ कर उससे मिलेगा।

और हालाँकि हजारों ने यह कोशिश कर ली है वे सब बड़ी तकलीफ से मारे गये हैं। या तो वे नदी में डूब गये हैं या गिरने से उनकी गर्दन की हड्डी टूट गयी है। इसलिये जो कुछ तुमने सपने में देखा है वह सच है।"

राम बोला — "क्या हम इस देश पहुँच सकते हैं।"

उसके दोस्त ने जवाब दिया — "हॉ हॉ क्यों नहीं। बल्कि तुम्हें ऐसा ही करना चाहिये। तुम अपने पिता के पास जाओ और जा कर उनसे कहो कि तुम अब दुनियॉ देखना चाहते हो। तुम उनसे न तो कोई हाथी लेना और न कोई नौकर। बस उनसे उनका पुराना लड़ाई वाला घोड़ा ले लेना।"

इस बातचीत के बाद राम अपने पिता के पास गया और बोला — "पिता जी मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे जाने की इजाज़त दी जाये। मैं वज़ीर के बेटे के साथ जा कर दुनियॉ देखना चाहता हूँ।"

पिता बोले — "ठीक है। पर तुम्हें साथ के लिये क्या चाहिये। क्या तुम्हें हाथी चाहिये, कितने? नौकर चाकर, वे भी कितने?"

बेटा बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये पिता जी। बस आप अपना लड़ाई वाला घोड़ा मुझे दे दीजिये ताकि उस पर बैठ कर मैं यात्रा कर सकूँ।"

राजा बोला — "ठीक है बेटा।"

और उस घोड़े पर सवार हो कर राम और लक्ष्मण अपनी यात्रा पर चल दिये।

हजारों मील चलने के बाद एक दिन वे गोले के पेड़ों के बागीचे में आ गये। उसके बाद एक अमरूद के पेड़ों के बागीचे में फिर सुपारी के पेड़ों के बागीचे में और आखीर में कोपल के बागीचे में आ गये।

उसके बाद वे एक बहुत सुन्दर बागीचे में घुसे जहाँ वहाँ के माली ने उनको फूलों का एक बड़ा सा गुच्छा दिया। इससे उनको लगा कि वे उस जगह के आस पास आ पहुँचे हैं जहाँ के लिये वे यहाँ तक आये थे।

अब ऐसा हुआ क्योंकि उस नहर के पानी में बहुत सारे लोग अपनी जान दे चुके थे जो राजकुमारी के महल के काँच के महल के चारों तरफ बनी हुई थी राजा ने एक नियम बना दिया था कि शादी की इच्छा रखने वाला कोई भी राजा के बिना जाने और बिना इजाज़त के उसे पार करने की कोशिश नहीं करेगा।

और अगर कोई भी राजा या राजकुमार वहाँ बेवजह घूमता फिरता भी नजर आया तो उस देश के नियम के अनुसार उसको जेल में बन्द कर दिया जायेगा।

अब इस बारे में राजा और वजीर के बेटे को कुछ भी मालूम नहीं था तो जब वे बागीचे के बीच में पहुँचे तो उनको उनके सामने ही वह बड़ी नदी नजर आयी। वह उस महल के बिल्कुल सामने ही थी।

वे दोनों आपस में सोचने लगे कि अब आगे क्या किया जाये कि तभी राजा के नौकर वहाँ आये और उन दोनों को पकड़ कर ले जा कर जेल में बन्द कर दिया।

लक्ष्मण बोला — "यह तो बड़ा गड़बड़ हो गया।"

राम भी एक लम्बी साँस ले कर बोला — "हाँ सो तो है। यह तो हमारे सपनों का बड़ा दुखी अन्त है। सोचो यहाँ से बच कर भागने का कोई तरीका है क्या।"

लक्ष्मण बोला — "हाँ है। मैं हर मौके पर कोशिश करूँगा यहाँ से बाहर निकलने की।"

यह कह कर वह सन्तरी की तरफ चला गया जो जेल का पहरा दे रहा था। उसने उससे कहा — "हम लोग यहाँ बन्द हैं और बाहर नहीं जा सकते। यह लो तुम कुछ पैसे लो और बाहर

जा कर बस इतना चिल्ला दो कि "माली की गाय भाग गयी है।"

सन्तरी ने सोचा कि यह तो पैसे कमाने का बड़ा अच्छा मौका है सो पैसे ले कर वह वहाँ से चला गया और उसने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था।

लक्ष्मण ने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। माली की पत्नी ने सन्तरी की पुकार सुनी तो सोचा "अरे लगता है कि यह सन्तरी फिर से जेल के कमरे पर पहरा दे रहा है। ऐसा लगता है कि जेल में कोई आया है। मुझे यकीन है कि ये वही दोनों नौजवान राजा हैं जो मुझे सुबह बागीचे में मिले थे। कम से कम मैं उनको आजाद कराने की कोशिश तो कर सकती हूँ।"

सो उसने दो बूढ़े भिखारियों को साथ लिया कुछ फूल और मिठाई साथ ली और घर से चलने के लिये तैयार हुई जैसे कि मन्दिर जा रही हो। यह मन्दिर उसी कोने में था जहाँ उन बन्दियों का जेल का कमरा था।

सन्तरियों ने सोचा कि यह अपने दो साथियों को साथ ले कर शायद मन्दिर पूजा करने जा रही होगी से उन्होंने उनको बिना किसी रोक टोक के अन्दर जाने दिया। जैसे ही वे उस कोने में घुसीं तो उन्होंने जेल के कमरे का दरवाजा खोला और राम लक्ष्मण से उन दोनों भिखारियों से अपने कपड़े बदलने के

लिये कहा जो उन्होंने बहुत जल्दी कर लिया। माली की पत्नी ने भिखारियों को जेल में छोड़ा वह राम लक्ष्मण को सुरक्षित रूप से अपने घर ले आयी।

जब वे घर पहुँच गये तब वह उनसे बोली — "तुमको मालूम होना चाहिये कि हमारे राजा को सलाम किये बिना और उनकी इजाज़त लिये बिना नदी के किनारे जा कर तुम लोगों ने बहुत बड़ी गलती की।

यह कानून यहाँ का इतना सख्त कानून है कि अगर मैंने तुम्हें बचा कर लाने की कोशिश नहीं की होती तो तुम्हें बहुत समय तक जेल में रह जाना पड़ जाता। हालाँकि मुझे लगा था कि यह सब तुमसे अनजाने में हुआ है।

मैं तुमको छुड़ाना चाहती थी पर कल जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी तुम लोग यहाँ से निकल कर राजा के दरबार में सलाम मारना।"

अगले दिन सन्तरी अपने दोनों बन्दियों को राजा के पास ले गये — "देखिये राजा साहब ये दो बन्दी राजकुमार हैं जिनको हमने कल रात गिरफ्तार किया है। ये लोग कानून के खिलाफ नदी के किनारे घूम रहे थे।"

पर जब उन्होंने बन्दियों की तरफ देखा तो वहाँ तो केवल दो भिखारी थे जिनको सब कोई जानते थे। वे महल के फाटक पर भी कई बार देखे गये थे।

राजा उनको देख कर हँस पड़ा बोला — "अरे बेवकूफो। तुम लोग ज़रा कुछ ज़्यादा ही सावधान हो गये हो। आओ यहाँ आओ और अपने नौजवान राजाओं को देखो। क्या तुम इनको इनकी शक्ल से भी नहीं पहचान सके।"

इस पर वे सन्तरी शर्म के मारे मुँह लटका कर वहाँ से चले गये।

माली की पत्नी की बात सुन कर राम और लक्ष्मण अगले दिन सुबह ही राजा के दरबार में गये। राजा ने उनका बड़ी शान से स्वागत किया।

पर जब उसने उनकी यात्रा का उद्देश्य सुना तो उसने अपना सिर ना में हिलाया और कहा — "मेरे प्यारे साथियो। तुम अपने इन इरादों को अपने से दूर ही रखो। अगर तुम मेरी बेटी भागीरथी[16] को जीतना ही चाहते हो तो मैं एक दोस्त की हैसियत तुमको सलाह देता हूँ कि तुम इसके लिये कोशिश न ही करो तो अच्छा है।

[16] Baragaruttee – a name of River Ganges. In fact it should be Bhageerathee which is actual Ganges other name.

तुमको तो कहीं और सैंकड़ों राजकुमारियाँ मिल जायेंगी जो तुमसे शादी करने के लिये तैयार हो जायेंगी। तुम यहाँ किसलिये आये हो जहाँ हजारों तुम्हारे जैसे सुन्दर राजकुमारों ने अपनी ज़िन्दगी गँवा दी है। तुम मेरी बेटी के बारे में सोचना छोड़ दो। वह बहुत ही जिद्दी लड़की है।”

पर राम भी उस लड़की से शादी की जिद करता ही रहा। सो राजा ने उसको बेमन से इजाज़त दे दी। राज्य भर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि एक और राजकुमार अपनी जान दाँव पर लगाने जा रहा है। मेहरबानी कर के उसके लिये मन से प्रार्थना करें ताकि वह अपने उद्देश्य में कामयाब हो जाये।

राम ने बहुत अच्छे कपड़े पहने अपने पिता के घोड़े पर चढ़ा और उसको ऐड़ लगायी और नदी के ऊपर कूद गया। घोड़ा ऊपर हवा में उड़ा जैसे कोई चिड़िया उड़ती है नदी पार की और सामने वाले काँच के महल के बीच के आँगन में जा कर उतर गया।

पर राम को लगा कि यह काम कोई बहुत ज़्यादा अच्छा नहीं हुआ सो यह काम उसने तीन बार किया। यह देख कर राजा बहुत खुश हुआ उसने राम के घोड़े को सहलाया राम को चूमा और कहा — “स्वागत है तुम्हारा ओ मेरे दामाद।”

उसके बाद दोनों की शादी हुई। सारा शहर रोशनी से चमकाया गया। एक दूसरे को भेंटें दी गयीं। वे सब फिर कुछ दिन तक सुख से रहे।

आखिर एक दिन राम ने अपने ससुर जी से कहा — "जनाब। मैं यहाँ बहुत खुश खुश रह रहा हूँ पर अब मैं अपने माता पिता से मिलने के लिये अपने देश जाना चाहता हूँ।"

राजा बोला — "मेरे बेटे। तुम कहीं भी जाने के लिये आजाद हो पर मेरे तुम्हारे सिवा और कोई बेटा नहीं है। और न तुम्हारी पत्नी के अलावा मेरी और कोई बेटी ही है इसलिये मैं तुम्हें अपनी आँखों से दूर नहीं करना चाहता। मुझे इसमें बहुत दुख होता है।

कभी कभी मुझसे मिलने के लिये आते रहना मुझे बहुत खुशी होगी। तुम्हारे लिये मेरे दरवाजे हमेशा के लिये खुले हैं। तुम्हारा यहाँ हमेशा स्वागत है।"

राम ने कभी कभी वहाँ लौटने का वायदा किया। राजा से बहुत सारी भेंटें और यात्रा के लिये जरूरत का सारा सामान ले कर वह अपनी पत्नी और साथी लक्ष्मण को साथ ले कर वह अपने देश की तरफ चल दिया। जाने से पहले राम लक्ष्मण ने माली की पत्नी को भी बहुत इनाम दिया जिसने उनकी इतनी सहायता की थी।

पहली शाम को यात्री लोग जंगल के बाहर की तरफ गोले के बागीचे की हद तक पहुँच गये। वहाँ उन्होंने रात बिताने की सोची। राम और उसकी पत्नी अपने तम्बू में चले गये। पर लक्ष्मण जो राम को बहुत ज़्यादा प्यार करता था उनके दरवाजे पर रात भर पहरा देता रहा।

वह रात भर एक पेड़ के नीचे बैठा रहा। कुछ समय बाद दो उल्लू उसके सिर के ऊपर से उड़े और उस पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर जा कर बैठ गये और एक दूसरे से बात करने लगे।

वजीर का बेटा बहुत सारे आदमियों से कहीं ज़्यादा होशियार था। वह उन पक्षियों की भाषा जानता था। मादा उल्लू पति उल्लू से बोली "प्रिये मुझे कोई कहानी सुनाओ। तुम्हें बहुत दिन हो गये मुझे कोई कहानी सुनाये हुए।"

यह सुन कर उसके पति ने कहा — "कहानी? मैं तुम्हें क्या कहानी सुना सकता हूँ। क्या तुम इन लोगों को देख रही हो जो इस समय इस पेड़ के नीचे कैम्प लगाये हुए हैं। क्या तुम इनकी कहानी सुनना पसन्द करोगी।"

मादा उल्लू राजी हो गयी और पति उल्लू ने कहना शुरू किया — "पहले इस बेचारे वजीर की तरफ देखो। यह बहुत ही वफादार और सेवा करने वाला आदमी है। इसने अपने राजा

के लिये कितना किया है। पर न तो इसे अभी तक इसका कोई इनाम मिला है और ना ही इसे आगे कुछ मिलेगा।"

यह सुन कर तो लक्ष्मण का ध्यान पूरी तरह से उधर चला गया। उसने सोचा जो कुछ भी वह सुनेगा वह उसे लिख लेगा सो उसने अपना लिखने का सामान निकाला और उसे लिखने का इरादा किया।

पति उल्लू ने राम और लक्ष्मण के जन्म से उनकी कथा कहनी शुरू की। फिर उनकी दोस्ती के बारे में बात की। उनका झगड़ा उनकी लड़ाई फिर उनका समझौता और उसके बाद राजकुमारी को पाने के लिये जो उन्होंने तकलीफें सहीं उनके बारे में बताया।

और आखीर में उस दिन का भी हाल बताया जिस दिन उन्होंने अपने घर वापस जाने का फैसला किया।

मादा उल्लू ने पूछा — "अब इसके बाद इस बेचारे वजीर की किस्मत में क्या लिखा है।"

उसके पति ने जवाब दिया — "इस जगह से आगे यह फिर राजा और रानी के साथ आगे बढ़ता रहेगा। जब तक ये लोग राजा चन्द्र के राज्य के पास पहुँचेंगे तो वहाँ से जाते समय ये एक बहुत बड़े बरगद के पेड़ के नीचे से गुजरेंगे।

लक्ष्मण को वहाँ सबसे ऊँची डाल के आस पास कुछ डालियों को बड़े खतरनाक ढंग से हिलते डुलते देखेगा तो वह राजा और रानी के पास दौड़ा जायेगा और जल्दी से उनको वहाँ से हटायेगा जो उनको यकीनन ही मार देता। वह पेड़ फिर बहुत ज़ोर की आवाज करते हुए धरती पर गिर जायेगा।

पर उसके यह काम करने के बावजूद राजा अपनी किस्मत से नहीं बच पायेगा। वजीर ने यह सब लिख लिया।

मादा उल्लू ने पूछा — "फिर क्या।"

उल्लू बोला — "फिर क्या। फिर यह कि जब राजा और रानी अपने लोगों के साथ और आगे चलेंगे और महल के दरवाजे की महराब के नीचे से गुजरेंगे तो वजीर देखेगा कि दरवाजे की छत तो असुरक्षित बनी है। तो वह वहाँ भी राजा और रानी को सुरक्षित रूप से निकाल लेगा और उसके बाद वह दरवाजा गिर जायेगा।

मादा उल्लू ने पति उल्लू से पूछा — "उसके बाद।"

पति उल्लू बोला — "उसके बाद जब राजा और रानी सो जायेंगे तब वजीर उनका पहरा दे रहा होगा। तो वह देखेगा कि एक बहुत बड़ा कोबरा साँप दीवार से नीचे उतरता हुआ देखेगा जो धीरे धीरे रानी की तरफ बढ़ेगा।

वह उसे अपनी तलवार से मार देगा पर इत्तफाक से उस कोबरे के खून की एक बूँद रानी के गोरे माथे पर पड़ जायेगी। वजीर अपने हाथ से उसको पोंछने की हिम्मत नहीं कर पायेगा।

इसकी बजाय वह अपना चेहरा कपड़े से ढकेगा ताकि वह अपने होठों से वह बूँद चाट सके। पर उसके इस काम के लिये राजा राम उससे गुस्सा हो जायेगा और इस वजह से वह पत्थर का हो जायेगा।"

मादा उल्लू ने पूछा — "तो क्या फिर वह हमेशा के लिये पत्थर का बना रहेगा?"

पति उल्लू ने कहा — "नहीं वह हमेशा के लिये तो पत्थर नहीं बना रहेगा। पर हॉ वह आठ साल तक ऐसा ही रहेगा। फिर जब राजा के बच्चा होगा तो ऐसा होगा कि एक दिन वह बच्चा फर्श पर खेल रहा होगा तो वह उसको पकड़ लेगा। बस उसी के छूने से वह फिर से ज़िन्दा हो जायेगा।

पर मैंने तुमको आज काफी बता दिया है चलो अब चूहे पकड़ते हैं – टूहू टूहू।" चिल्लाते हुए वे वहॉ से उड़ गये।

लक्ष्मण ने यह सब अपने पास पहले ही लिख लिया था। यह सब जान कर उसका दिल भारी हो गया। फिर उसने सोचा कि हो सकता है कि यह सब सच नहीं भी हो। इसलिये उसने

यह सब किसी से भी नहीं कहा। अगले दिन उन्होंने फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी।

पर अब उल्लू ने जैसा कहा था वैसा ही होने लगा। जब ये सब लोग एक बड़े बरगद के पेड़ के नीचे से गुजरने लगे तो वजीर ने देखा कि वह पेड़ तो बहुत ही खतरनाक और असुरक्षित है।

उसने सोचा कि अरे उल्लू तो ठीक कह रहा था। उसने तुरन्त ही राजा और रानी का हाथ पकड़ा और उनको उसके नीचे से बाहर की तरफ ले गया। जैसे ही उसने ऐसा किया कि उस पेड़ की एक बड़ी सी शाख चरचरा कर नीचे गिर पड़ी।

इसके कुछ देर बाद वे अपने राज्य की हद के पास पहुँचे तो वहाँ अपने महल की मेहराब के नीचे से निकल रहे थे कि वजीर ने देखा कि मेहराब के कुछ पत्थर उसमें से बस निकलने ही वाले थे।

उसने फिर सोचा वह उल्लू तो सच ही बोल रहा था सो उसने जल्दी से राम और भागीरथी के हाथ पकड़े और उन दोनों को उसके नीचे से निकाल दिया। उनके वहाँ से हटते ही वह दरवाजा गिर पड़ा। सो ठीक समय से उसने उनकी जान बचा ली।

घर में पहुँचने पर राजा चन्द्र और उनके वजीर ने उन सबका बड़े ज़ोर शोर से स्वागत किया।

कुछ दिनों बाद की बात हे कि एक रात राजा रानी सो रहे थे और वह नौजवान वजीर बाहर पहरा दे रहा था कि उसने देखा कि बहुत बड़ा कोबरा रानी के सिर के ऊपर आ रहा था।

वजीर को लगा कि उसके बुरे दिन अब शुरू होने वाले हैं। अब मेरी किस्मत में अगर यही है तो यही है। मैं अपना काम अवश्य करूँगा।

यह सोच कर उसने अपनी पोशाक में से अपने और राजकुमार के जीवन का इतिहास, यानी बचपन से ले कर अब तक जो उल्लू ने बोला था और उसने लिखा था राम के पास रख दिया। फिर उसने अपनी तलवार निकाली और कोबरा को मार दिया।

कोबरा साँप के खून की कुछ बूँदें रानी के माथे पर गिर पड़ीं। उसने अपने चेहरे पर कपड़ा ढका और साँप के खून की बूँदों को चाटने के लिये तैयार हुआ कि उसी समय राजा की आँख खुल गयी।

राजा ने पूछा — "यह तुम क्या कर रहे हो। ओ लक्ष्मण तुम तो मेरे भाई के समान हो। तुमने तो मुझे कितनी परेशानियों

से बचाया है फिर तुम मेरे साथ ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हो। कि तुम उसके पवित्र माथे को चूम रहे हो।

अगर तुम्हें उससे प्यार था तो तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया जब तुमने उस कॉच के महल में देखा था। उस समय मैं वहॉ से चला जाता ताकि तुम उससे शादी कर सको। ओ मेरे भाई ओ मेरे भाई तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया।"

ऐसा कह कर उसने अपना चेहरा अपने हाथों से ढक लिया। उसने सिर उठाया वज़ीर के बेटे की तरफ देखा पर उधर से कोई जवाब नहीं मिला क्योंकि वह तो पत्थर का बन चुका था।

तब राम ने पहली बार अपने पास रखा हुआ एक कागज देखा जो लक्ष्मण ने उसके पास रख दिया था। उसने उसे पढ़ा तो उसे लगा कि लक्ष्मण ने बचपन से ही उसके लिये क्या कुछ नहीं किया। उसको पढ़ते पढ़ते वह फूट फूट कर रोने लगा। वह उस मूर्ति के पैरो में झुक गया। उसके पत्थर के घुटने पकड़ कर बहुत रोया।

जब सुबह हुई और राजा चन्द्र और रानी मॉ वहॉ आये वह तभी भी वह वहॉ बैठा बैठा रो रहा था और उस मूर्ति से माफी मॉग रहा था।

राजा और रानी ने उससे पूछा कि "यह तुमने क्या किया।"

जब उसने उनको बताया तो राम के पिता उस पर बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने कहा कि "क्या इतना काफी नहीं था कि तुमने उसको अपने गुस्से की वजह से पहले मरवा डाला था। पर अब तुम्हारे बेइज़्ज़त करने की वजह से वह मूर्ति बन गया। तुम हमेशा ही उसके साथ बुरा करते रहते हो।"

आठ साल बीत गये वजीर अपनी पुरानी हालत में नहीं आया। रोज राजा राम और रानी भागीरथी दोनों उसके पास बैठे हुए उसको देखते रहते। वे उसके आगे हाथ जोड़ते उसका नाम ले ले कर उससे माफी मॉगते रहते।

ऐसा करते करते आठ साल बीत गये। तब भागीरथी को बच्चे की आशा हुई तो नवें महीने में उसने एक बेटे को जन्म दिया। उसके नौ महीने बाद जब वह घुटनों चलने लगा तो उसके माता पिता उस पर ध्यान देने लगे।

उन्होंने उसको इस आशा में मूर्ति के पास बिठाना शुरू कर दिया कि एक दिन वह उसको छू लेगा जैसा कि उल्लू ने कहा था।

वे तीन महीने तक देखते रहे पर कुछ नहीं हुआ। आखिर जब बच्चा एक साल का हुआ और चलना सीखने लगा तब एक दिन वह मूर्ति के पास पहुॅच गया और उसके पैरों की तरफ बढ़ने लगा।

उसने अपनी बॉहें फैलायीं और मूर्ति का पैर पकड़ लिया। जैसे ही उसने मूर्ति का पैर छुआ वजीर ज़िन्दा हो गया। उसने तुरन्त ही झुक कर बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया जिसने उसे ज़िन्दा किया था। और बहुत देर तक उसे चूमता रहा।

राम और भागीरथी की खुशी का भी कोई ठिकाना नहीं था। उनको अपना पुरान दोस्त मिल गया था। राम और लक्ष्मण के माता पिता भी बहुत खुश थे।

राजा चन्द्र ने वज़ीर से कहा — "देखो मेरा बेटा अपनी पत्नी और बच्चे के साथ खुश है जबकि तुम्हारे बेटे का कोई भी नहीं है। तुम अब उसके लिये कोई लड़की देखो ताकि हम उसकी शादी भी देख लें।

सो वजीर ने अपने बेटे के लिये एक सुन्दर दयालु लड़की देख ली। उन दोनों की शादी राम की शादी से भी ज़्यादा शानदार तरीके से हुई। उसके बाद सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

6 छोटी सूर्य बाई[17]

एक बहुत ही गरीब दूध बेचने वाली थी। एक बार वह अपने कई दूध के डिब्बे बाजार में बेचने जा रही थी। उसके एक एक साल की बच्ची थी। क्योंकि घर में उसके पीछे उसको रखने वाला कोई नहीं था सो उसने उसको अपने साथ लिया।

चलते चलते वह थक गयी तो सड़क के किनारे एक जगह सुस्ताने के लिये बैठ गयी। उसने बच्ची को उतार दिया और दूध के डिब्बे भी वहीं पास में रख लिये। कि अचानक दो बड़े गरुड़ उसके ऊपर से होते हुए उड़े। उनमें से एक ने उसकी बच्ची को अपने पंजों में पकड़ लिया और उसको ले कर उड़ गया।

वह गरुड़ बच्ची को वहाँ से बहुत दूर ले गया। यहाँ तक कि वह उसे उसके देश के बाहर ले गया। बहुत दूर एक बहुत बड़े पेड़ पर उसका घर था सो वह उसको वहीं ले गया। वहाँ उन्होंने एक लकड़ी और लोहे का घोंसला बना रखा था। वह घोंसला इतना बड़ा था जितना कि कोई छोटा सा घर होता है।

[17] Little Surya Bai. (Tale No 6)

उस घर के चारों तरफ लोहा लगा हुआ था और उसके अन्दर जाने के लिये सात लोहे के दरवाजे पार कर के जाना पड़ता था।

इतने मजबूत किले में उन्होंने बच्ची को ले जा कर रख दिया और क्योंकि वह एक छोटी गरुड़ बच्ची की तरह लगती थी सो उन्होंने उसका नाम सूर्य बाई रख दिया। दोनों गरुड़ उसको बहुत प्यार करते थे।

वे दोनों उसके लिये कीमती कीमती चीज़ें लाने के लिये दूर दूर तक उड़ कर जाते थे। वे उसके लिये ऐसे कपड़े लाये जैसे राजकुमारियाँ पहनती हैं। कीमती गहने ले कर आये। और खेलने के लिये ऐसी बहुत सारी चीज़ें ले कर आये जो बहुत कीमती थीं और बहुत मुश्किल से मिलती थीं।

सूर्य बाई धीरे धीरे बड़ी होती गयी। अब वह **12** साल की हो गयी थी। एक दिन पति गरुड़ ने अपनी पत्नी गरुड़ से कहा — "प्रिये हमारी बेटी की उँगली में कोई हीरे की अँगूठी नहीं है जैसी कि राजकुमारियाँ पहनती हैं।"

पत्नी बोली — "हाँ यह तो है। पर वह हमें यहाँ तो मिलेगी नहीं। उसके लिये तो हमें बहुत दूर जाना पड़ेगा।"

पति बोला — "हॉ यह तो है। ऐसी ॲगूठी तो हमें लाल सागर के पास से पहले नहीं मिलेगी। और वहॉ जाने में तो **12** महीने लगेंगे। फिर भी हम वहॉ जायेंगे।"

सो दोनों गरुड़ों ने सूर्य बाई को अपने मजबूत घोंसले में छोड़ा, घर में **12** महीने का खाना पीना छोड़ा ताकि सूर्य बाई भूखी न रहे एक कुत्ता और एक बिल्ली छोड़े जो उसकी देखभाल करें और उधर चल दिये।

जब गरुड़ वहॉ से चले गये तो एक दिन शैतान बिल्ली ने भंडार में से कुछ खाना चुरा लिया। सूर्य बाई ने ने उसे इस काम के लिये सजा दी। उसे मारा। बिल्ली को उसका मारना अच्छा नहीं लगा बल्कि उसे इस बात पर भी गुस्सा आ रहा था कि उसकी चोरी पकड़ी गयी थी।

सो बदला लेने के लिये वह आग की जगह भागी और जा कर आग बुझा दी। वे लोग हमेशा अपने घर में आग जला कर रखते थे। अब क्योंकि सूर्य बाई कभी पेड़ से नीचे उतरी नहीं थी और अगर आग घर में नहीं रहती तो वह अपना खाना कैसे पकाती।

जब सूर्य बाई ने यह देखा तो वह बहुत दुखी हो गयी क्योंकि अब तो बिल्ली ने आखिरी पकाया हुआ खाना भी खत्म कर दिया था और अब उसे पता नहीं था कि वह खाने के लिये

क्या करे। सूर्य बाई तीन दिन तक इस बारे में परेशान रही। सूर्य बाई कुत्ता और बिल्ली तीनों ने ही कुछ नहीं खाया था।

आखिर उसने सोचा कि वह घोंसले के किनारे पर चढ़ेगी और वहाँ से चारों ओर देखेगी कि देश में कहीं उसको आग दिखायी दे जाये। और अगर उसको कहीं आग दिखायी दे गयी तो वह वहाँ जा कर उन लोगों से थोड़ी सी आग माँगेगी जिन्होंने उसे जलाया है। फिर उससे अपना खाना पकायेगी।

उसने ऐसा ही किया। वह घोंसले के किनारे पर चढ़ी और चारों तरफ देखा तो काफी दूर पर क्षितिज के पास उसको धुँए की एक पतली सी लकीर उठती दिखायी दी। सो वह पेड़ से नीचे उतरी और उस दिशा की तरफ चल दी जिधर वह धुँआ उठ रहा था।

वहाँ पहुँचते पहुँचते उसे शाम हो गयी। उसने देखा कि वह धुँआ तो एक झोंपड़ी में से उठ रहा था। वह अन्दर गयी तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बुढ़िया आग पर अपने हाथ गर्म कर रही थी।

अब सूर्य बाई को यह पता ही नहीं था कि वह एक राक्षसों के देश में पहुँच गयी थी और यह बुढ़िया और कोई नहीं बल्कि एक नीच राक्षसी थी जो अपनी इस छोटी सी झोंपड़ी में अपने बेटे के साथ रहती थी।

उस समय उसका बेटा बाहर गया हुआ था। जब बुढ़िया ने लड़की को आते देखा तो वह उसको देख कर हैरान रह गयी क्योंकि वह लड़की तो सूरज जैसी चमकीली थी। उसकी पोशाक बिल्कुल शाही पोशाक जैसी शानदार थी जवाहरातों से जड़ी हुई।

उसने अपने मन में सोचा "यह बच्ची कितनी प्यारी है। यह तो खाने में भी बहुत स्वाद होगी। काश अगर मेरा बेटा यहाँ होता तो हम इसको मार कर उबाल कर खा लेते। ठीक है मैं इसको तब तक बातों में लगा कर रखती हूँ जब तक मेरा बेटा आता है।"

फिर उसने सूर्य बाई की तरफ देखा और बोली — "बेटी तुम कौन हो और तुम्हें क्या चाहिये?"

सूर्य बाई बोली — "मैं बड़े गरुड़ों की बेटी हूँ। वे लोग अभी बहुत दूर गये हैं मेरे लिये हीरे की अँगूठी लाने के लिये। और मेरे घोंसले में आग बुझ गयी है सो मैं यहाँ आपसे थोड़ी सी आग लेने आयी हूँ। मेहरबानी कर के मुझे थोड़ी सी आग दे दीजिये।"

राक्षसी बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं पर पहले तुम मेरा थोड़ा सा चावल कूट दो। क्योंकि मैं बहुत बुढ़िया हूँ और मेरे कोई बेटी नहीं है जो मेरी सहायता करे।"

सो सूर्य बाई उसका चावल कूटने बैठ गयी। उसका चावल कूटना तो खत्म हो गया पर तब तक बुढ़िया का बेटा लौट कर वापस नहीं आया था।

अब बुढ़िया क्या करे। उसने बहुत ही नर्म शब्दों में कहा — "बेटी। तुम तो बहुत अच्छी हो ज़रा मेरा यह अनाज और पीस दो क्योंकि मुझ जैसी बुढ़िया के हाथों के लिये यह थोड़ा मुश्किल काम है।" सो वह उसका अनाज पीसने बैठ गयी। उसका अनाज भी पिस गया पर फिर भी राक्षसी का बेटा नहीं आया।

राक्षसी फिर बोली — "पहले मेरा घर और साफ कर दो फिर मैं तुम्हें आग दे दूँगी।" सो सूर्य बाई ने उसका घर भी साफ कर दिया पर फिर भी राक्षसी का बेटा नहीं आया। सूर्य बाई ने उसका घर साफ कर के उससे कहा कि अब वह उसको आग दे दे उसे घर जाना है।

इस पर राक्षसी बोली — "तुमको घर जाने की इतनी जल्दी क्या है। मुझे कुँए से थोड़ा सा पानी और खींच कर ला दो तब तुम अपनी आग ले लेना।"

वह बेचारी पानी खींचने भी चली गयी। पानी खींचने के बाद सूर्य बाई ने उससे कहा — "मैंने आपका कहा हुआ सारा

काम कर दिया अब तो मुझे मेहरबानी कर के आग दे दीजिये नहीं तो फिर मैं उसे ढूँढने के लिये और कहीं जाती हूँ।"

बुढ़िया राक्षसी यह सुन कर बहुत दुखी हुई क्योंकि उसका बेटा अभी तक घर लौट कर नहीं आया था। अब वह सूर्य बाई को अपने पास और ज़्यादा नहीं रोक सकती थी।

सो उसने उससे कहा — "लो तुम अपनी आग लो और शान्ति से जाओ। साथ में यह भुना हुआ मक्का भी लेती जाओ। तुम इसे जब जाओ तो अपने रास्ते पर बिखेरती जाना यह हमारे घर से तुम्हारे घर तक का रास्ता सुन्दर बनायेगा।" ऐसा कह कर उसने सूर्य बाई को कई मुट्ठी भर कर भुना मक्का दे दिया।

लड़की को कोई डर नहीं लगा सो उसने वह सब ले लिया। जब वह घर वापस जाने लगी तो उस अनाज को वह रास्ते पर बिखेरती गयी। वह वापस अपने घोंसले में चढ़ गयी और अपने सातों लोहे के दरवाजे बन्द कर लिये।

फिर उसने आग जलायी खाना पकाया खुद खाया और थोड़ा थोड़ा बिल्ली और कुत्ते को भी दिया। खा पी कर वह सोने चली गयी।

उधर जैसे ही सूर्य बाई वहाँ से चली बुढ़िया राक्षसी का बेटा घर आ गया। उसकी माँ ने उससे कहा — "उफ़ उफ़। तुम

इससे पहले क्यों नहीं आये। यहाँ एक बहुत ही मीठा सा मेमना आया था और अब वह हमारे हाथ से निकल गया है।" फिर उसने सूर्य बाई के बारे में उसको सब कुछ बता दिया।

बेटा बोला — "बस तुम मुझे यह बता दो कि किधर की तरफ गयी वह और मैं उसे सुबह से पहले ही ले आऊँगा।"

उसकी माँ ने उसे बताया कि उसने सूर्य बाई को भुना हुआ मक्का दिया था कि वह जाते समय सड़क पर बिखराती जाये। यह सुन कर वह उन भुने हुए मक्का के दानों के पीछे पीछे भागता हुआ उसी पेड़ के नीचे आ गया जिस पेड़ पर सूर्य बाई रहती थी।

वहाँ पहुँच कर उसने ऊपर की तरफ देखा तो देखा कि उस पेड़ पर ऊपर की तरफ एक घोंसला बना हुआ है। वह तुरन्त ही पेड़ के ऊपर चढ़ गया और घोंसले के बाहरी दरवाजे पर आ पहुँचा।

उसने उसको हिलाया और हिलाया और हिलाया पर वह उसके अन्दर नहीं जा सका क्योंकि सूर्य बाई ने अन्दर से उसकी चटखनी लगा रखी थी।

सो वह बोला — "बच्ची मुझे अन्दर आने दे। मुझे अन्दर आने दे। मैं बड़ा गरुड़ हूँ। मैं बहुत दूर से आया हूँ और तेरे

लिये बहुत सारे कीमती जवाहरात लाया हूँ। और यह एक हीरे की अँगूठी भी है तेरी छोटी सी उँगली के लिये।"

पर सूर्य बाई को यह सब कुछ सुनायी नहीं पड़ा वह तो गहरी नींद सोयी हुई थी। सो राक्षसी के बेटे ने एक बार फिर दरवाजा तोड़ने की कोशिश की पर वह उसके लिये बहुत मजबूत था। इस कोशिश में उसकी छोटी उँगली का एक नाखून टूट गया।

राक्षसों के नाखून बहुत ही जहरीले होते हैं। वह टूटा हुआ नाखून उसने दरवाजे में ही लगा छोड़ दिया और वहाँ से चला गया।

सुबह को जब सूर्य बाई उठी तो उसने नीचे दुनियाँ देखने के लिये अपना दरवाजा खोला। जब वह सातवें दरवाजे पर आयी तो उसे खोलते समय उसकी उँगली में कोई तेज़ चीज़ चुभ गयी और वह तुरन्त ही मर कर नीचे गिर पड़ी।

इत्तफाक से उसी समय दोनों बूढ़े गरुड़ अपनी **12** महीने की यात्रा कर के घर वापस आ गये। वह अपनी प्यारी बेटी के लिये लाल सागर से एक बहुत सुन्दर हीरे की अँगूठी लाये थे।

उन्होंने देखा कि वह तो घोंसले के दरवाजे पर मरी पड़ी है। वह अभी भी उतनी ही सुन्दर लग रही थी पर ठंडी और मरी हुई थी।

गरुड़ यह दृश्य नहीं देख सके। उन्होंने वह अँगूठी उसकी छोटी उँगली में पहनायी और वहाँ से ज़ोर ज़ोर से रोते हुए फिर कभी न आने के लिये चले गये।

इत्तफाक की बात है कि तभी वहाँ से एक बहुत बड़ा राजा गुजरा जो उस जंगल में शिकार खेलने निकला था। उसके साथ बाज़ और शिकारी कुत्ते भी थे। उसके साथ उसके नौकर चाकर और घोड़े भी थे।

उन्होंने उसी पेड़ के नीचे अपना कैम्प लगा दिया जिस पर गरुड़ों का घोंसला था। उसने ऊपर देखा तो उसे एक अजीब सा घर दिखायी दिया। उसने यह देखने के लिये तुरन्त ही अपने नौकरों को ऊपर भेजा कि वे यह देख कर आयें कि वह क्या है।

वे तुरन्त ही ऊपर गये और तुरन्त ही उसे देख कर नीचे आ गये। उन्होंने बताया कि वह अजीब सी चीज़ एक पिंजरा सा थी जिसमें सात लोहे के दरवाजे लगे हुए थे। उसके बाहरी दरवाजे पर एक बहुत सुन्दर लड़की जिसने बहुत कीमती कपड़े पहने हुए हैं मरी पड़ी है। उसके पास एक कुत्ता और एक बिल्ली खड़े हैं।

राजा बोला कि वे उन सबको नीचे ले कर आयें। वे उन सबको ले कर आये तो वह सूर्य बाई को देख कर बहुत दुखी हुआ कि वह मर गयी है। उसने यह देखने के लिये उसका हाथ अपने हाथ में लिया कि वह अभी मुलायम था या अकड़ चुका था।

उसने देखा कि वह तो अभी भी मुलायम था। इसके अलावा उसका शरीर अभी भी गर्म था। राजा ने उसका हाथ फिर से देखा तो उसने देखा कि उसके हाथ में कोई तेज़ चीज़ चुभी हुई थी। ऐसा लगता था जैसे कोई कॉटा हो और वह उसकी हथेली में आर पार चला गया हो।

राजा ने वह कॉटा उसकी हथेली से खींच कर निकाल दिया। जैसे ही उसने उसे निकाला कि सूर्य बाई ज़िन्दा हो उठी। उठते ही वह चिल्लायी "मैं कहाँ हूँ? और आप कौन हैं? क्या यह सपना है या सच है?"

राजा बोला — "ओ सुन्दर लड़की। यह सब सच है। मैं पास के देश का एक राजा हूँ पर तुम बताओ कि तुम कौन हो।"

सूर्य बाई बोली — "मैं एक गरुड़ की बच्ची हूँ।"

यह सुनते ही राजा की हँसी छूट गयी। वह बोला — "नहीं नहीं। यह नहीं हो सकता। तुम तो कोई राजकुमारी लगती हो।"

सूर्य बाई बोली — "नहीं मैं किसी शाही परिवार से नहीं हूँ। मैं सच कह रही हूँ। मैं सारी ज़िन्दगी यहीं इसी पेड़ पर रहती रही हूँ। मैं गरुड़ की ही बच्ची हूँ।"

राजा ने पूछा — "अगर तुम राजकुमारी की तरह पैदा नहीं हुई तो क्या हुआ मैं तुम्हें राजकुमारी बना दूँगा। बस तुम एक बार कह दो कि तुम मेरी रानी बनोगी।" सूर्य बाई राजी हो गयी। राजा उसको अपने राज्य ले गया और उसको अपनी रानी बना लिया।

पर सूर्य बाई उसकी अकेली रानी नहीं थी। उसके एक रानी और पहले से थी। वह सूर्य बाई से बहुत जलती थी।

राजा ने सूर्य बाई को बहुत सारे भरोसे वाले नौकर नौकरानियाँ दे रखे थे जो उसके साथ रहते थे और उसकी रक्षा करते थे। उनमें से एक बुढ़िया थी जो उसको सबसे ज़्यादा प्यार करती थी।

वह उससे कहती कि बड़ी रानी से इतनी ज़्यादा दोस्ती मत करो क्योंकि वह तुम्हारा भला तो नहीं ही चाहती बल्कि उसके पास तुम्हें नुकसान पहुँचाने की भी ताकत है। हो सकता है कि

किसी दिन वह तुम्हें जहर दे दे या किसी और तरह से तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाने की कोशिश करे।

पर सूर्य बाई उससे हमेशा यही कहती — "यह बेकार की बात है। इसमें इतना डरने की क्या जरूरत है। हम लोग दो बहिनों की तरह एक साथ प्यार से क्यों नहीं रह सकते।"

यह सुन कर बुढ़िया कहती — "भगवान करे तुम्हारा विश्वास सही हो। मैं प्रार्थना करूँगी कि मेरा शक झूठा साबित हो।"

सो सूर्य बाई अक्सर ही बड़ी रानी से मिलने जाया करती थी और बड़ी रानी भी उससे मिलने आया करती थी।

एक दिन वे महल के आँगन में एक तालाब के पास खड़ी थीं जहाँ राजा के लोग नहाने के लिये आया करते थे। बड़ी रानी ने सूर्य बाई से कहा — "तुम्हारे पास कितने सुन्दर गहने हैं। क्या मैं भी इनको थोड़ी देर के लिये पहन कर देख सकती हूँ कि मैं इन गहनों में कैसी लगती हूँ।"

वह बुढ़िया सूर्य बाई के पास ही खड़ी थी। उसने सूर्य बाई से फुसफुसाते हुए कहा — "तुम अपने गहने इनको मत देना।"

पर सूर्य बाई ने उसे प्यार से झिड़क दिया — "चुप। तुम तो बहुत ही बेवकूफ हो।" और उसने अपने गहने बड़ी रानी को दे दिये।

बड़ी रानी बोली — "तुम्हारी ये चीज़ें कितनी सुन्दर हैं। क्या तुमको नहीं लगता कि ये मेरे ऊपर ज़्यादा अच्छी लग रही हैं। चलो तालाब की तरफ चलते हैं। तालाब का पानी शीशे की तरह साफ है। मैं उसमें जा कर अपनी परछाईं देखूँगी कि साफ पानी में ये गहने कितने सुन्दर दिखायी देते हैं।"

बुढ़िया यह सुन कर तो बहुत ही डर गयी और सूर्य बाई से बोली कि वह उस तालाब के पास न जाये। पर सूर्य बाई ने उससे कहा कि — "चुप रहो। मैं अपनी बहिन पर अविश्वास नहीं करूँगी।" और वह उसके साथ तालाब चली गयी।

फिर जब वहाँ आसपास कोई नहीं था और दोनों तालाब में अपनी अपनी परछाईं देख रही थीं बड़ी रानी ने सूर्य बाई को तालाब में धक्का दे दिया।

सूर्य बाई पानी में डूबती चली गयी और अन्त में डूब गयी। जहाँ सूर्य बाई गिरी थी वहाँ एक सुनहरा चमकीला सूरजमुखी उग आया।

कुछ देर बाद राजा आया तो उसने सूर्य बाई के बारे में पूछा कि वह कहाँ थी पर वह तो कहीं मिली नहीं। राजा गुस्से में भरा हुआ अपनी बड़ी रानी के पास आया और उससे पूछा — "बताओ बच्ची कहा है? क्या तुमने उसे कहीं फेंक दिया है?"

पर वह बोली — "आप मेरे साथ गलत कर रहे हैं। मुझे उसके बारे में कुछ नहीं पता। बेशक जो बुढ़िया आपने उसके साथ हमेशा के लिये तैनात की है उसी ने उसके साथ कुछ किया होगा।" सो राजा ने उस बुढ़िया को जेल में डालने का हुक्म दे दिया।

राजा ने सूर्य बाई के सुन्दर चेहरे को बहुत भुलाने की कोशिश की पर वह उसे भुला न सका। वह जहाँ कहीं भी जाता वह उसको वहीं दिखायी देती। जो कुछ भी वह सुनता उसमें उसको उसी की आवाज सुनायी देती।

वह रोज परेशान रहता। वह न खाता था न पीता था। अपनी दूसरी रानी से वह इस बारे में बात भी नहीं कर सकता था। उसकी जनता को लग रहा था कि बस अब तो वह मर ही जायेगा।

जब राजा की ऐसी दशा थी तो एक दिन वह तालाब के किनारे घूमने पहुँच गया। वहाँ वह तालाब के पानी में झाँकने लगा तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके पास ही तालाब के पानी में से एक बहुत ही शाही फूल उगा हुआ था। जैसे ही उसने उसे देखा तो उस फूल ने धीरे से अपना सिर झुकाया और उसकी तरफ झुक गया।

उसको इस तरह झुकते देख कर राजा का दिल पिघल गया। उसने उसकी पंखुरियों को चूम लिया और बुदबुदाया "ओह यह फूल तो मुझे मेरी पत्नी की याद दिला रहा है। यह बहुत अच्छा है। यह उतना ही सुन्दर और कोमल है जितनी कि वह थी।" अब वह रोज उधर जाता तालाब के पास बैठ जाता और फूल को देखता रहता।

जब बड़ी रानी ने यह सुना तो उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि उस सूरजमुखी के फूल के पौधे को उखाड़ दिया जाये और उसे जंगल में बहुत दूर ले जा कर जला दिया जाये। ऐसा ही किया गया।

अगली बार जब राजा तालाब के पास गया तो उसने देखा कि उसका सूरजमुखी का फूल तो वहाँ है नहीं। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ पर यह कहने की किसी की हिम्मत नहीं हुई कि यह किसने किया है।

उधर जंगल में जहाँ सूरजमुखी के पेड़ की राख फेंकी गयी थी वहाँ आम का एक पेड़ उग आया – लम्बा और सीधा। वह बहुत जल्दी जल्दी बढ़ने लगा और कुछ ही दिनों में इतना सुन्दर पेड़ हो गया कि वह सारे देश की शान हो गया।

आखिर उसकी सबसे ऊँची शाख पर एक बहुत सुन्दर फूल खिला। फूल खिल कर नीचे गिर गया और उसमें से एक आम

निकला जो दिन पर दिन बढ़ता ही गया। देखने में वह इतना सुन्दर लगता था कि दूर और पास से बहुत सारे लोग उसको देखने के लिये आने लगे। पर उसको तोड़ने की किसी ने हिम्मत नहीं की क्योंकि वह केवल राजा के लिये ही था।

एक दिन वह गरीब दूध वाली यानी सूर्य बाई की माँ अपने दिन के काम को पूरा कर के घर वापस जा रही थी। उसके पास खाली दूध के डिब्बे थे। बाजार दूर होने से चलते चलते वह थक गयी थी सो वह उस आम के पेड़ के नीचे सुस्ताने के लिये लेट गयी और ठंडी हवा लगी तो सो गयी।

कि अचानक उसके सबसे बड़े दूध के डिब्बे में वह आम टूट कर गिर पड़ा। जब वह स्त्री जागी और उसने देखा कि क्या हो गया था तो वह तो बहुत डर गयी।

वह अपने मन में सोचने लगी "अगर कोई मुझे इस आश्चर्यजनक फल के साथ देख लेगा जिस पर राजा के बहुत सारे लोग हफ्तों से पहरा दे रहे हैं तो वह तो यही समझेगा न कि मैंने उसे चुराया है। कोई मेरा विश्वास ही नहीं करेगा कि मैंने उसे नहीं चुराया। फिर वे लोग मुझे जेल में डाल देंगे।

पर यहाँ से इस तरीके से जाना भी उचित नहीं है। यह तो मेरे दूध के डिब्बे में अपने आप ही गिर पड़ा है। इसलिये मैं इस

फल को जितना अधिक छिपा कर घर ले जा सकती हूँ ले जाती हूँ और फिर मैं इसे अपने बच्चों के साथ खाऊँगी।"

ऐसा सोच कर दूध वाली ने उस आम वाले डिब्बे को ढक लिया और जल्दी जल्दी घर की ओर चली।

घर पहुँच कर उसने उस दूध के डिब्बे को घर के एक कोने में रख दिया और उसके ऊपर कई दूध के डिब्बे रख दिये। जब अँधेरा हो गया तो उसने अपने पति और सबसे बड़े बेटे को बुलाया और बोली — "पता ही आज मेरे साथ कितनी अच्छी बात हुई।"

वे बोले — "नहीं तो। हमें नहीं पता। क्या हुआ।"

वह बोली — "मैं उस आम के पेड़ के नीचे सो रही थी कि वह आम मेरे दूध के डिब्बे में अपने आप ही आ कर गिर गया। मैं उसको अपने साथ घर ले आयी। वह सबसे नीचे वाले डिब्बे में है। प्रिय जाओ और सब बच्चों को बुला लाओ ताकि सभी उस आम की एक एक फॉक खा सकें।

और बेटे तुम वह डिब्बा निकाल लाओ जिसमें आम रखा है और जो सबसे नीचे रखा है।"

जब उसका बेटा सबसे नीचे वाले डिब्बे तक पहुँचा तो बोला — "मॉ तुम मजाक कर रही हो। शायद जब तुमने हमसे इसके बारे में कहा था तब यहॉ आम था।"

माँ तुरन्त ही बात काट कर बोली — "नहीं नहीं वहाँ आम है। मैंने उसको एक घंटा पहले खुद अपने हाथों से रखा था।"

उसका बेटा बोला — "पर अब तो यहाँ कुछ और ही है। आ कर देखो तो।"

दूध वाली उस ओर दौड़ी और उस सबसे नीचे वाले डिब्बे में उसने आम नहीं देखा बल्कि उसमें तो एक बहुत ही छोटी सी बच्ची खड़ी थी जो आम से बड़ी नहीं थी। उसकी पोशाक लाल और सुनहरी थी जो बहुत ही कीमती थी। उसके सिर पर सूरज की तरह एक रत्न चमक रहा था।

माँ बोली — "यह तो बड़ी अजीब बात है। मैंने तो अपनी पूरी ज़िन्दगी में ऐसा कभी नहीं सुना। पर अब क्योंकि इसको हमारे पास भेजा गया है तो मैं इसका अपनी बच्ची की तरह से लालन पालन करूँगी।

वह छोटी बच्ची दिन ब दिन बढ़ने लगी। यहाँ तक कि वह एक साधारण स्त्री के बराबर लम्बी हो गयी। वह बहुत कोमल और प्यारी थी पर वह हमेशा बहुत उदास और चुप रहती। उसने बताया कि उसका नाम सूर्य बाई था।

बच्चे उसके बारे में जानने के लिये बहुत उत्सुक थे पर वह दूध वाली और उसका पति दोनों ही उनको इसके लिये चिढ़ाने का मौका नहीं देते कि वह कौन है।

उसने अपने बच्चों से कहा — "थोड़ा इन्तजार करो। धीरे धीरे जब वह हमें अच्छी तरह जान जायेगी तो वह हमें अपनी कहानी अपने आप ही बता देगी।"

अब एक दिन ऐसा हुआ कि सूर्य बाई दूध वाली के लिये कुँए से पानी भर रही थी तो राजा उधर से गुजरा। उसने सूर्य बाई को देखा तो चिल्लाया — "वह रही मेरी पत्नी। वह रही मेरी पत्नी।"

उधर सूर्य बाई घोड़ों की टापों की आवाज सुन कर डर गयी थी सो वह वहाँ से अपने घर की तरफ जितनी जल्दी वह भाग सकती थी भाग ली। यह देख कर राजा भी उसके पीछे पीछे भाग लिया। पर जब राजा उसके घर तक पहुँचा तो वहाँ उसको दरवाजे पर केवल दूध वाली ही दिखायी दी।

राजा उससे बोला — "उसे मुझे दे दो। तुमको उसे अपने पास रखने का कोई अधिकार नहीं है। वह मेरी है।"

पर दूध वाली बोली — "क्या आपका दिमाग फिर गया है। मुझे नहीं मालूम कि आप क्या कह रहे हैं।"

राजा बोला — "मुझे धोखा देने की कोशिश मत करो। मैंने अपनी पत्नी को इस घर के दरवाजे के अन्दर जाते हुए देखा है। वह जरूर ही इस घर में है।"

बुढ़िया चिल्लायी — “आपकी पत्नी? आपकी पत्नी? यानी कि मेरी बेटी जो अभी अभी कुॅए से आयी है? आप क्या समझते है कि मैं आपके कहने पर आपको अपनी बेटी दे दूॅगी?

आप राजा अपने महल में हैं तो मैं अपने घर की राजा हूॅ। पर मैं अपनी छोटी सी बेटी को आपके कहने पर आपको नहीं दे दूॅगी। आप यहॉ से जाइये वरना में आपकी दाढ़ी खींच लूॅगी।”

ऐसा कह कर उसने एक लम्बी सी डंडी उठा ली और उससे राजा को मारा और फिर सहायता के लिये अपने पति और बेटों को पुकारने लगी। वे तुरन्त ही उसकी सहायता के लिये आ गये।

राजा ने देखा कि मामला तो उसके खिलाफ जा रहा था। उसे खुद को भी यकीन नहीं था कि कुॅए पर उसने सूर्य बाई को ही देखा था या फिर इस बुढ़िया की बेटी को सो वह अपने सिपाहियों के साथ अपने महल को लौट गया।

पर उसने निश्चय कर लिया था कि वह इस मामले को सुलझा कर ही रहेगा।

इस बारे में उसका पहला कदम था सूर्य बाई की बूढ़ी नौकरानी के पास जाना। वह अभी भी जेल में पड़ी हुई थी। उससे मिल कर उसे पता चला कि वह सूर्य बाई की मौत के बारे

में बिल्कुल अनजान नहीं थी बल्कि उसको यकीन था कि उसको बड़ी रानी ने ही मारा था।

सो उसने बुढ़िया को आजाद छोड़ देने का हुक्म दे दिया पर फिर भी उसको ऊपर एक निगाह रखने के लिये कहा। उसने उससे कहा कि अगर तुम अपनी पुरानी मालकिन को प्यार करती हो तो इसका सबूत दो।

तुम उस दूध वाली के घर जाओ और उसके परिवार के बारे में जितनी खबर ला सकती हो ले कर आओ – खास कर के उस लड़की के बारे में जिसे उसने कुँए से लौटते देखा था।

सो वह नौकरानी उस दूध वाली के घर गयी और उससे दोस्ती कर ली। उसने उससे कुछ दूध खरीदा और फिर बातें करती रही। ऐसा उसने कई बार किया। कुछ दिन बाद दूध वाली को उस पर कोई शक नहीं रहा और वह उसके साथ नम्र हो गयी।

सूर्य बाई की नौकरानी ने उसे बताया कि किस तरह वह मरी हुई रानी की दासी थी और किस तरह राजा ने उसको उसकी मालकिन की मौत के बाद जेल में डाल दिया था।

इसके बदले में दूध वाली ने बुढ़िया को बताया कि जब वह आम के पेड़ के नीचे सो रही थी तो किस तरह से वह आश्चर्य जनक आम उसके खाली दूध के डिब्बे में आ गिरा था। और

फिर कैसे वह आम जादू से एक घंटे के अन्दर ही एक बच्ची में बदल गया।

उसने आगे कहा — "मुझे तो यह आश्चर्य है कि उसने बजाय किसी और के घर के मुझ गरीब का घर ही आने के लिये क्यों चुना।"

सूर्य बाई की दासी ने पूछा — "क्या आपने कभी उससे उसकी बीती हुई ज़िन्दगी के बारे में पूछा। हो सकता है कि अब वह आपको उसे कहने से न हिचकिचाये।"

सो दूध वाली ने अपनी बेटी को पुकारा और जैसे ही रानी की दासी ने उसे देखा वह जान गयी कि वह सूर्य बाई ही थी और कोई नहीं। यह देख कर उसका दिल खुशी से उछलने लगा पर वह चुपचाप बैठी रही।

पर वह भी उसको देख कर बहुत आश्चर्य में थी क्योंकि उसको पता था कि सूर्य बाई तो तालाब में डूब कर मर चुकी है।

दूध वाली ने सूर्य बाई की तरफ मुँह किया और बोली — "बेटी। अब तो तुम हमारे साथ काफी रह ली हो और मेरी प्यारी बेटी भी बन गयी हो पर मैंने कभी तुम्हारी बीती हुई ज़िन्दगी के बारे में नहीं पूछा। और मैंने भी तुमसे उसके बारे में इस डर से नहीं पूछा कि कहीं वह दुख भरा न हो।

पर अगर तुम अब ठीक समझती हो तो मुझे उसके बारे में कुछ बताओ। मैं सुनना चाहती हूँ।"

सूर्य बाई बोली — "माँ तुम ठीक कहती हो। मेरी कहानी बड़ी दुख भरी है। मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारी तरह से मेरी माँ एक दूध बेचने वाली थी। एक दिन जब मैं बहुत ही छोटी बच्ची थी तो दूध बेचने के लिये बाजार जाते समय वह मुझे अपने साथ ले गयी।

रास्ते में थक जाने से वह सुस्ताने के लिये नीचे बैठ गयी और उसने मुझे भी जमीन पर ही बिठा दिया। कि अचानक एक बहुत बड़ा गरुड़ आया और मुझे अपने पंजे में पकड़ कर ले गया। पर मैं अपने माता पिता के बारे में बस यही जानती हूँ कि वे गरुड़ थे।"

यह सुन कर तो दूध वाली बहुत खुश हो गयी। वह चिल्लायी — "आह मेरी बच्ची मेरी बच्ची। मैं ही तेरी माँ हूँ। मेरे ही पास से वह गरुड़ तुझे ले कर भागा था। तू मेरी सबसे बड़ी बेटी है। कितने सालों बाद मैंने तुझे पाया है।"

वह तुरन्त ही वहाँ से उठ कर अन्दर भागी गयी और यह खबर सुनाने के लिये अपने पति और बच्चों को बुला लायी। सबने मिल कर बहुत खुशियाँ मनायीं।

जब सब कुछ शान्त हुआ सूर्य बाई की माँ ने उससे कहा — "बेटी बताओ कि जबसे गरुड़ तुमको उठा कर ले गया था तबसे तुम्हारी ज़िन्दगी कैसे बीती।"

सूर्य बाई बोली — "वे बड़े गरुड़ मुझे यहाँ से अपने घोंसले में ले गये। मैं वहाँ कई साल खुश खुश रही। उनको मेरे लिये कीमती कीमती चीज़ें लाने का बहुत शौक था।

आखिर एक दिन वे दोनों मेरे लिये एक हीरे की अँगूठी लाने के लिये लाल सागर गये। पर जब वे गये हुए हुए थे तो मेरे घोंसले में आग बुझ गयी। सो मैं बाहर आग लाने गयी और एक बुढ़िया के घर पहुँच गयी। वहाँ मैंने उससे आग माँगी उसने आग दे दी।

पर पता नहीं अगले दिन क्या हुआ कि मैंने जब अपने घोंसले का दरवाजा खोला तो कोई तेज़ चीज़ मेरे हाथ में चुभ गयी और मैं बेहोश हो गयी।

मुझे नहीं पता मैं कितनी देर तक बेहोश रही पर जब मैं होश में आयी तो मुझे लगा कि गरुड़ लोग वापस आ गये थे। उनको लगा कि मैं मर गयी थी सो वे चले गये। ऐसा मुझे इसलिये लगा क्योंकि मेरी हीरे की अँगूठी मेरी छोटी उँगली में थी।

बहुत सारे लोग मुझे देख रहे थे। और उनमें से एक था राजा जो मुझे अपने साथ अपने घर ले गया और अपनी रानी बना लिया। पर उसकी पहली रानी मुझसे बहुत नफरत करती थी क्योंकि वह मुझसे जलती थी।

वह मुझे मारना चाहती थी। एक दिन वह अपने उद्देश्य में सफल हो गयी। एक दिन उसने मुझे तालाब में धक्का दे कर डुबो कर मार दिया। क्योंकि मैं छोटी थी और बेवकूफ थी।

मैंने अपनी वफादार दासी की चेतावनी नहीं सुनी जिसने मुझसे मना किया था कि मैं वहाँ न जाऊँ। अगर मैंने उसकी बात मान ली होती तो मैं अभी भी खुश होती।”

यह सुन कर उसकी दासी जो पीछे बैठी हुई थी उठी और दौड़ कर उसके पैर चूमती हुई बोली — “ओह मेरी रानी ओह मेरी रानी। आखिर मैंने आपको ढूँढ ही लिया।” इसके बाद वह आगे बिना कुछ बोले वहाँ से भाग ली और राजा के पास यह बताने के लिये सीधी महल पहुँची कि उसने रानी को ढूँढ लिया है।

तब सूर्य बाई ने अपने माता पिता को बताया कि वह कैसे हुआ कि तालाब में डूबने से वह पूरी तरह से नहीं मरी। वह एक सूरजमुखी का फूल बन गयी।

फिर राजा का उस फूल के प्रति प्रेम देख कर बड़ी रानी ने कैसे उसको जंगल में फिंकवा दिया। फिर कैसे उस फूल की राख से एक आम का पेड़ पैदा हुआ। फिर कैसे जब वह पेड़ बड़ा हो गया तो उसकी सारी आत्मा उस पेड़ के फूल में चली गयी।

आखीर में उसने बताया कि जब वह फूल फल बन गया तो मुझे पता नहीं किस इच्छा के वश में आ कर मैंने अपने आपको आपके दूध के डिब्बे में गिरा दिया।

शायद यही मेरी किस्मत थी। सो जब तुम मुझे अपने घर ले आईं तो फिर मैंने अपना आदमी का रूप रखना शुरू किया।"

उसकी माँ और भाई बहिनों ने पूछा — "तुमने राजा को नहीं बताया कि तुम ज़िन्दा हो और तुम्हीं सूर्य बाई हो।"

सूर्य बाई बोली — "अफसोस यह मैं नहीं कर सकी। कौन जानता है कि राजा अब बड़ी रानी के असर में हों तो वह भी मेरी मौत की इच्छा कर रहे हों। मुझे अपनी तरह से गरीब ही रहने दो कम से कम मैं खतरे से सुरक्षित तो हूँ।"

उसकी माँ बोली — "ओह मैं भी कितनी बेवकूफ हूँ। एक दिन राजा साहब तुम्हें ढूँढते हुए यहाँ आये थे। पर मैंने और तुम्हारे पिता और भाइयों ने उन्हें भगा दिया क्योंकि हमें पता ही नहीं था कि तुम ही वह खोयी हुई रानी हो।"

जैसे ही उसने अपनी बात खत्म की तो उन सबको घोड़ों की टापों की आवाज सुनायी पड़ी। क्योंकि रानी की बूढ़ी दासी से सूर्य बाई के ज़िन्दा होने की खबर सुन कर राजा वहाँ खुद दौड़े हुए चले आये थे।

राजा अपनी खोयी हुई रानी को वहाँ पा कर कितना खुश हुआ होगा यह शब्दों में नहीं बताया जा सकता पर वह खुशी सूर्य बाई की उस खुशी से अधिक नहीं थी जो उसको राजा को पाने पर हुई।

राजा ने सूर्य बाई की माँ दूध वाली से कहा — "तुमने मुझे सच नहीं बताया कि जो तुम्हारी झोंपड़ी में थी वह सचमुच में मेरी पत्नी ही थी।"

दूध वाली बोली — "जी हाँ ओ हम गरीबों के रक्षक। पर वह मेरी भी बेटी थी।" तब उन्होंने बताया कि किस तरह से सूर्य बाई दूध वाली की बेटी थी।

यह सुन कर राजा ने सबको हुक्म दिया कि वे सब महल चलें। वहाँ पहुँच कर राजा ने सूर्य बाई के पिता को एक गाँव दे दिया और उन्हें अच्छी तरह से रखा।

फिर सूर्य बाई की दासी से कहा कि क्योंकि तुमने सूर्य बाई की बड़ी वफादारी से सेवा की है इसलिये आज से इस महल की देखभाल तुम करोगी।

उसने उसको बहुत सारा पैसा देते हुए कहा — "मैं तुम्हारी सेवाओं का कर्ज कभी नहीं चुका सकता और न तुम्हें बेकार में जेल में रखने के लिये कुछ दे सकता हूँ।"

दासी बोली — "सर आप तो गुस्से में भी मेरे लिये बहुत ही मुलायम थे। अगर आपने मुझे मौत की सजा भी दे दी होती जैसा कि और कोई राजा करता तो आपको आज यह अच्छा दिन देखने को न मिलता। इसलिये आपको अपने आपको धन्यवाद देना चाहिये।"

जिस जेल में रानी की दासी को डाला गया था नीच बड़ी रानी को ज़िन्दगी भर के लिये उसी जेल में डाल दिया गया। सूर्य बाई ज़िन्दगी भर अपने पति के साथ खुशी खुशी रही।

राजा ने सूरजमुखी के फूल की याद में अपने महल के चारों तरफ सूरजमुखी के फूलों के पौधों की एक हैज लगवा दी और आम का एक बागीचा लगवा दिया।

7 विक्रम महाराजा के कारनामे[18]

एक बार की बात है कि बहुत बड़े महाराज थे जिनका नाम विक्रम महाराजा था। उनका एक वज़ीर था जिसका नाम था बत्ती[19]। राजा और राजा का वज़ीर दोनों बचपन में ही अनाथ हो गये थे। तभी से वे एक साथ रहते भी थे। वे पढ़े लिखे भी एक साथ ही थे। वे एक दूसरे को भाइयों की तरह प्यार करते थे।

दोनों बहुत भले और दयालु थे। कोई भी राजा के पास आता था वह उनके पास से निराश नहीं लौटता था क्योंकि राजा को किसी को भी खाना कपड़ा देने में बहुत खुशी होती थी।

लेकिन जबकि वज़ीर के फैसले और अच्छे बुरे की जानकारी ज़्यादा अच्छी थी और वह एक होशियार आदमी था राजा अक्सर अपने विचारों को इधर उधर अपने तर्कों से भटका देता था। फिर भी उन लोगों के राज में राज्य खूब फल फूल रहा था।

राजा हर अच्छे भलाई के काम में लगा रहता और वज़ीर हर जल्दी के काम और न करने लायक काम में अड़ंगा लगाता था।

---

[18] Wanderings of Vicram Maharajah. (Tale No 7).

[19] Butti is a Hindi word which means “Light”

राजा विक्रम के राज्य से कुछ दूरी पर एक राज्य था जिसमें एक छोटी रानी रहती थी जिसका नाम था अनार रानी। उसके माता पिता अनार राज्य के राजा रानी थे।

उन्होंने अपनी बेटी अनार के लिये एक बहुत सुन्दर बागीचा बनवाया हुआ था। उस बागीचे के बीच में अनार का एक पेड़ था जिस पर तीन अनार लगे हुए थे।

वे तीनों अनार खुले हुए थे और हर अनार में एक एक पलंग पड़ा हुआ था। इनमें से एक अनार में अनार रानी सोया करती थी और दूसरे दो अनारों में जो उसके इधर उधर थे उसकी दो दासियाँ सोती थीं।

हर सुबह अनार का पेड़ अपनी शाखाऐं बहुत ही कोमलता से नीचे झुकाता उसके फल खुल जाते और अनार रानी अपनी दासियों के साथ खेलने के लिये बाहर निकल आती।

तीनों शाम तक उस पेड़ की छाया में खेलती रहतीं। शाम को वह पेड़ अपनी शाखाऐं फिर से झुकाता और वे सोने के लिये तीनों उन फलों के अन्दर चली जातीं और जा कर अपने अपने छोटे छोटे सोने वाले कमरों में जा कर सो जातीं।

बहुत सारे राजकुमारों ने अनार रानी से शादी करनी चाही क्योंकि वह धरती पर सबसे सुन्दर लड़की थी। उसके बाल रैवन

के पंख की तरह काले थे। उसकी आँखें हिरनी की आँखें जैसी थीं। उसके दाँत जैसे मोतियों की दो लड़ियाँ थीं। उसके गाल दो अनार की तरह से गुलाबी थे।

पर उसके पिता ने उसके बागीचे के चारों ओर तलवारों की सात हैजैज़ लगवा रखी थीं जिनकी वजह से किसी का अन्दर आना और बाहर जाना बहुत मुश्किल था।

साथ में राजा ने एक मुनादी भी पिटवा रखी थी कि उससे कोई शादी नहीं कर सकता था सिवाय उस आदमी के जो उस बागीचे में आ कर वे तीनों अनार न तोड़ ले जिनमें राजकुमारी और उसकी दासियाँ रहती थीं।

इस काम को करने के लिये बहुत सारे राजा और राजकुमारों ने अपनी पूरी पूरी कोशिश कर ली थी पर अभी तक कोई भी इस काम में सफल नहीं हो सका था।

कुछ तो तलवारों की पहली हैज ही पार नहीं कर पाये थे। कुछ जो थोड़े से और अच्छी किस्मत वाले थे उन्होंने दूसरी या तीसरी या चौथी या पाँचवी यहाँ तक कि छठी हैज भी पार कर ली थी पर वे सब या तो अपनी जान से हाथ धो बैठे थे या फिर सातवीं हैज पार नहीं कर पाये थे। अभी तक बागीचे में अन्दर आने में कोई भी सफल नहीं हुआ था।

विक्रम महाराजा के माता पिता ने मरने से पहले कुछ दूरी पर संगमरमर का एक मन्दिर बनवाया था। उसमें उन्होंने भगवान की सोने की मूर्ति स्थापित करवायी थी। पर समय के साथ साथ वहाँ सब जगह कैक्टस[20] का जंगल उग आया था और अब उसको कहीं देखा भी नहीं जा सकता था।

एक दिन वजीर बत्ती ने महाराज विक्रम से कहा — "हमारे माता पिता ने इतनी मेहनत सो और पैसा लगा कर यह मन्दिर बनवाया था पर यह तो जंगल में ही खो गया। और कुछ समय बाद शायद नष्ट भी हो जाये। सो यह एक पवित्र काम होगा अगर हम उसको ढूँढ कर उसको फिर से बनवा दें।"

विक्रम महाराजा राजी हो गये। उन्होंने तुरन्त ही बहुत सारे मजदूर उस जंगल को काटने के लिये भेज दिये। उस मन्दिर को फिर से बनवा कर ठीक कर लिया गया। सारे लोग उस जगह को देख कर बहुत ही आश्चर्य करने लगे कि वह जगह कितनी अच्छी थी।

---

[20] The prickly pear cactus plant is not only beautiful and decorative but edible also. Its fruit is juicy but covered with spikes. It is not named pear cactus just because it is of pear family but because of its size and shape. People like to plant it in their gardens but they do not know that it grows so fast that in a short time only one plant becomes a desnse forest. See its picture above.

उसका फर्श सफेद संगमरमर का बना हुआ था। दीवारों पर खुदायी का काम हुआ था और उन सबमें रंग भरे हुए थे। उसकी सारी छत पर विक्रम महाराजा के पिता जी का नाम लिखा हुआ था और उस सबके बीच में गणपति की तस्वीर बनी हुई थी जिनका यह मन्दिर था।

महाराजा विक्रम उस जगह की सुन्दरता को देख कर बहुत खुश हुए। इस वजह से भी और उस जगह की पवित्रता की वजह से भी वह अपने वजीर बत्ती के साथ रोज जाते थे और वहाँ हर रात सोते थे।

एक रात महाराजा विक्रम जब वहाँ सोये हुए थे तो उन्होंने एक सपना देखा। सपने में उनके पिता जी प्रगट हुए और बोले — "बेटा विक्रम उठो और मीनार पर लगी रोशनी की तरफ जाओ जो इस मन्दिर के सामने ही है।"

मन्दिर के सामने ही रोशनी के लिये एक ऊँची मीनार या पिरैमिड जैसा था जिसके सबसे ऊपर एक छज्जा था जिस पर गणपति के दिन मनाने के लिये दिये जलाये जाते थे।

जब वहाँ वे दिये जलाये जाते थे तो वह एक बहुत बड़ी मोमबत्ती की तरह दिखायी देती थी। उसकी रक्षा के लिये कैक्टस की सात हैजेज़ लगायी गयी थीं।

सपने में उन्होंने कहा — “जाओ विक्रम। उस रोशनी वाली मीनार पर जाओ। उसके नीचे बहुत बड़ा खजाना है। पर तुम गणपति को गुस्सा किये बिना उसे केवल एक तरह से ही ले सकते हो।

तुमको उनकी भक्ति में एक बहुत बड़ा काम करना पड़ेगा जिसे अगर वह अपनी दया से मान लेंगे और तुम्हारी ज़िन्दगी की सुरक्षा का आश्वासन देंगे तभी तुम वह खजाना वहाँ से निकाल सकते हो।

विक्रम महाराज ने पूछा “भक्ति का कैसा काम?”

विक्रम को ऐसा लगा जैसे उन्होंने कहा हो — “तुम मीनार की चोटी से एक रस्सी बाँधो। रस्सी के दूसरे किनारे पर एक टोकरी बाँधो। उस टोकरी में तुम सिर नीचे कर के बैठो।

फिर जिस रस्सी से टोकरी बँधी है उसको तीन बार ऐंठन दो और फिर छोड़ दो। जब उस रस्सी की ऐंठनें खुल रही होंगी तो तुम उसे काट दो। तब तुम नीचे की तरफ सिर किये धरती पर गिर पड़ोगे।

अगर तुम किसी भी हैज पर गिरोगे तब तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे। पर गनपति बहुत दयालु हैं। तुम डरना नहीं क्योंकि गणपति यह नहीं चाहेंगे कि तुम मर जाओ।

अगर तुम बिना किसी परेशानी के बाहर निकल आओ तो समझना कि तुम इस पवित्र काम के लिये चुन लिये गये हो। फिर तुम बिना किसी खतरे के वह खजाना ले सकते हो।"

इसके बाद वह सपना खत्म हो गया। विक्रम महाराजा ने इसके आगे और कुछ नहीं देखा। उसके कुछ देर बाद ही उसकी आँख खुल गयी।

विक्रम महाराजा ने वज़ीर को जगाया — "बत्ती। मैंने आज बड़ा अजीब सा सपना देखा। मैंने देखा कि मेरे पिता जी मुझसे एक बहुत बड़े भक्ति के काम को करने के लिये कह रहे हैं।

कोई ज़्यादा नहीं बस एक रस्सी मीनार में बाँधने के लिये और उसके दूसरे सिरे पर एक टोकरी बाँधने के लिये। उसमें सिर के बल बैठने के लिये फिर रस्सी को काटने और मुझे गिर जाने के लिये कह रहे थे। वह कह रहे थे कि मैं इस काम से देवता को बहुत खुश कर लूँगा।

फिर उन्होंने कहा कि इसके नीचे एक बहुत बड़ा खजाना है जिसे मैं निकाल सकता हूँ। तुम्हारा क्या विचार है मुझे क्या करना चाहिये।"

वजीर बोला — "मेरी सलाह तो यह है कि अगर तुम खजाना निकालना चाहते हो तो तुम वैसा ही करो जैसा कि

तुम्हारे पिता जी ने तुमसे करने के लिये कहा है। और गणपति की कृपा पर विश्वास करो।"

सो राजा ने एक रस्सी मीनार की चोटी से बाँधी उसके दूसरे सिरे पर एक टोकरी बाँधी और उसमें उलटे सिर बैठ गया। फिर उसने बत्ती को बुलाया और उससे पूछा — "अब मैं रस्सी कैसे काटूँ।"

वजीर बोला — "यह तो कोई मुश्किल काम नहीं है। तुम अपने हाथ में तलवार लो। मैं रस्सी को तीन बार घुमाता हूँ और फिर जैसे ही यह उलटी घूमनी शुरू हो जाये तुम तलवार से काट देना।

विक्रम महाराजा ने उससे तलवार ले ली और बत्ती ने रस्सी में ऐंठन दे दीं। जैसे ही रस्सी ने खुलना शुरू किया कि महाराजा विक्रम ने उसे काट दिया। तुरन्त ही टोकरी नीचे गिर गयी।

वह निश्चित रूप से तलवारों की हैज पर जा कर पड़ती और राजा तुरन्त ही मर जाता अगर गणपति ने अपने भक्त को खतरे में देख कर उसी समय मन्दिर से बाहर निकल कर एक बुढ़िया का रूप रख कर उस टोकरी को गिरने से पहले अपनी बाँहों में न ले लिया होता। उसने उसको बहुत कोमलता से ला कर जमीन पर रख दिया।

ऐसा कर के वह तुरन्त ही मन्दिर में अपनी जगह चले गये। किसी भी देखने वाले को यह पता नहीं चला कि वह बुढ़िया गणपति थी। उन लोगों ने तो बस यही सोचा कि वह कितनी अक्लमन्द बुढ़िया थी जिसने समय पर आ कर राजा को बचा लिया।

उसके बाद महाराजा विक्रम ने मीनार के नीचे खुदायी शुरू की। वहाँ उनको बहुत बड़ा खजाना मिला। बहुत सारा सोना मोती हीरे लाल नीलम फिरोजा आदि। पर उन्होंने खुद उसमें से कुछ नहीं लिया। उन्होंने उस सबको बेच दिया और उससे आया पैसा गरीबों में बाँट दिया।

वह तो उस खजाने की भी परवाह बिल्कुल नहीं करते थे जिसके लिये लोग अपना शरीर और आत्मा बेच देते हैं।

एक और दिन जब महाराजा मन्दिर में सो रहे थे तो उनको एक रात एक और सपना आया। उनके सपने में फिर से अपने पिता जी दिखायी दिये। इस बार उन्होंने उनसे कहा — “विक्रम तुम इस मन्दिर में रोज आया करो।

गणपति तुम्हें बुद्धि देंगे और तुम्हारी समझ को बढ़ायेंगे। तुमको दुनियाँ में शिक्षा तो बहुत मिल जायेगी पर बुद्धि शिक्षा और अनुभव मनुष्य का भगवान के लिये प्रेम का फल होता है

जिससे बुद्धि आती है। आदमी शिक्षा भूल सकता है पर बुद्धि हमेशा रहती है।"

यह सपना देख कर राजा फिर से जाग गये। उन्होंने अपना यह सपना फिर से वजीर को बताया तो वजीर बत्ती ने उनको फिर से अपने पिता का कहा मानने के लिये कहा। महाराजा ने भी उसका कहा माना।

अब वह रोज मन्दिर जाते और वहाँ गणपति से शिक्षा पाते। जब महाराजा ने काफी सीख लिया तो एक दिन गणपति ने उनसे कहा — "अब तुमने काफी सीख लिया है। इतना जितना कि किसी मनुष्य को दुनियाँ में रहने के लिये चाहिये।

जाते समय अब मैं तुम्हें एक भेंट देना चाहता हूँ सो जो तुम्हें चाहिये तुम मुझसे वही माँग लो। वह तुम्हारी होगी – धन दौलत या ताकत या सुन्दरता या लम्बी उम्र या तन्दुरुस्ती या खुशी। तुम कुछ भी चुन लो और वह तुम्हारा होगा।"

महाराजा यह सुन कर सोच में पड़ गये। उन्होंने गणपति से प्रार्थना की कि उनको इस सबके बारे में सोचने के लिये एक दिन का समय दिया जाये। गणपति इस बात के लिये तैयार हो गये।

अब ऐसा हुआ कि महल के पास ही एक बढ़ई का बेटा रहता था जो बहुत ही चालाक थ।

जब उसने सुना कि महाराजा मन्दिर बुद्धि लेने जाते थे तो वह भी उनके पीछे पीछे हो लिया। उसने सोचा कि शायद वह भी कुछ सीख जाये। सो रोज जब गणपति महाराजा विक्रम को सिखाते तो बढ़ई का बेटा भी मन्दिर के पीछे छिप कर उनकी बातें सुनता। उसने सब सुन लिया सो वह भी बहुत बुद्धिमान हो गया।

अब जैसे ही गणपति ने विक्रम से वरदान माँगने के लिये कहा तो उसने भी यह पता लगाने के लिये वहाँ लौटने का निश्चय किया कि देखें राजा किस तरह से गणपति से अपना वरदान माँगते हैं।

उधर राजा ने अपने वज़ीर बत्ती से सलाह ली कि उसको गणपति से क्या माँगना चाहिये। उन्होंने कहा — "धन दौलत तो मेरे अपने पास ही बहुत है। ताकत भी मेरे पास बहुत है। और बाकी की चीज़ों के लिये भी मैं दूसरे लोगों से बहुत आगे हूँ। इससे मेरे पास तो चुनने का मौका बहुत ही कम रह जाता है।"

वज़ीर ने पूछा — "क्या आप किसी दैवीय ताकत को पाने की इच्छा रखते हैं। अगर ऐसा है तो फिर आप उनसे वही माँग लीजिये।"

महाराजा बोले — "हॉ यही ठीक रहेगा। हमेशा से मेरी यही इच्छा रही है कि मेरे पास कोई ऐसी ताकत हो जिससे मैं अपनी इच्छा के अनुसार ही अपना यह शरीर छोड़ सकूँ और कोई दूसरा शरीर ले सकूँ जो मैं चाहूँ। और तब मैं कुछ और कर सकूँ।"

वज़ीर बोला — "तब आप गणपति से वही मॉग लीजिये।"

अगली सुबह राजा नहाये पूजा की और गणपति से आखिरी मुलाकात के लिये अपने शाही रूप में मन्दिर पहुँचे। उधर बढ़ई का बेटा भी मन्दिर पहुँचा ताकि वह यह सुन सके कि महाराजा ने गणपति से क्या मॉगा।

समय पर गणपति प्रगट हुए और उन्होंने महाराजा से पूछा — "विक्रम क्या तुमने सोच लिया कि तुम्हें क्या चाहिये।"

महाराजा विक्रम बोले — "ओ दैवीय ताकत। आपने जब मुझे राजा बनाया तो मुझे पहले से ही बहुत सारी धन दौलत और ताकत दे रखी है। न मुझे इससे ज़्यादा सुन्दरता की जरूरत है जितनी अभी मेरे पास है।

लम्बी उम्र तन्दुरुस्ती और खुशी भी मुझे उतनी ही चाहिये जैसी और लोगों के पास होती है। पर एक वरदान है जो उन

सब चीज़ों के अलावा जो आपने मुझसे माँगने के लिये कहा था मैं आपसे माँगना चाहूँगा।"

गणपति बोले — "ओ भले पिता के भले बेटे माँगो क्या माँगते हो।"

महाराजा विक्रम बोले — "ओ सबसे बुद्धिमान। आप मुझे ऐसी ताकत दें जिससे जब मैं चाहूँ तब मैं अपना शरीर छोड़ कर अपनी आत्मा इन्द्रियाँ और सोचने की ताकत किसी और आदमी जानवर या पक्षी में बदल सकूँ – एक दिन के लिये या एक महीने के लिये या एक साल के लिये या जितने चाहे उतने समय के लिये।

पर फिर जब भी मैं अपने पुराने रूप में वापस आना चाहूँ तो मैं उसी हालत में आ जाऊँ जिस हालत में मैं उसे छोड़ कर गया था। मेरा शरीर खराब नहीं होना चाहिये।"

गणपति बोले — "विक्रम तुम्हारी प्रार्थना सुन ली गयी है।" और फिर उन्होंने विक्रम को वह तरीका बताया जिस तरह से वह यह काम कर सकता था।

इसके अलावा उन्होंने विक्रम को एक ऐसी चीज़ भी दी जिसे वह जब अपना शरीर छोड़ कर किसी और शरीर में जाता तो उसे अपने शरीर में रख जाता ताकि वह खराब न हो।"

बढ़ई का बेटे ने जो मन्दिर के बाहर ही खड़ा था सब कुछ सुन लिया वह जादू भी याद कर लिया जिससे वह अपना शरीर बदल सकता था। पर वह यह नहीं देख सका कि गणपति ने महाराजा विक्रम को क्या चीज़ दी जिसे वह अपने शरीर में रख कर सुरक्षित रख सकता था। इस तरह वह केवल आधा ही जादू जान पाया।

विक्रम महाराजा घर वापस आ गये। उन्होंने घर आ कर वज़ीर को बताया कि आज उनकी बहुत दिनों की इच्छा पूरी हुई।

यह सुन कर बत्ती बोला — "अब इसका आप सबसे अच्छा इस्तेमाल यह कर सकते हैं कि आप उड़ कर अनार देश जायें और अनार रानी को यहाँ ले आयें।"

महाराजा बोले यह मैं कैसे करूँ।

बत्ती बोला — "आप अपने को एक तोते में बदल लीजिये जिसकी शक्ल में आपको उन तलवारों की सात हैज पार करने में आसानी रहेगी जो उसके बागीचे के चारों तरफ लगी हुई हैं। फिर आप उसके बीच में लगे पेड़ के पास जाइये अनार के पेड़ की टहनियाँ कुतरिये और उन्हें घर ले आइये।"

महाराजा बोले — "यह ठीक है।"

उन्होंने एक तोता उठाया जो जमीन पर मरा पड़ा था। फिर अपने शरीर में सुरक्षा करने वाली चीज़ रखी और अपनी आत्मा उसके शरीर में रख कर उड़ चले – पहाड़ियों के उस पार दूर।

वह बागीचे तक आ गये। वह उसके ऊपर से उड़े उसमें लगी तलवारों की सात हैजों के ऊपर उड़े और अपनी चोंच से तीनों अनार तोड़ लिये। अपनी चोंच में दबाये वह सुरक्षित घर वापस आ गये। घर आ कर तुरन्त ही उन्होंने तोते का शरीर छोड़ दिया और अपना शरीर धारण कर लिया।

जब बत्ती ने देखा कि उन्होंने अपना काम कितनी अच्छी तरह से पूरा कर लिया है तो वह बोला — "भगवान का धन्यवाद है कि कुछ तो अच्छा हुआ।"

जिन्होंने भी अनार रानी को देखा सभी उसकी सुन्दरता देख कर आश्चर्य में पड़ गये। क्योंकि वह कमल के फूल की तरह सुन्दर थी और उसके गालें का रंग गहरे अनार के रंग जैसा था।

और सबसे बड़ी खास बात तो यह थी कि महाराजा उसको अपनी पत्नी बनाने में बहुत ही बुद्धिमान था। उन दोनों की बहुत ही शानदार शादी हुई। पर वे लोग बहुत ही कम समय के लिये यानी केवल एक दिन के लिये ही बहुत खुश रहे।

एक दिन महाराज विक्रम ने बत्ती से कहा — "मैं दुनियाँ देखना चाहता हूँ।"

बत्ती बोला — "अरे इतनी जल्दी आप फिर से घर छोड़ना चाहते हैं? क्या आप इतनी जल्दी से अपनी पत्नी को अकेला छोड़ना चाहते हैं?"

"मैं अपनी पत्नी और अपनी जनता को बहुत प्यार करता हूँ पर मैं अपनी इस इच्छा को यानी कोई दूसरा रूप लेने की इच्छा को नहीं दबा पा रहा हूँ। मुझमें इस ताकत को इस्तेमाल करने की इच्छा बढ़ती जा रही है।"

वज़ीर बोला — "पर आप जायेंगे कैसे और कहाँ?"

विक्रम महाराजा बोले — "परसों मैं फिर से तोता बन जाऊँगा और जितनी दुनियाँ मुझसे देखी जायेगी उतनी देख कर आऊँगा।"

सो यह निश्चित हो गया कि राजा घूमने जायेंगे। उन्होंने अपना सारा राज्य वज़ीर की देखभाल में छोड़ा और अपनी पत्नी को भी यह कहते हुए छोड़ा — "मुझे पता नहीं कि मैं कितने समय के लिये बाहर जा रहा हूँ। हो सकता है एक दिन के लिये या फिर एक साल के लिये या फिर इससे भी ज़्यादा।

पर मेरे जाने के बाद अगर तुमको कोई परेशानी हो तो तुम वजीर को बोल देना। वह मेरे बड़े भाई बल्कि पिता जैसा है तुम भी उसको वैसी ही इज़्ज़त देना। मैंने उससे तुम्हारी देखभाल

करने के लिये कह दिया है वह तुम्हारी अपने बच्चे की तरह से देखभाल करेगा।"

यह कह कर राजा ने एक बहुत सुन्दर तोते को मारने के लिये कहा जिसके सिर पर बहुत ही चमकीले पंख थे और उसके गले में एक गोला पड़ा हुआ था।

फिर उन्होंने अपनी बाँह में एक छोटा सा चीरा लगाया उसमें गणपति द्वारा दी गयी वह शरीर को सुरक्षित रखने वाली चीज़ मली अपनी आत्मा तोते के शरीर में डाली और उड़ गये।

X X X X X X X

अब जैसे ही बढ़ई के बेटे ने यह सुना कि महाराजा तो मर गये तो उसको तो तो महाराजा विक्रम की ताकत मालूम थी उसको लगा कि निश्चित रूप से महाराजा ने वही ताकत इस्तेमाल की होगी। सो उसने भी वही ताकत इस्तेमाल करने का फैसला किया।

सो जैसे ही महाराजा की आत्मा तोते के शरीर में घुसी बढ़ई का बेटा महाराजा के शरीर में घुस गया। सारी दुनियाँ ने यही समझा कि महाराजा कुछ समय के लिये बेहोश हो गये थे और अब होश में आ गये हैं।

पर वजीर उन सबसे बहुत अक्लमन्द था। उसने तुरन्त ही सोचा कि "ऐसा लगता है कि महाराजा विक्रम के अलावा और भी कोई है जो इस राज़ को जानता है और अब वह उस ताकत का यह सोचते हुए इस्तेमाल कर रहा है कि चलो राजा बन कर कुछ समय आनन्द से बिताऊँगा। पर मैं यह बात जान कर ही रहूँगा कि यह सब क्या है।"

उसने तुरन्त ही अनार रानी को बुलाया और उनसे कहा — "आपको पक्का मालूम है कि आपके पति तोते का रूप रख कर यहाँ से चले गये हैं। और यह बात मुझे भी पता है। पर जैसे ही वह हमको यहाँ छोड़ कर गये हैं कि उनका शरीर जाग गया है।

वह अब चलते फिरते बात करते नजर आते हैं और उतने ही ज़िन्दा दिखायी देते हैं पर मेरा विचार है कि जिस आत्मा ने उनके शरीर का ज़िन्दा किया है वह उनकी आत्मा नहीं है।

गणपति ने जो ताकत उनको दी थी वह किसी और के पास भी है और वह उनके शरीर में घुस कर उसका फायदा उठा रहा है। सो हमें इस बात का पता लगाना होगा। इसलिये जैसा मैं आपसे कहता हूँ आप वैसा ही करें ताकि हम इस बात को साबित कर सकें।

आज आप अपने पति के लिये बहुत ही सामान्य खाना बनायें जैसा कि सामान्य लोग खाते हैं और वही उनको परसें। अगर वह इस बात की शिकायत करें कि यह तो वह खाना नहीं है जो वह रोज खाते हैं तो यह मेरी गलती है।

और अगर वह कोई शिकायत नहीं करते और उसके बारे में कुछ नहीं कहते तो आपको पता चल जायेगा कि मेरी बात सच्ची है कि वह विक्रम महाराजा नहीं हैं।"

अनार रानी ने वैसा ही किया जैसा कि वजीर ने उनसे करने के लिये कहा था। पति को खाना खिला कर वह वजीर के पास आयी और बोली — "पिता जी। आज मैंने खाना बहुत ही लापरवाही से बनाया था। वह बहुत ही गरीब लोगों के खाने लायक था पर महाराजा ने उसकी कोई शिकायत नहीं की। मुझे विश्वास हो गया है कि आप सच कहते हैं। पर अब हम क्या करें?"

वजीर बोला — "हम उसे जेल में नहीं डालेंगे क्योंकि उसने आपके पति का शरीर ले रखा है। पर न तो आप और ना ही राजा को कोई और सम्बन्धी उससे कोई सम्बन्ध रखेगा। यहाँ तक कि उससे कोई बोलेगा भी नहीं।

और अगर वह आप में से किसी से बोलने की कोशिश करता भी है तो वह चाहे कुछ भी कहे उससे लड़ना झगड़ना

शुरू कर दीजियेगा। इससे जब वह एक महाराजा की ज़िन्दगी को अच्छा नहीं पायेगा जैसा कि उसने सोचा था तो वह यकीनन अपने शरीर में वापस लौट जायेगा।

पर ऐसा वह तभी कर सकेगा जब उसको अपना शरीर सुरक्षित करने की कला आती होगी। अगर यह कला उसको नहीं आती होगी तो उसका शरीर खराब हो जायेगा और तीन दिन के बाद तो वह बिल्कुल ही खराब हो जायेगा। तब उसके पास इसके सिवाय और कोई चारा नहीं रह जायेगा कि वह इस समय जिस शरीर में है उसी शरीर में रहे।"

इस बीच असली विक्रम महाराजा तोते के रूप में उड़ते गये उड़ते गये और बहुत दूर पहुँच गये — एक बरगद के पेड़ के पास। वहाँ एक हजार तोते और थे। ये उनमें जा कर मिल गये तो वे सब एक हजार एक हो गये।

हर रोज वे तोते खाने की खोज में निकल जाते थे और हर शाम वहाँ सोने के लिये वापस आ जाते। अब कुछ ऐसा हुआ कि उस जंगल में एक शिकारी आया। उसने वह बरगद का पेड़ भी देखा और देखे उस पर बैठे हुए एक हजार एक तोते।

उसने सोचा कि "अगर मैं आज की रात इन एक हजार एक तोतों को पकड़ लूँ तो फिर मैं बहुत दिनों तक इतना भूखा

नहीं रहूँगा जितना कि मैं आज हूँ क्योंकि इनकी फिर बहुत अच्छी सब्जी बहुत दिनों तक चलेगी।"

हालाँकि उसने कई बार कोशिश की पर वह ऐसा न कर सका क्योंकि पेड़ का तना बहुत ही सीधा लम्बा और चिकना था। वह अगर थोड़ी ही दूर तक चढ़ता तो वह नीचे फिसल जाता। फिर भी उसने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी।

एक दिन बहुत बारिश हुई तो तोते घर जल्दी वापस लौट आये। वहाँ आ कर उन्होंने क्या देखा कि वहाँ तो एक हजार कौए बैठे हैं जो अपने घर जाते समय उस पेड़ पर शरण लेने के लिये बैठ गये थे जब तक वह तूफान खत्म होता।

विक्रम महाराजा ने दूसरे तोतों से कहा — "क्या तुम ये कौए नहीं देख रहे जिनकी चोंचों में बहुत किस्म के बीज और फल लगे हुए हैं जो ये अपने बच्चों के लिये घर ले कर जा रहे हैं?

हमको इन्हें यहाँ से जल्दी से भगा देना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि इनके कुछ बीज और फल हमारे पेड़ के नीचे गिर जायें और बाद में उग कर मजबूत पेड़ बन जायें।

कुछ की बेलें भी बन सकती हैं जो बड़ी हो कर इस पेड़ के तने से लिपट जायेंगी। इससे हमारे दुश्मन को इस पेड़ पर चढ़ कर हमें मारने में आसानी हो जायेगी।"

लेकिन दूसरे तोतों ने कहा — "ओह यह विचार तो बहुत आगे का है। इस बरसती हुई बारिश में इन बेचारे पक्षियों को यहीं रहने दो। ये बेचारे कहाँ जायेंगे भीग जायेंगे।"

सो कौओं को वहीं छोड़ दिया गया। पर हुआ वैसा ही जैसा विकम महाराजा ने कहा था। क्योंकि कुछ बीज और फल जो वे अपने बच्चों के लिये ले कर जा रहे थे उनकी चोंचों में से नीचे गिर पड़े। बीजों ने जड़ें पकड़ लीं और उनकी बेलें पेड़ के तने के ऊपर चारों तरफ लिपट गयीं। इससे अब पेड़ पर चढ़ना बहुत आसान हो गया था।

अगली बार जब शिकारी उधर आया तो उसने यह देखा तो उसके मुँह से निकला "आखिर आज मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया।" बेलों की सहायता से वह पेड़ पर चढ़ा और पूरे पेड़ पर बारीक धागे के बने एक हजार एक जाल फेंके और वहाँ से चला गया।

उस शाम जब तोते घर वापस आये तो सभी तोते उस जाल में फँस चुके थे। वे सब चिल्लाये "किक किक किक किक। अब हम क्या करें। अब हम क्या कर सकते हैं। ओ महाराजा

विक्रम आप ठीक कहते थे हम लोग गलत थे। उफ़ उफ़। किक किक किक।"

विक्रम महाराज ने कहा — "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि यह ऐसे ही होगा। पर अब तुम लोग वैसा ही करो जैसा कि मैं तुमसे कहता हूँ। हम लोग अभी भी बच सकते हैं।

जैसे ही शिकारी हम सबको लेने आये तुम सबको अपने अपने सिर एक तरफ को लटका लेने चाहिये जिससे उसको लगे कि हम सब मर गये हैं।

हम सबको मरा जान कर वह हमारी गर्दनों को मरोड़ने की चिन्ता नहीं करेगा और न ही हमारे सिरों को अपनी पेटी में अटकाने की फिक्र करेगा जैसा कि वह करता पर तब वह ऐसा नहीं करेगा। वह हम सबको जमीन पर डाल देगा।

वहाँ भी हम सबको बिल्कुल चुप पड़ा रहना होगा जब तक कि हम सब एक हजार एक जाल में से न निकल जायें। उसके बाद शिकारी पेड़ से उतरेगा उतनी देर में हम सब उसके सिर के ऊपर से उड़ कर उससे बहुत दूर भाग जायेंगे।" तोतों ने महाराजा विक्रम की बात मान ली।

अगले दिन जब शिकारी उनके लेने के लिये आया तो सब तोतों ने अपनी अपनी ऑखें बन्द कर लीं और अपने अपने सिर एक तरफ को लटका लिये जैसे वे सब मर गये हों।

शिकारी ने उनको देख कर कहा — "अरे ये तो सब मर गये। अब तो मुझे बहुत सारी स्वादिष्ट सब्जी खाने को मिलेगी।"

ऐसा सोच कर उसने वह फन्दा काट दिया जिसमें पहला तोता फँसा हुआ था और उस तोते को नीचे फेंक दिया। तोता एक पत्थर की तरह नीचे गिर पड़ा। इसी तरह से दूसरा तीसरा चौथा पाँचवाँ छठा सातवाँ आदि एक हजारवें तोते तक सभी तोते नीचे गिर पड़े।

अब एक हजार एकवाँ तोता खुद विक्रम महाराजा थे। सिवाय उनके सारे तोते आजाद हो चुके थे। पर जैसे ही शिकारी उनके पंजों का फन्दा काटने जा रहा था कि उसका चाकू नीचे गिर गया। अब उसको उसे उठाने के लिये नीचे जाना पड़ा।

जब नीचे पड़े तोतों ने देखा कि शिकारी पेड़ से नीचे उतर रहा है तो उन्होंने सोचा कि सारे एक हजार एक तोते आजाद हो चुके हैं सो अब समय आ गया है कि हम सब उड़ कर भाग लें। तुरन्त ही वे सब एक साथ उठे और उड़ कर भाग लिये। जल्दी ही वे आँखों से ओझल हो गये। विक्रम महाराजा वहीं जाल में फँसे रह गये।

शिकारी ने यह देखते हुए कि वहाँ क्या हुआ था बहुत गुस्सा हुआ। उसने विक्रम महाराजा को पकड़ लिया और उनसे कहा — "ओ नीच चिड़िया। सो यह सब चाल तुमने चली है। मुझे मालूम पड़ गया है कि यह तुम्हीं हो। क्योंकि कि तुम्हीं यहाँ अजनबी हो और बाकी दूसरे तोतों से अलग हो। मैं तुम्हारा गला घोट दूँगा।"

पर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब तोता बोला — "मुझे मत मारो। मुझे मारने से तुम्हारा क्या भला होगा। तुम मुझे पड़ोसी शहर में जा कर बेच आओ। मुझको वहाँ बेचने पर तुमको एक हजार सोने की मुहरें मिल जायेंगी।"

शिकारी बोला — "तुम्हारे लिये और एक हजार मुहरें? ओ बेवकूफ चिड़िया तुम्हरे लिये एक हजार मुहरें कौन देगा?"

विक्रम महाराजा बोले — "तुम इसकी चिन्ता मत करो बस मुझे ले चलो और देखो।"

सो शिकारी उस तोते को पास के शहर में ले गया और चिल्लाने लगा — "इसे कौन खरीदेगा। इसे कौन खरीदेगा। आओ और इस सुन्दर तोते को खरीदो जो कितनी सुन्दर बात करता है। देखो कितना सुन्दर है यह। देखो इसकी गर्दन में कितनी सुन्दर यह लाल धारी पड़ी हुई है। कौन खरीदेगा इसे कौन खरीदेगा इसे।"

कई लोगों ने उससे पूछा कि वह उसकी क्या कीमत लेना चाहेगा। जब उसने कहा कि एक हजार मुहरें तो वे सब हँसे और यह कहते हुए चले गये कि किसी बेवकूफ के अलावा कौन इस चिड़िया के इतने पैसे देगा।

जब काफी देर हो गयी और शिकारी का तोता नहीं बिका तो शिकारी बहुत गुस्सा हो गया। वह विक्रम महाराजा से बोला — "मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि ऐसा ही होगा। मैं तुम्हें इतने पैसे में कभी भी नहीं बेच पाऊँगा।"

विक्रम महाराजा बोले — "हॉ हॉ तुम बेच पाओगे। देखो वह एक व्यापारी इधर आ रहा है। मैं तुमसे शर्त लगा सकता हूँ कि वह मुझे खरीद लेगा।"

यह सुन कर शिकारी उस व्यापारी के पास गया और बोला — "मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरे इस सुन्दर तोते को खरीद लीजिये।"

व्यापारी ने पूछा — "तुम्हें अपने इस तोते का कितना पैसा चाहिये। दो रुपये?"

शिकारी बोला — "नहीं। मैं इस तोते के लिएये एक हजार सोने की मुहरों से कम नहीं लेने का।"

व्यापारी चिल्लाया — "क्या कहा एक हजार सोने की मुहरें? मैंने ऐसी चीज़ तो कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं सुनी।

एक हजार सोने की मुहरें केवल एक इतने छोटे से तोते के लिये?

इतने पैसे का तुम क्या करोगे? क्या कोई घर खरीदोगे या बागीचा खरीदोगे या फिर घोड़े खरीदोगे या फिर दस हजार गज सबसे बढ़िया कपड़ा? कौन तुम्हें इस तोते के इतने पैसे देगा? मैं तो नहीं दे सकता। मैं तुम्हें केवल दो रुपये दे सकता हूँ इससे ज़्यादा नहीं।"

तभी विक्रम महाराजा चिल्लाये — "व्यापारी ओ व्यापारी। तुम मुझे इतने पैसे में खरीदने में डरो नहीं। मैं विक्रम महाराजा का तोता हूँ। इसे जो यह माँगता है दे दो। इसके पैसे तुम्हें मैं दूँगा पर मुझे खरीद लो। मैं तुम्हारी दूकान की रखवाली करूँगा।"

व्यापारी बोला — "ओ तोते। यह तुम क्या बेकार की बात कर रहे हो।"

पर उसका उस तोते को खरीदने का मन कर आया सो उसने शिकारी को एक हजार सोने की मुहरें दीं और उससे तोता खरीद लिया। वह विक्रम महाराजा को घर ले आया और उसे अपनी दूकान में टाँग दिया।

व्यापारी की दूकान में आ कर तोते ने उसकी दूकान में सामान बेचने वाले का काम सँभाल लिया। वह इतनी अक्लमन्दी

और अच्छी तरह से बात करता था कि शहर में हर एक को व्यापारी की चिड़िया के बारे में मालूम पड़ गया।

अब कोई दूसरी दूकानों में खरीदारी के लिये नहीं जाता था। सब लोग तोते की बातें सुनने के लिये उसी की दूकान में आते थे। तोता भी उनको वही चीज़ बेच देता था जो वे चाहते थे। वे भी इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं करते थे कि तोता उनसे उस चीज़ की कितनी कीमत माँगता है। वे तो उसको बस उतना पैसा दे देते थे जितना कि वह तोता उनसे माँगता था।

ऐसा करने से एक हफ्ते के अन्दर ही अन्दर व्यापारी को जितना सामान्य रूप से एक हफ्ते में फायदा होता था उससे एक हजार मुहरों का ज़्यादा फायदा हो गया।

विक्रम महाराजा वहाँ उस व्यापारी के पास काफी समय तक रहे। वहाँ उन्होंने व्यापारी के बहुत पैसे बनवाये और खुश रखा।

XXXXXXX

अब ऐसा हुआ कि उसी शहर में एक नाचने वाली रहती थी जिसका नाम था चम्पा बाई। वह इतना सुन्दर नाचती थी कि शहर के लोग अपने बड़े बड़े उत्सवों में नाच के लिये उसी को अपने यहाँ बुलाते थे।

वहीं उसी शहर में एक गरीब लकड़हारा भी रहता था। अपने गुजारे के लिये वह रोज जंगल जा कर लकड़ी काट कर लाता और उसे बाजार में बेच देता।

एक दिन वह रोज की तरह लकड़ी काटने के लिये जंगल गया कि वह थक गया और एक पेड़ के नीचे सो गया। वहाँ उसने एक सपना देखा कि वह बहुत अमीर हो गया है और उसने उस सुन्दर नाचने वाली से शादी कर ली है। वह उसको अपने घर ले गया है और उसे एक हजार सोने की मुहरें भेंट दी हैं।

उस शाम जब वह अपनी लकड़ियों को बेचने के लिये बाजार गया तो उसने अपने दोस्तों को अपना सपना सुनाया। उसने कहा कि आज जब मैं जंगल लकड़ियाँ काटने गया तो वहाँ सो गया और यह अजीब सा सपना देखा।

कि मैं बहुत अमीर हो गया हूँ और मैंने चम्पा बाई से शादी कर ली है और उसे एक हजार सोने की मुहरें शादी में भेंट में दी हैं।

उसका यह सपना सुन कर सब हँस पड़े और बोले — "यह क्या सपना है।" और फिर उन्होंने उसके बारे में कुछ नहीं सोचा।

पर कुछ ऐसा हुआ कि वह घर जिसके पास वह खड़ा हो कर अपने दोस्तों से बात कर रहा था वह घर चम्पा बाई का ही था और चम्पा बाई अपनी खिड़की में खड़ी हुई थी सो जो उसने कहा वह उसने सुन लिया।

उसने अपने मन में सोचा "यह आदमी तो बहुत गरीब दिखायी देता है पर लगता है कि इसके पास एक हजार सोने की मुहरें भी हैं नहीं तो यह उन्हें अपनी पत्नी को देने के बारे में कैसे सोचता। अगर यह बात है तो मैं अदालत जाऊँगी और फिर देखती हूँ कि मैं यह पैसा इससे ले सकती हूँ या नहीं।"

उसने अपने नौकरों को भेजा कि वे उस बेचारे लकड़हारे को उसके पास ले आयें। और जब वे उसको पकड़ कर उसके पास ले आये तो वह रोते हुए बोली — "प्रिय। मैं तुम्हारा कितने दिनों से इन्तजार कर रही थी। मैं सोच रही थी कि तुम्हें क्या हो गया है। इतने दिनों से कहाँ थे तुम?"

लकड़हारा बोला — "मुझे पूरा यकीन है कि मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं तो इस बात को कहने का तुम्हारा मतलब क्या है। तुम एक बहुत बड़ी स्त्री हो और मैं एक बेचारा गरीब लकड़हारा हूँ। तुम जरूर ही मुझे कोई और समझ रही हो।"

पर चम्पा बाई बोली — “नहीं नहीं। क्या तुम्हें याद नहीं कि फलाँ फलाँ तारीख को हमारी शादी हुई थी। क्या तुम भूल गये कि हमारी शादी कितनी शानदार तरीके से हुई थी।

तुम मुझे अपने घर अपने महल में ले गये थे और फिर मुझे शादी की भेंट में एक हजार सोने की मुहरें देने का वायदा किया पर उसके बाद फिर तुम चले गये। फिर मैं अपने पिता के घर लौट आयी थी। उसके बाद आज तुम्हारी खबर मिली है। तुम इतने बेरहम कैसे हो गये?”

लकड़हारे को लगा कि वह कोई सपना देख रहा है। पर चम्पा बाई के सभी दोस्तों और रिश्तेदारों ने कहा कि वह सच कह रही थी। जब काफी देर तक कहा सुनी हो गयी और लकड़हारा नहीं माना तो उन्होंने कहा कि इसके फैसले के लिये वे अदालत में जायेंगे।

पर जज भी उनका कोई फैसला न कर सका तो उसने उनको राजा के पास भेज दिया। राजा भी जज से कोई कम परेशान नहीं था। लकड़हारे ने इस बात को कई बार कहा कि वह तो केवल एक गरीब लकड़हारा था पर चम्पा बाई और उसके दोस्त इस बात पर अड़े रहे कि वह गरीब नहीं था बल्कि एक अमीर आदमी था।

पर चम्पा बाई इस बात पर अड़ी रही कि उसके पति के पास बहुत पैसा था पर लगता है कि उसने यह पैसा कहीं बरबाद कर दिया है। उसने फिर एक समझौता रखा कि वह अपनी और दूसरी चीज़ें उस पर छोड़ देगी अगर वह उसे एक हजार सोने की मुहरें दे दे तो जो उसने शादी में भेंट देने के लिये कहा था।

लकड़हारा बोला कि वह उसको सोने की मुहरें खुशी से दे देता अगर उसके पास होतीं तो। बाद में वह वाकई गरीब ही साबित हुआ जो लकड़ी काट कर केवल दो आना[21] रोज का कमाता था। न तो उसके पास कोई महल था और न बहुत धन दौलत थी।

इस मुकदमे में तो सारा शहर रुचि ले रहा था और सारे लोग यही सोच रहे थे कि यह मुकदमा कैसे खत्म होगा। कुछ लोग चम्पा बाई की तरफ थे तो कुछ लोग लकड़हारे की तरफ।

राजा से इसका फैसला न हो सका तो उसने कहा — "मैंने सुना है कि इस शहर में एक व्यापारी है जिसके पास एक बहुत ही अक्लमन्द तोता है। वह तोता बहुत सारे लोगों से भी अक्लमन्द।

[21] Two Anna – it is an old currency, but equal to approximately 12 modern Paisa. During British rule, and the first decade of independence, the rupee was subdivided into 16 **annas**. Each anna was subdivided into 4 paisas. So one rupee was equal to 96 **pice** (paisa) In 1957, decimalisation occurred and the rupee was divided into 100 naye **paise**.

चलो इस मामले को सिलटाने के लिये उसको बुलाते हैं क्योंकि यह मामला मेरी समझ से तो बाहर है। हम उसी का फैसला मानेंगे अब जो भी वह कहे।"

सो विक्रम महाराजा तोता बुलवाये गये और उनको न्याय की अदालत में बिठा दिया गया। पहले उन्होंने लकड़हारे से उसकी बात कहने के लिये कहा।

लकड़हारा बोला — "ओ तोते साहब। जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सच है। मैं एक बहुत ही गरीब आदमी हूँ। मैं जंगल में रहता हूँ और लकड़ी काट कर उसे बेच कर अपना गुजारा करता हूँ। मुझे उन लकड़ियों का दो आने से ज़्यादा कभी नहीं मिलता।

एक दिन मैं सो गया तो मैंने एक बहुत ही बेवकूफी भरा सपना देखा कि मैं कसी तरह अमीर बन गया हूँ और मैंने चम्पा रानी से शादी कर ली है। उसको मैंने एक हजार सोने की मुहरें शादी की भेंट में दी हैं।

पर यह सच नहीं है कि मुझ पर उसके एक हजार सोने की मुहरों का कर्ज है या वह मुझे उसे देना है या मैंने उससे शादी की है।"

विक्रम महाराजा बोले — "ठीक है ठीक है। ओ नाचने वाली अब तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओ।" तो चम्पा रानी ने अपनी कहानी सुनायी।

चम्पा रानी की कहानी सुन कर तोता बोला — "अब मुझे यह बताओ कि तुम्हारे पति का घर कहाँ है जहाँ वह तुमको ले कर गया था।"

वह बोली — "वह बहुत दूर है। मुझे नहीं मालूम कितनी दूर। पर वह कहीं जंगल में है।"

तोते ने फिर पूछा — "तुम्हारी शादी कब हुई थी।"

वह बोली — "फलाँ फलाँ समय हुई थी।"

उसके बाद तोते ने गवाह बुलवाये तो उनसे यह साबित हो गया कि चम्पा रानी ने उस समय यह शहर छोड़ा ही नहीं था।

यह सब सुनने के बाद तोते ने चम्पा रानी से कहा — "क्या यह मुमकिन है कि तुम इतनी बेवकूफ हो कि कोई तुम्हारी कहानी पर विश्वास कर लेगा कि तुम अपना इतना बढ़िया घर छोड़ कर एक ऐसे आदमी से शादी कर लोगी जिसका घर इतनी दूर जंगल में है और जिसकी दूरी का तुम्हें पता भी नहीं है।

यह तो अब पक्की तरह से साबित हो गया है कि तुमने यह शादी की ही नहीं थी इसलिये अब तुम एक हजार सोने की मुहरों को लेने का ख्याल छोड़ दो।"

पर यह काम तो नाचने वाली करने को तैयार ही नहीं थी। सो तोते ने एक पैसे उधार देने वाले को बुलाया और उससे एक हजार सोने की मुहरों का कर्जा माँगा। उसने उसको एक बड़ी सी बोतल में रखवा दिया और उसकी डॉट लगा कर उसे बन्द कर दिया।

बोतल को ठीक से बन्द कर के तोते ने नाचने वाली को दे दिया और उससे कहा कि अगर वह उस बोतल में से बिना डाट हटाये बिना बोतल तोड़े वे सोने की मुहरें निकाल ले तो वे उसकी।

वह बोली — "यह तो नामुमकिन है।"

विक्रम महाराजा बोले — "जो तुम चाहती हो वह नहीं किया जा सकता। तुम किसी गरीब आदमी से जिसके पास कोई पैसा नहीं है एक हजार सोने की मुहरें नहीं ले सकतीं। बन्दी को आजाद कर दिया जाये।

तुम जाओ चम्पा रानी नाचने वाली। तुम झूठी और चोर हो। अगर तुम डाल सकती हो तो जाओ और किसी और अमीर आदमी पर डाका डालो। गरीबों के साथ मत खेलो।"

सभी लोगों ने विक्रम महाराजा तोते के फैसले की तारीफ की और कहा — "हमने ऐस तोता पहले कभी नहीं देखा।"

पर चम्पा रानी बहुत गुस्सा थी — "ठीक है ओ नीच तोते, बेवकूफ तोते। देखना जल्दी ही मैं तुझे अपने वश में कर लूँगी। और जब मैं ऐसा कर लूँगी तब मैं तेरा सिर काट लूँगी।"

विक्रम महाराजा तोता बोला — "तुमसे जो हो सके कर लो पर इसके जवाब में बस मैं तुमसे इतना ही कहूँगा कि मैं तुम्हें भिखारी बना कर छोड़ूँगा। तुम्हारा अपना घर तुम्हारे अपने ही हुक्म से गिरा दिया जायेगा और तुम दुख और गुस्से में आ कर अपने आपको मार लोगी।"

चम्पा रानी बोली — "ठीक। हम जल्दी ही देखेंगे कि किसका कहा सच होता है – मेरा या तुम्हारा।" यह कह कर वह अपने घर चली गयी और व्यापारी अपने तोते को ले कर अपनी दूकान चला गया।

एक हफ्ता बिना किसी खास घटना के निकल गया। दूसरा हफ्ता भी भी ऐसे ही निकल गया। दो हफ्ते के बाद व्यापारी के सबसे बड़े बेटे की शादी थी सो इस मौके पर मेहमानों के सामने नाचने के लिये नाचने वाली को बुलाया गया।

चम्पा रानी आयी और उसने इतना सुन्दर नाचा कि उसका नाच देख कर सब लोग बहुत खुश हुए। व्यापारी तो बहुत ही खुश हुआ तो उसने उससे कहा — "तुम्हारा नाच बहुत अच्छा था। इसके इनाम में तुम मेरी दूकान और घर में से जो तुम्हारे

मन में आये वह ले सकती हो वह तुम्हारा है – जवाहरात कीमती कपड़े और जो भी कुछ तुम चाहो।"

वह बोली — "मुझे वैसा कुछ भी नहीं चाहिये। यह तो मेरे अपने पास बहुत है। मुझे तो तुम्हारा यह छोटा सा सुन्दर तोता चाहिये। बस यही भेंट मैं लेना चाहती हूँ।"

व्यापारी को यह सुन कर बहुत दुख हुआ क्योंकि उसने कभी यह सोचा ही नहीं था कि नाचने वाली उसका प्रिय तोता माँग लेगी। वह तो उसका बहुत प्यारा तोता था। उसने तो उसे व्यापार में उसे कितना फायदा करवाया था।

उसको लगा कि वह घर और दूकान में से उसे कोई भी चीज़ दे सकता था पर तोता। नहीं तोता नहीं। पर वह क्या करता अब तो उसने उसको ज़बान दे दी थी। उसको उसकी इज़्ज़त रखनी थी सो उसको उसे तोता देना ही पड़ा।

रोते हुए वह उसको लेने गया तो तोता बोला — "दुखी न हों मालिक। आप मुझे इस नाचने वाली को दे दें। मैं अपनी देखभाल अपने आप कर सकता हूँ।"

सो चम्पा रानी ने विक्रम महाराजा तोते को लिया और अपने साथ अपने घर ले आयी। जैसे ही वह उसे घर लायी उसने अपनी एक दासी को बुलाया और उससे कहा कि वह उसे ले जा कर उसके शाम के खाने के लिये उबाल दे।

पर उसको उबालने से पहले उसका सिर काट कर उसे भून कर एक प्लेट में रख कर वह उसे दे जाये। वह कोई और खाना खाने से पहले उसे खाना चाहती है।

वह दासी जब उसे रसोईघर में ले जा रही तो उसने एक दूसरी दासी से कहा — "यह हमारी मालकिन को क्या हो गया है कि वह तोते का भुना हुआ सिर खाना चाहती हैं।"

दूसरी दासी बोली — "तुम्हें क्या करना। जैसा वह कहती हैं वैसा ही करो नहीं तो वह डाँटेंगी।"

सो पहली दासी उस तोते को ले कर रसोईघर में पहुँची और उसने विक्रम महाराजा तोते के लम्बे पंख नोचने शुरू किये।

तोता सारा समय मुँह लटकाये रहा तो उसे लगा कि तोता तो मर गया है। फिर उसको तोते को उबलने के लिये पानी लाने जाना था सो उसने उसे जहाँ बर्तन धोते हैं उस जगह रख दिया और पानी लेने चली गयी।

उसका रसोईघर पहली मंजिल पर था और उसकी दीवार में एक नाली भी थी जिसमें से बर्तन धोने के बाद बचा हुआ खाना हड्डी पानी आदि बाहर जाता था। सो दासी के वहाँ से जाते ही विक्रम महाराजा तोता उस नाली में जा कर छिप गया।

दासी जब पानी ले कर लौट कर आयी तो तोते को न देख कर घबरायी। "ओह अब मैं क्या करूँ। मालकिन क्या कहेंगी।

मैं बस एक सेकंड के लिये ही तो बाहर गयी थी और इसी बीच में तोता न जाने कहाँ चला गया।"

दूसरी दासी बोली — "यह हो सकता है कि कोई बिल्ली उसे ले गयी हो। वह ज़िन्दा तो नहीं था जो वह उड़ जाता और भाग जाता नहीं तो मैं तो उसे जाते देख ही लेती। पर तुम डरो नहीं उसकी बजाय एक मुर्गा काम करेगा।"

सो उन्होंने एक मुर्गा लिया और उसे उबाल दिया। उसका सिर भून का मालकिन के पास ले गयी। जैसे जैसे वह उसे धीरे धीरे चटखारे ले कर खाती गयी वह बोलती गयी — "ओह तोते अब तुम्हारा अन्त हो गया। यही था न तुम्हारा दिमाग जो इतनी होशियारी से सोचता था। इसी ने तो मुझे हराया था।

यही थी न तुम्हारी ज़बान जिसने मेरे खिलाफ फैसला किया था। यही गला था न जिसमें से मेरे लिये धमकी भरे शब्द निकले थे। अब बताओ कौन सही निकला।"

विक्रम महाराज तोता जिस छेद में छिपे थे वह पास ही था सो उनको सब सुनायी पड़ रहा था। यह सुन कर वह डर गये क्योंकि उन्होंने सोचा "अगर वह मुझे पकड़ लेती है क्योंकि अब मैं उड़ तो सकता नहीं क्योंकि मेरे पंख नोच लिये गये हैं तो अब मुझे यहीं कुछ देर के लिये छिपे रहना पड़ेगा।

मुझे अब इसी खाने पर ज़िन्दा रहना होगा जो इस छेद में से हो कर जायेगा। इसके अलावा अगर इसमें ज़ोर से पानी फेंका गया तो मेरे बहने का भी डर है।

आखिर कुछ दिनों में उसके इतने पंख निकल आये कि वह उड़ सकता। सो वह जंगल में बने एक छोटे से मन्दिर की तरफ उड़ गया जहाँ जा कर वह मूर्ति के पीछे बैठ गया।

अब ऐसा हुआ कि चम्पा रानी इस मन्दिर में पूजा करने जाया करती थी। विक्रम महाराजा तोते को वहाँ पहुँचे अभी बहुत दिन नहीं हुए थे कि एक दिन चम्पा रानी वहाँ पूजा के लिये गयी। वह मूर्ति के सामने झुकी और प्रार्थना करने लगी कि भगवान उसको इस शरीर और आत्मा के साथ ही स्वर्ग दें क्योंकि वह मरने से बहुत डरती थी।

वह बोली — "हे भगवान बस आप मेरी इतनी सी बात सुन लें उसके लिये मैं आपको कुछ भी देने को तैयार हूँ। कुछ भी। कुछ भी।"

विक्रम महाराजा तोता जो उस मूर्ति के पीछे छिपे बैठे थे यह सुन कर बोले — "ओ चम्पा रानी नाचने वाली। तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी है।"

चम्पा बाई ने जब यह सुना तो उसे लगा कि मूर्ति खुद ही बोल रही थी सो वह उसको और ध्यान से सुनने लगी।

विक्रम महाराज तोता आगे बोले — “ अब तुम ध्यान से सुनो कि तुमको यह करना चाहिये कि तुमको अपनी सब चीज़ें जो भी तुम्हारे पास हैं सब बेच देनी चाहिये। उससे आये सारे पैसे तुम्हें गरीबों को दे देने चाहिये। तुम्हें अपने नौकरों को भी पैसे दे कर उन्हें निकाल देना चाहिये।

अपने घर को तुड़वा देना चाहिये ताकि तुम इस धरती से बिल्कुल अलग हो सको। तभी तुम शरीर के साथ स्वर्ग जाने के लायक हो सकोगी। जब तुम यह सब कर लो तब तुम फिर से मेरे पास आना तब तुम शरीर और आत्मा के साथ स्वर्ग जा सकोगी।”

चम्पा रानी ने जो सुन उस पर विश्वास किया और विक्रम महाराजा की धमकी को भूल कर वह यह सब करने के लिये घर चली गयी।

उसने अपनी सारी चीज़ें बेच दीं पैसा गरीबों को दे दिया घर को तोड़ कर मिट्टी में मिला दिया नौकरों को तनख्वाह दे कर उनकी छुट्टी कर दी।

जब यह सब काम पूरा हो गया तो नियत दिन वह मन्दिर में पहुँची और मन्दिर के बाहर कुँए की दीवार पर जा कर बैठ गयी।

वहाँ बैठ कर वह लोगों से कहने लगी कि किस तरह से मन्दिर की मूर्ति ने उससे खुद बात की और अब वे कुछ ही देर में शरीर और आत्मा सहित उसको स्वर्ग जाते देखेंगे। इस तरह उसका यहाँ से जाना जो उसने यहाँ अब तक काम किये हैं उनसे भी ज़्यादा रोमांचकारी होगा।

सभी लोगों ने उसे ध्यान से सुना क्योंकि उनको उस पर विश्वास था। और इस विश्वास की वजह से ही सारा शहर उसको स्वर्ग जाते देखने के लिये वहाँ आ गया था।

इस भीड़ में दूर के पास के बहुत सारे अजनबी भी थे यात्री भी थे राजकुमार भी थे व्यापारी और कुलीन लोग भी थे जो यह तमाशा देखने के लिये खड़े हुए थे।

जब ये सब वहाँ इन्तजार कर रहे थे तो पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनायी दी और एक तोता चम्पा रानी के सिर के ऊपर से उड़ा और बोला — "चम्पा रानी चम्पा रानी। यह तुमने क्या किया।"

चम्पा रानी ने विक्रम महाराजा तोते की आवाज पहचान ली। वह आगे बोला — "क्या तुम शरीर और आत्मा के साथ स्वर्ग जाना चाहती हो? क्या तुम तोते की बात भूल गयी हो?"

चम्पा रानी तुरन्त ही मन्दिर के अन्दर दौड़ी गयी और मूर्ति के सामने घुटने टेक कर बैठी और बोली — "हे भगवान। जैसा

आपने मुझसे करने के लिये कहा था मैंने वैसा ही किया अब आप अपनी कही बात को सच कीजिये। मुझे बचाइये। मुझे स्वर्ग ले चलिये।"

पर तोता उसके ऊपर से बोला — "बाई बाई चम्पा रानी बाई बाई। तुमने तो मुर्गे का सिर खाया था मेरा नहीं। अब तुम्हारा घर कहाँ है? तुम्हारी सारी चीज़ें तुम्हारे नौकर कहाँ हैं? अब तुम सोचो कि तुम्हारा कहना सच हुआ या मेरा कहना?"

चम्पा रानी ने देखा कि वह तो तोते से बेवकूफ बन गयी है। अपने गुस्से और निराशा में वह अपने आपको ही कोसने लगी। वह मन्दिर के फर्श पर गिर गयी और अपना सिर एक पत्थर से टकरा टकरा कर मर गयी।

X X X X X X X

अब तक विक्रम महाराजा को अपना राज्य छोड़े दो साल बीत चुके थे। इससे छह महीने पहले ही बत्ती ने उनके लौटने की आशा छोड़ दी थी सो वह उनकी खोज में बाहर निकल पड़ा था। वह अपने मालिक को ढूँढते हुए नीचे ऊपर बहुत सारे देशों में गया पर वह उसे कहीं नहीं मिले।

खुशकिस्मती से वह भी उन्हीं अजनबियों में खड़ा हुआ था जो चम्पा रानी के शरीर और आत्मा के साथ स्वर्ग जाने का दृश्य देखने के लिये आये हुए थे।

जैसे ही उसने उस तोते को देखा जो चम्पा रानी से बात कर रहा था उसने उसे पहचान लिया कि वही विक्रम महाराजा थे। राजा ने भी उसको देखा तो वह उसके कन्धों पर उड़ा तो बत्ती ने उसे पकड़ लिया। उसको पिंजरे में रखा और घर ले गया।

अब एक और परेशानी खड़ी हो गयी जिसको सुलझाना था। राजा की आत्मा तोते के शरीर में थी और बढ़ई की आत्मा राजा के शरीर में थी। तो बढ़ई की आत्मा को राजा के शरीर में से कैसे निकला जाये और फिर राजा की आत्मा को राजा के शरीर में कैसे डाला जाये।

बढ़ई की आत्मा को राजा के शरीर में से कैसे निकाल कर उसके अपने शरीर में भेजा जाये क्योंकि बढ़ई का शरीर तो बहुत पहले ही नष्ट हो चुका था। वह राजा के शरीर में से निकल कर कहाँ जायेगी।

वजीर की तो समझ में नहीं आ रहा था कि इस मामले को कैसे सुलझाया जाये। उसने तय किया कि वह इन्तजार करेगा जैसे भी घटनाऐं घटती जायें।

एक बार नकली राजा और बत्ती दोनों ने एक एक लड़ने वाला भैंसा लिया। एक दिन नकली राजा ने बत्ती से कहा — "चलो आज हम लोग अपने अपने भैंसे लड़ाते हैं। देखते हैं कि किसका भैंसा ज़्यादा ताकतवर है।"

वजीर बोला "ठीक है।" और उन्होंने अपने अपने भैंसे लड़ने के लिये छोड़ दिये। पर दोनों भैंसों में बहुत अन्तर था। वजीर का भैंसा पूरा भैंसा था जबकि बत्ती का भैंसा केवल एक बकरा जैसा था और उसके सींग अभी केवल बढ़ ही रहे थे।

बत्ती ने अपने भैंसे को एक नीबू के पेड़ से बाँध दिया था और उसके सींगों ने उस नर्म पेड़ के तने से रगड़ रगड़ कर उन पर अपने सींगों से निशान डाल दिये थे।

जबकि बढ़ई ने अपना भैंसा जब वह बकरे जैसा ही था तो उसको टीक[22] के पेड़ से बाँध कर रखा था जिसका तना बहुत मजबूत होता है। उस छोटे जानवर ने उस पेड़ के मजबूत तने से अपने सींग रगड़े भी मगर वह उस पर कोई निशान नहीं छोड़ सका बल्कि और उलटे उसने अपने सींग ही कमजोर कर लिये थे।

नकली राजा ने यह जल्दी ही देख लिया कि उसके भैंसे के सींग तो बहुत ही कमजोर हैं और वह अपने दुश्मन से हार रहा

[22] Teak tree whose wood is normally used to make furnitures.

है। वह कमजोर पड़ रहा है। वह थक रहा है। सो तुरन्त ही उसने अपना शरीर छोड़ा और अपने भैंसे के शरीर में घुस गया ताकि वह उसकी हिम्मत बढ़ा सके जीत सके।

जैसे ही उसने ऐसा किया विक्रम महाराज तोते ने जो वहीं एक पिंजरे में बन्द थे यह देखा कि क्या हुआ था उन्होंने अपने तोते का शरीर छोड़ा और नकली राजा के शरीर में यानी कि अपने शरीर में घुस गये।

बत्ती का भैंसा जीत गया। बत्ती तुरन्त ही जा कर एक तलवार उठा लाया और उससे नकली राजा के भैंसे को मार दिया। इस तरह से उसने भैंसे का भी खात्मा कर दिया और नकली राजा यानी बढ़ई को भी मार दिया।

यह सुन कर अनार रानी बहुत खुश हुई। उसने उनसे प्रार्थ ना की वह अब तोते का रूप रख कर न उड़ें। विक्रम महाराज ने उनसे वायदा किया कि वह अबसे ऐसा नहीं करेंगे।

X X X X X X X

पर विक्रम महाराज को अपना शरीर पाने के बाद घूमने की और आजादी की ज़िन्दगी बिताने की आदत छूटी नहीं। और इस सबमें भी उनको एक बात बहुत अच्छी लगती थी और वह

थी बिना किसी नौकर के साथ महल के पास जंगलों में अकेले घूमना।

एक बार एक बहुत ही भीगे भीगे दिन विक्रम महाराज ऐसे ही अकेले घूम रहे थे। वह अपने देश के एक चट्टानी हिस्से में थे। यह हिस्सा चौरस और बंजर था। उसमें सूरज की गर्मी से बचने के लिये एक भी पेड़ नहीं था।

विक्रम महाराजा चलते चलते थक गये थे सो सुस्ताने के लिये वे वहाँ पड़ी एक बहुत बड़ी चट्टान पर बैठ गये। जब वह वहाँ लेट कर आधी नींद में चुपचाप पड़े हुए थे एक छोटा सा साँप एक गड्ढे में से निकल आया और उनका मुँह खुला हुआ देख कर उसमें घुस गया और उनके गले में कुंडली मार कर बैठ गया।

विक्रम महाराज ने साँप को बाहर बुलाया कि मेरे गले में से बाहर निकलो। पर साँप बोला — "नहीं मैं नहीं निकलूँगा। मुझे अपने बिल से ज़्यादा यहाँ अच्छा लग रहा है।" और वह वहीं रहा।

विक्रम महाराजा की समझ में न आये कि वह क्या करें। वह वहीं उनके गले में रहा और किसी तरह भी बाहर नहीं निकाला जा सका। कभी कभी वह उनके मुँह में से बाहर झाँक

लेता पर जैसे ही महाराज उसे पकड़ने की कोशिश करते तो वह अन्दर चला जाता।

विक्रम महाराजा ने एक दिन बत्ती से कहा — "किसने सुना होगा कि कोई राजा ऐसी मुसीबत में पड़ा होगा कि कोई साँप मेरे गले में रहता है।"

बत्ती बोला — "आह मेरे दोस्त। तुम इस तरह अकेले अपने आप ही जंगल में क्यों घूमते रहते हो। तुम कब सुधरोगे।"

"अगर मैं उस साँप को पकड़ सकता तो फिर मैं अपने घूमने से सन्तुष्ट हो जाता। मैं फिर कभी इस तरह घूमने नहीं जाऊँगा क्योंकि मैंने देखा कि मेरे इस तरह घूमने से मुझे कोई खास फायदा नहीं हो रहा।"

पर साँप पकड़ना तो किसी आदमी के लिये कोई आसान काम नहीं था। एक दिन विक्रम इसी परेशानी में पागल से हो गये और जंगल भाग गये। तुरन्त ही इस बात की खबर बत्ती को दी गयी। वह यह सुन कर बहुत दुखी हुआ।

वह बोला — "आह। यह तो उसने एक मामूली अक्ल वाले आदमी की तरह से भी काम नहीं किया। कब उसका यह अपने आप माँगा हुआ बदकिस्मत वरदान उसको कोई अच्छा काम करने देगा जो कि वह इससे कर सकता था।

इसने उसको इधर उधर घूमने की इच्छा दे दी है जिससे वह दूसरों का तो ध्यान रखता है पर अपना नहीं। वह अपने राज्य और प्रजा दोनों ही की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा जिसका कि एक राजा को गर्व होना चाहिये। और अब तो वह जंगल में पड़ा है जैसे कोई चोर जेल से बच कर भाग गया हो।"

बत्ती ने विक्रम को ढूँढने के लिये पास और दूर अपने दूत भेजे पर वह उनको नहीं मिले तो अपने खोये हुए दोस्त को उसने खुद ही ढूँढने जाने का विचार किया। उसने अपनी गैरहाजिरी में राज्य की देखभाल का इन्तजाम किया और यात्रा के लिये चल पड़ा।

इस बीच विक्रम महाराजा घूमते रहे घूमते रहे कि वह एक राजा के महल आ पहुँचे। यह राजा उनके देश से बहुत दूर के राज्य का राजा था। यहाँ आ कर वह महल के दरवाजे के बाहर लगी भिखारियों की लाइन में बैठ गये।

अब जिस राजा के महल के दरवाजे पर विक्रम राजा बैठे थे उस राजा की एक बहुत सुन्दर बेटी थी जिसका नाम था बकुली।[23] बहुत सारे राजा और राजकुमार उससे शादी करना चाहते थे पर वह उनमें से किसी से भी शादी नहीं करना चाहती थी।

[23] Bakul is the name of a flower.

उसके माता पिता जब उससे पूछते — “तुम अपना पति क्यों नहीं चुनतीं। जिन राजाओं और राजकुमारों ने तुमसे शादी करने की इच्छा प्रगट की है उनमें से कई धनवान हैं सुन्दर हैं ताकतवर हैं।”

तो राजकुमारी जवाब देती — “इनमें से कोई राजा मेरी किस्मत में नहीं लिखा। अक्सर कर के मैं अपने सपनों में अपने होने वाले पति को देखती हूँ और मैं उसका इन्तजार करूँगी।”

वे पूछते — “उसका नाम क्या है।”

वह जवाब देती — “उसका नाम विक्रम है और वह बहुत दूर देश से आयेगा। वह अभी आया नहीं है।”

वे कहते — “इस नाम का कोई राजा पास या दूर नहीं है जिसे हम जानते हों। यह तुम अपने सपने की बातें छोड़ दो और किसी और से शादी कर लो।”

पर वह अपने इरादे पर अड़ी रही। उसने माता पिता की इस सलाह को मानने से हर बार मना कर दिया — “नहीं। मैं विक्रम का इन्तजार करूँगी।”

उसके माता पिता ने सोचा कि शायद वह ठीक ही कह रही हो। कौन जानता है कि शायद कि यह कोई बड़ा राजा उनसे भी बड़ा राजा हो जिनको हम जानते हैं इस देश में आ जाये और इस लड़की से शादी करना चाहे।

हम लोग उस दिन बहुत खुश होंगे जिस दिन ऐसा होगा कि इस लड़की की बात मान कर हमने अच्छा ही किया। हमने इसे किसी और राजा से शादी करने पर मजबूर नहीं किया।"

जैसे ही विक्रम महाराजा महल के सामने आये और महल के दरवाजे के सामने भिखारियों की लाइन में बैठे कि राजकुमारी बकुली ने अपने महल की खिड़की से बाहर झाँक कर देखा।

और जैसे ही उसकी नजर विक्रम महाराजा पर पड़ी वह चिल्ला पड़ी — "वह हैं मेरे पति विक्रम जिनको मैंने सपने में देखा था।"

माँ ने पूछा — "कहाँ मेरी बेटी कहाँ? यहाँ तो सारे भिखारी बैठे हैं इनमें राजा कहाँ हैं?"

पर राजकुमारी जिद करती रही कि उनमें से एक राजा विक्रम थे। बेटी की जिद देख कर रानी ने राजा विक्रम को बुलवा भेजा और उनसे पूछताछ की। राजा ने बताया कि उनका नाम राजा विक्रम है।

पर राजा और रानी को उनकी इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ। वे राजकुमारी से बहुत नाराज थे क्योंकि राजकुमारी अपनी इसी बात पर अड़ी रही कि वह इन्हीं से शादी करेगी किसी और से नहीं।

आखिर उनको उस पर इतना गुस्सा आया कि उन्होंने उससे कहा — "अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो अपने भिखारी पति से ही शादी कर लो। पर अगर तुमने इससे शादी की तो फिर तुम हमारे साथ इस महल में नहीं रह सकतीं। तुमको उसी की किस्मत के साथ रहना पड़ेगा। तुम्हें जल्दी ही पता चल जायेगा कि तुम अपनी जिद पर पछता रही हो।"

राजकुमारी बोली — "मैं उन्हीं से शादी करूँगी और उन्हीं की किस्मत से जियूँगी जहाँ भी वह मुझे ले जायेंगे।"

सो विक्रम महाराजा और राजकुमारी बकुली की शादी हो गयी। उसके माता पिता ने उसे घर से निकाल दिया। फिर भी उन्होंने उसको कुछ पैसे दिये क्योंकि उनका सोचना था कि "जल्दी ही वह एक राजकुमारी की और एक भिखारी की पत्नी की ज़िन्दगी में अन्तर जान जायेगी जब उसे भूखा रहना पड़ेगा।"

विक्रम महाराजा ने जंगल में एक छोटी सी झोंपड़ी बनायी और वहाँ उन्होंने रहना शुरू कर दिया।

पर राजकुमारी के लिये यह एक बहुत दुख का समय था क्योंकि न तो उसको खाना बनाना ही आता था और न सफाई रखना। ये मेहनत के काम उसको बहुत जल्दी थका देते थे।

उसका सबसे बड़ा दुख यह था कि विक्रम महाराजा के गले में एक साँप रहता था। वह अक्सर रातों को जाग कर उठ बैठती ताकि वह उसको पकड़ कर बाहर निकालने की कोई तरकीब सोच सके पर सब बेकार।

आखिर एक रात जब वह इसके बारे में सोच रही थी तो उसने देखा कि पास के एक बिल से दो साँप निकले और आपस में बातें करने लगे। वह उनकी बातें ध्यान से सुनने लगी।

एक साँप बोला — "ये लोग कौन हैं।"

दूसरा साँप बोला — "ये राजा विक्रम और उसकी पत्नी राजकुमारी बकुली हैं।"

पहले साँप ने पूछा — "पर ये यहाँ क्या कर रहे हैं। यह राजा अपने राज्य से इतनी दूर क्यों है।"

दूसरा साँप बोला — "क्योंकि यह बहुत परेशान था इसलिये वहाँ से भाग निकला। इसके गले में एक साँप रहता है।"

पहले साँप ने पूछा — "क्या इसे अब तक कोई निकाल नहीं सका?"

"नहीं क्योंकि किसी को इसका राज़ नहीं पता।"

पहले साँप ने फिर पूछा — "कैसा राज़।"

दूसरा साँप बोला — "क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अगर इसकी पत्नी कुछ निशान लगाने वाले बीज यानी भल्लातक बीज ले कर उन्हें अच्छी तरह से कूट ले। उनमें थोड़ा सा गोले का तेल मिला ले और उन सबको आग में जलाये।

राजा को इस आग के ऊपर किसी पेड़ से पैरों से लटका दे तो इससे जो धुआँ उठेगा उससे वह साँप तुरन्त ही मर जायेगा और उसके मुँह से बाहर निकल पड़ेगा।"

पहला साँप बोला — "मैंने तो ऐसा पहले कभी नहीं सुना।"

दूसरा साँप बोला — "अरे क्या सचमुच तुमने नहीं सुना। अगर यही काम वे तुम्हारे बिल के पास करें तो वे तुम्हें तुरन्त ही मार देंगे और फिर वह सारा खजाना निकाल लेंगे जो तुम्हारे पास है।"

पहला साँप बोला — "ऐसा मजाक नहीं करो। यह मुझे अच्छा नहीं लगता।" और वह गुस्सा हो कर वहाँ से चला गया। दूसरा साँप भी उसके पीछे पीछे चला गया।

जैसे ही राजकुमारी ने यह सुना तो उसने सोचा कि इसको कर के देखने में क्या हर्ज है। सो अगली सुबह उसने पास के गाँव वालों को बुलाया। वे गाँव वाले उसको अच्छी तरह जानते

थे और उसका कहा मानने के लिये हमेशा तैयार रहते थे क्योंकि वह तो उनकी राजकुमारी थी।

उसने उनसे कहा कि वे एक बड़ा सा बर्तन भर कर गोले का तेल ले कर आयें और उसमें बहुत सारे निशान वाले बीज डाल कर उसे उसके पास लायें। वे ले आये तो उसने उन सबको आग में डाल दिया।

विक्रम को उस आग के ऊपर एक पेड़ से पैरों से लटका दिया गया। जैसे ही आग का धुऑ विक्रम महाराज के गले में रह रहे सॉप तक पहुँचा सॉप का दम घुटने लगा और वह मर कर उनके गले से नीचे गिर पड़ा।

विक्रम महाराजा ने अपनी पत्नी से कहा — "ओ योग्य बकुली। तुम कितनी कुलीन स्त्री हो। तुमने मुझे इस कष्ट से छुट्टी दिलवा दी जिसे मेरे राज्य के आधे अक्लमन्द लोग भी नहीं कर सके।

बकुली ने फिर तेल का वह बर्तन पहले सॉप के बिल के पास रखवा दिया जिसको उसने पहली रात बोलते सुना था। उसके धुँए से वह सॉप भी मर गया। तब उसने उसके बिल को खोदने के लिये कहा जहॉ उसको बहुत बड़ा खजाना मिला – बहुत सारा सोना चॉदी जवाहरात आदि।

तब बकुली ने अपने और अपने पति दोनों के लिये शाही कपड़े मँगवाये। पति की हजामत बनवायी और बाल कटवाये। यह सब कर के और बचा हुआ खजाना ले कर बकुली अपने माता पिता के पास गयी।

उसके माता पिता ने भी अपने किये पर बहुत पछतावा किया और उनका खुशी खुशी स्वागत किया। वे भी उसके पास इतना सारा खजाना और इतना सुन्दर पति देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गये।

एक दिन विक्रम को बताया गया कि कोई अजनबी वजीर राजा के दरबार में आया है। और यह वजीर **12** साल से अपने मालिक की खोज में इधर उधर मारा मारा फिर रहा है। पर उनके न मिलने के बाद निराश हो कर वह अपने देश वापस लौट रहा था।

विक्रम ने सोचा "क्या यह बत्ती तो नहीं।" यह दिमाग में आते ही वह उससे मिलने के लिये दौड़ पड़ा।

उसको देखते ही वह बोला "अरे यह तो बत्ती ही है।"

बत्ती भी उसे देखते ही चिल्लाया — "विक्रम विक्रम। क्या तुम्हें पता है कि तुम **12** साल से राज्य से बाहर हो।"

तब विक्रम महाराजा ने उसको बताया कि किस तरह राजकुमारी बकुली ने उससे शादी की और फिर सॉप को मारने में सफल हो गयी। और अब वह अपने देश लौटने ही वाला था।

दोनों साथ साथ ही घर लौटने लगे। बकुली के पिता ने जाते समय उसको बहुत सारा सामान दिया। आखिर एक लम्बी थका देने वाली यात्रा के बाद वे सब अपने घर पहुँचे। अनार रानी उन सबको देख कर बहुत खुश हुई क्योंकि उसको तो लग रहा था कि उसका पति मर गया है।

जब बकुली को अनार रानी के बारे में बताया गया और उसको अनार रानी से मिलवाने के लिये ले जाया गया तो वह बहुत डरी हुई थी क्योंकि उसको लग रहा था कि शायद वह उससे जलेगी और नफरत करेगी।

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। अनार रानी चेहरे पर एक मुस्कान लिये हुए उससे मिलने आयी। वह बोली — "बहिन। मैंने सुना है कि तुमने मेरे राजा की जान बचायी है। वह तुम ही हो जिसने सॉप को मारा। मैं तुम्हारे इस कर्ज को कभी ठीक से नहीं चुका सकती और न ज़िन्दगी भर तुम्हें इतना प्यार कर पाऊँगी जितना मुझे करना चाहिये।"

उस दिन के बाद से विक्रम महाराजा अपने ही देश में रहे और बहुत अच्छे तरीके से राज किया। वह और बत्ती बहुत

दिनों तक जिये। उनका प्रेम भी उनकी ज़िन्दगियों के अन्तिम दिनों तक बना रहा।

इससे देश में यह एक कहावत बन गयी कि बजाय यह कहने के कि "फलॉ फलॉ आपस में भाइयों की तरह प्रेम करते है।" लोग यह कहा करते थे कि "फलॉ फलॉ आपस में राजा और वजीर की तरह प्रेम करते हैं।"

8 आदमी के सोचने से कम असमानता[24]

एक नौजवान राजा ने अपने वजीर से कहा — "यह क्या बात है कि मैं अक्सर ही बीमार रहता हूँ। मैं अपनी कितनी तो देखभाल करता हूँ। सारी सावधानियाँ बर्तने के बाद भी जैसे मैं बारिश में कभी बाहर नहीं जाता। मैं ठीक से गर्म कपड़े पहनता हूँ। मैं अच्छा खाना खाता हूँ फिर भी मुझे अक्सर जुकाम हो जाता है बुखार आ जाता है।"

वजीर बोला — "ज़्यादा सावधानी बर्तना कोई भी सावधानी न बर्तने से ज़्यादा खराब है। यह मैं आपको जल्दी ही साबित कर दूँगा।"

सो एक दिन वजीर ने राजा को खेतों में घूमने के लिये बुलाया। इससे पहले कि वे बहुत दूर जाते रास्ते में उन्हें एक गरीब गड़रिया मिल गया। अब गड़रिया तो बाहर घूमने का आदी था। उसके शरीर पर बस एक मोटे कपड़े की चादर पड़ी थी जो उसको बारिश से रात की ओस की ठंड से और सूरज की धूप से मुश्किल से ही बचा सकती थी।

उसका खाना भुना चना और पीने का पानी था। वह शहर से दूर एक मैदान में ताड़ के पत्तों की बनी एक झोंपड़ी में रहता

[24] Less Equality Than Men Deem. (Tale No 8)

था। वजीर ने राजा से कहा — "यह तो आप अच्छी तरह से जानते हैं कि ये गड़रिये लोग कितनी मुश्किल ज़िन्दगी जीते हैं। आप इसे ही देख लें और इससे पूछें कि इसे कभी कोई बीमारी हुई या नहीं जो कि इन हालात में रहते हुए इसे होनी चाहिये थी।

राजा ने वैसा ही किया जैसा उसके वजीर ने उससे करने के लिये कहा था। उसने उससे पूछा कि क्या उसको गठिया का रोग था क्या उसको कभी ठंड लगी या कभी उसे बुखार आया।

गड़रिये ने कहा — "नहीं जनाब। मुझे इनमें से किसी रोग ने कभी नहीं सताया। मैं तो बचपन से ही इस तरह की ज़िन्दगी का आदी हूॅ – तेज़ गर्मी कड़ी ठंड। शायद इसी लिये मुझे ये कभी असर नहीं करते।"

यह सुन कर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने वजीर से कहा — "मुझे यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। मुझे लगता है कि यह गड़रिया तो बहुत ही मजबूत आदमी है जिसे कोई चीज़ असर ही नहीं करती।"

वजीर बोला — "अभी हम और भी देखेंगे।"

वजीर ने गड़रिये को महल में रहने के लिये बुलाया। काफी समय तक वह महल में बहुत अच्छी देखभाल में रहा। उसको

कभी महल से बाहर धूप बारिश और ठंड में नहीं जाने दिया जाता था।

उसको हमेशा अच्छा खाना मिलता था अच्छे कपड़े पहनने को दिये जाते थे। कभी उसको गीले में नहीं बैठने दिया जाता था ताकि उसके पैर गीले न हों।

कुछ महीनों बाद उसको संगमरमर के फर्श पर भेजा गया जिस पर पानी पड़ा था। इतने समय से गड़रिये को इस तरह की किसी भी चीज़ का अनुभव नहीं था सो गीले फर्श पर चलने से उसको जुकाम हो गया। महल में रहने के बाद वहाँ उसको ठंड लग गयी।

जल्दी ही उसकी हालत और खराब हो गयी। और डाक्टरों की अच्छी देखभाल के बावजूद वह मर गया।

कुछ दिन बाद राजा ने पूछा — "हमारा गड़रिया कहाँ है। केवल संगमरमर के फर्श पर चलने से ही तो उसको ठंड नहीं लग गयी होगी जिस पर तुमने पानी छिड़कवा कर गीला करवा दिया था।"

वजीर बोला — "मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि इसका परिणाम तो उससे भी ज़्यादा भयानक निकला जितना कि मैंने सोचा था। बेचारे गड़रिये को ठंड लग गयी और वह मर गया।

क्योंकि अभी हाल ही में उसकी इतनी ज़्यादा परवाह की गयी कि वह उसका आदी हो गया और अचानक इस बदलाव का सामना न कर सका और मर गया।

अब आपको पता चला कि किस तरह से सारी मुश्किलों का सामना करने पर भी ये गरीब बीमार नहीं पड़ते। इस तरह प्रकृति सबको एक समान कर देती है। धन दौलत अक्सर तन्दुरुस्ती को नष्ट कर देती है और उम्र को कम कर देती है जबकि तन्दुरुस्ती हो तो वे बहुत आनन्द देती हैं।”

List of Tales of Old Deccan Days

Part 1

1. Punchkin
2. A Funny Story
3. Brave Seventee Bai
4. Truth's Triumph
5. Rama and Laxman or The Learned Owl
6. Little Surya Bai
7. Wanderings of Vicram Maharajah
8. Less Equality Than Men Deem

Part 2

9. Panchphul
10. When the Sun the Moon and the Wind Went Out to Dinner
11. Singh Raja and Cunning Little Jackals
12. Jackal, Barber and a Brahman Who Had Seven Daughters
13. Tit For Tat
14. The Brahman, the Tiger and Six Judges
15. The Selfish Sparrow and the Houseless Crows
16. The Valiant Chattee-maker
17. Rakshas' Palace
18. The Blind Man, the Deaf Man and the Donkey
19. Muchie-Lal
20. Chundun Raja
21. Sodeva Bai
22. Chandra's Venegeance
23. How the Three Clever Men Outwitted the Demons
24. The Alligator and the Jackal

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen	**Shuk Saptati.**
No 29	By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot". शुक सप्तति — ।
c1323	**Tales of Four Darvesh**
No 24	By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes. किस्सये चहार दरवेश
1868	**Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23	By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889). पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ
1872	**Indian Antiquary 1872**
No 34	A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.
1880	**Indian Fairy Tales**
No 30	By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales. हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ
1884	**Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
	By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.
1887	**Folk-tales of Kashmir.**
No 11	By James Hinton Knowles. 64 Tales. काश्मीर की लोक कथाऐं
1889	**Folktales of Bengal.**
No 4	By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales. बंगाल की लोक कथाऐं
1890	**Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18	By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. 26 Tales सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं
1892	**Indian Nights' Entertainment**
No 32	By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales. भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – “Romantic Tales of the Panjab” and “Indian Nights' Entertainment” given above – No 31 and 32. **1903**.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस करके एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स करके **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना पारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022